

زاد المعاد

في هدي خير العباد

ابن القيم



زاد المعاد في هدي

خير العباد

طبقا لقوانين الملكية الفكرية

جميع حقوق النشر و التوزيع الالكتروني
لهذا المصنف محفوظة لكتب عربية. يحظر
نقل أو إعادة نسخ أو إعادة بيع أى جزء من
هذا المصنف و بثه الكترونيا (عبر الانترنت أو
للمكتبات الالكترونية أو الأقراص المدمجة أو أى
وسيلة أخرى) دون الحصول على إذن كتابي من
كتب عربية. حقوق الطبع الورقى محفوظة
للمؤلف أو ناشره طبقا للتعاقدات السارية.



"

"

.

.

()

" "

()

" "

_____ : ()

(/) (/)
 (/) (/) (/)
 () (/) ()
 () (/)
 :

()

()

.()

:(/)

" "

" " " " " "

.

" "

" " " " " " " " " "

.

()

()

:

.

:

.

:

.

:

.

:

.

:

:

:

.

.

.

:

:

()

:-

-

()

:(-) # \$

:(/) # \$

:(/)

:

:

ترجمة المؤلف

.

:

.

:

...

...

.

:

.

-

:

-

.

.

.

:

.

-

.

-

"

"

.

-

:

.

-

.() :

: -

:

.() ... -
()

.

:

.

: -

.

()

:

:

()

\$ # \$ ()

ترجمة المؤلف

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ
مَقَدِّمَةُ الْمَوْلَفِ

()

. [:]

:

()

∴
()
()

()

()
) :

() (

∴
∴ [:]
∴ [:]
∴ [:]

[:]

∴
∴ ()

(/)
(/)

(/) ()
() ()

() :

() () :
: () ()
:

: () :

()

() ()

:
.[:]

:

: .[:]

:

:

!

. [:]

. [:]

:

: :

: . [:]

:

* : [- :]
 . : . [:]
 !

()
 :] : ()
 . [

() (/) (/) ()
 () (/)
 :() ()

[:]

:

-

-

:

:

:

:

:

:

()

: ()

()

()

:

()

:

:

:

:
 [:] :
 . () :
 : :
 . :
 * :
 :] [-
 :
 [:] :
 : :
 : [:]
 : :

) : ()

. (

) :

. () (

: .

:

:

.

() ()
() ()

:

: [:]

: [:]

.

: (/) ()

() ()

. () (/) ()

()

) ()
: () ()

) ()

() :
) ()

) :

() ()
_____ ()

: () (/) ()

: () (/) ()

: (/) () ()

() (/)

() (

: ()):

: () (

()

() (: ()) : ()):

:(/) _____ ()

(/) (/) ()

: (/) : (/) () ()

$$): () (\quad) \cdot () ($$

$$: [:]$$

$$[:]$$

$$\cdot ()) : ()$$

$$() ($$

$$()$$

$$()$$

$$: ()) : ()$$

$$\cdot ()$$

$$(/)$$

$$: () ()$$

$$()$$

$$:$$

$$: () \cdot () () : (/) ()$$

$$\cdot () : (/) ()$$

$$= : () (/) ()$$

.
 .
 :
 .
 : () : : () : ()
 : () : () : () :
 :

.
 .
 () ()

.() : : : ()
 : : (/) ()
 . ()
 : () () ()
 (/) () (/)
 .()

=

)

(

:

[:]

()

:

:

:

-

-

[:] :

:

: [:]

:

: [:]

()

[:]

) :

(())
() ()

:
(())
()

)

) :

: (

:

(

*

:

) :
() (

:

()

:

()

:

(/)

()

:

:

(/)

()

:

()

:

()

()

(/)

:

(/)

()

:

()

:

()

:

()

=

() ([- :]) :

.

.

:

:

:

:

:

) : ()

_____ =

(/ /) ()
:(/) (/)

) : () () ()
() ()

:

:

:

:

(/)

()

()

:

(/)

()

()

!
 ()
 :
 :
 :
 ()
))
 () ()
 () ()
 :
 :
 :
 ()
 :
 :
 (/ /) ()
 () ()
 /) () : () ()
 (/) : () ()
 : (/) (/)

.
):
 ()(
)
 : ()(
 :
 -
 :
):
 ()
 ()(
 :
 .
 : ()
 :
 [:]
 : ()
 (/)
 : (/)
 : ()
 : () (/) ()
 (/) (/) ()
 : () (/) ()

()

:

):

() (

() () ()

-

-

:

: (/) ()

(/) ()

(/)

: (/) ()

: ()

: ()

: ()

: (/) ()

: ()

(/) (/) ()

() ()

(/)

:

()

:

() (

) :

:

:

فصل

(/) ()
: () ()

[:]
[:]
[:]

:

:

:

.

*

. [- :]

-

-

.

فصل

()

=

:

()

فصل

()

()

فصل

في نسبه

()

=

(/)

:

:

: ()

:

: ()

:

:(/)

()

:

()

()

:

:

:

:

:

:

:

:

.

*

:

:

- :]

[

()

:

:

:

:

.

:

:

:

() ()

()

()

[:]

()

[:]

()

() (

()

(/)

()

(/)

(/)

()

(/)

()

:

:

()

:

:

:

:

:

:

:

!

:

:

:

:

:

فصل

في أمهاته اللاتي أرضعنه

فصل
في حواضنه

:

()

فصل

في مبعثه وأول ما نزل عليه

:

() ()

.
 : ()
 .
 () [:]
 . () [:] : :
 :
 () :
 :
 :] : : [:]
 : : :
) : [:]
 : :
 ([:]
 :
 (/) ()
 : (/) ()
 : ()
 : (/) ()
 /) : ()
 : (

[:]

[:]

فصل

في ترتيب الدعوة ولها مراتب

: . : . : . : .

فصل

[:]

فصل

في أسمائه

()

) :

() (

فصل

في شرح معاني أسمائه

() : (/) ()
() (/) : ()
(/)

()

-

-

:

:

:

:

:

:

:

:

() ()

:

()

:

:

:

:

()

()

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:()

()

()

) :

()

:

() (

:

:

:

:

:

:

) :

(/)

(/)

()



() ()
): () ()

: () () () ()
() (/)
() () ()

$() \quad) : \quad () ($
 $(\dots \quad) :$

$:\quad :\quad :\quad .$
 $:\quad .$
 $:\quad .$
 $:\quad .$
 $:\quad .$
 $:\quad .$

$() \quad (\quad /) \quad ()$
 $(/) \quad ()$

:

.

:

:

:

: .

: .

() () :

()

فصل

في أولاده

:

:

:

.

:

()

:

:

:

:

فصل

في أعمامه وعمّاته

:

:

·
:
·
:
·

[]

فصل
في أزواجه

() () :

·
:

() (/) ()

()

:()

():

:

:()

:

:

:

...

()

!

:

:

:

:

(

)

.(/)

(/)
(/)

()
()

()
(/)

()
()
(/)

)
:
:
(

:
.
.
[:] :
.()

.()

 (/) ()

.

:

) :
() (

:
:

.

:

.

. :

:

:

.

:

.

:

:

. () ()

: :

:

:

:
) : . : () :
) :

: () (

: . :
:

:
:

:

:

.() () () (/) ()

فصل

في سراريه

: :

فصل

في مواليه

))

()

()

() ()

() () :

() :

()	(/)	()
()	(/)	()
()	(/)	()

()

:

:

:

فصل
في خُدَّامه

فصل
في كُتَّابه

فصل

في كتبه التي كتبها إلى أهل الإسلام في الشرائع

()

()

()

() ()

:

()

فصل

في كتبه ورسله إلى الملوك

:

()

:

: ()

(/)	(/)	(/)	()
(/)	(/)	(/)	()
(/)	(/)	()	()
()	()	()	()
()	()	(/)	()

()

()

:

:

()

.

:

:

()

:

(

):

() :

.

:

:

:

:

:

:

:

(

):

()

() :

(/)

()

()

()

()

()

()

()

: . :
) :

() (

. : . : . :
: .

. :

: ()

. :

:

.

(/) ()
(/) ()

فصل

في مؤذنيه

:

()

:

فصل

() () ()

() : [:]

فصل

فيمن كان يضرب الأعناق بين يديه

()

فصل

فيمن كان على نفقاته وخاتمه ونعله وسواكه ومن كان يأذن عليه

فصل

في شعرائه وخطبائه

:

فصل

في حُداته الذين كانوا يحدون بين يديه في السفر

(/)

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

()
:()

()

فصل

في غزواته وبعوثه وسراياه

:

:

:

:

() ()

[:]

() ()

()

.()

:

فصل

في ذكر سلاحه وأثائه

:

() () (/) ()
.(/) (/)

()

فصل

في دوابه

: . :
: :

.
:
.

. :
.() :
:

. :
:

):
() ()

(/) () (/) ()
.(/)
() () (/) ()
()

فصل
في ملابسه

:

()

) :
() (

)

:

() (

:

.

: () :

: .

=

(/) () () ()
() () (/) ()
() () () ()
(/) () (/ /)

.
 :
 .
 :
 :
 () () ()
) :
) : () :
 () () () ()
) : () () :
 () () () () :
 : () () () () :
)

(/) () () (/) ()
 (/) () (/) ()
 /) (/) () ()
 () () (/) ()
 (/)

() ()

() ()

فصل

()

()

	<hr/>		
/)	()	()	()
()	(/)	()	()
()		()	()

) : () () ()
 () :
 :
 ()

()
 : () ()
 () :
 ()

() () () ()
 : (/)
 () () (/) ()
 (/) () ()
 (/) () ()
 () (/) () () ()
 () () () ()
 () () ()

) : () () :

فصل

) :

() ()
() ()

() (

: ())
()

: ())
: () () :

() .

: ()) ()) .
()) ())

:
:

:

:

(/)	()	<hr/>	()	()
			()	
()	()	()	()	()
(/)	(/)	(/)	()	()
(/)	()	()	()	()
()	()	(/)	()	()
		(/	/)	

) :

: () (

()

:

-

-

() (

):

(/)

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(-)

(/)

()

()

()

: .

()

()

- - .

:

:

:

()

()

.

.

()

()

			<u>()</u>	()
.()	(/)	()	()	()
		.()	()	()
.()	()	()	()	()

()

فصل

في هديه وسيرته في نومه وانتباهه

()

:

) :

) :

() (

() (

() (

) :

:

()

) :

() (/) (/) ()

() (/ /) ()

() () ()

(/) () (/) ()

() () (/) ()

()

() () (/) ()

() (

()

:())

فصل

في هديه في الركوب

) :

:

() (

فصل

() (/) ()

() ()

/) (/) () ()

() (

()

.)
):

.) ()

(

:

:

.

:

:

.

فصل

()

.

:

()

:

:()

()

(/)

()

()

.()

.(/)

()

[:]

: !

:

:

.

.

.

.

()

فصل

()

:

()

()

()

()

.()

.()

()

()

:

[:] [:]

:

[:]

:

[:]

فصل

في هديه في معاملته

()

) :

() (

) :

) :

(

(

()

(/) (/) ()

(/) (/) ()

(/) :

()

() () :

() () :

() () :

()

فصل

في هديه في مشيه وحده ومع أصحابه

:

:

:

:

:

() () (/) ()

() ()

(/) ()

() ()

() :
:
()

فصل

في هديه في جلوسه واتكائه

:
:
:
:

فصل

في هديه عند قضاء الحاجة

() () :
() () :
() () :

() (/) ()
() () () (/) ()
() (/) (/) (/)
(/) () () () ()

- -
 - -
) :
 () ()
 : : :
 : : :

: :
 () :
 () :
 () :
 : :
 () ()
 : :

:
 () (/) () ()
 () () (/) ()
 () (/) () (/)
 () () () ()
 (/) () () ()
 (/)

()

()

:

:

:

() :
:

(

) :
:

() :
:

:

:

()

()

() ()

(/)

()

()

()

(/)

(/)

()

()

()

()

()

()

()

()

()

()

=

:
:
: ()
()
() () :

()
(:)
()
) :
() :

فصل

في هديه في قص الشارب

:

() () (/) ()
(/) () (/) ()
(/) () (/) ()
(/) () (/) ()
(/) () (/) ()

: () : :
 : :
 : () : ()
) : ()
 : () ()
 : () ()
 : ()
) () ()
 : :
 : :
 ()

(/) (/) ()
 /) () () () ()
 () () (/) ()
 .() (/) ()
 .() (/) ()
 .() (/) ()
 .() (/) ()

فصل

في هديه في كلامه وسكوته وضحكه وبكائه

:

()

:

:

:

(/)

()

()

()

.()

()

()

فصل

في هديه في خطبته

() : ()
) :

() (

()

() (/) ()
() (/) ()
() (/) ()

. () (

. () (

) :

: .

:

) :

[:]
. () (

.(/)	.(/)	()	()
(/)	()	()	()
(/)	()	()	()
			.()

) : (())
() ()

() :

:

) : :

: () () : ()
: () ()

()

):

() (/) ()
() ()
(/) ()
() ()
() ()
() ()

()

.

:

()

:

.

()

()

()

:

()
()

:

.

)

() ()

() ()

(/) ()

() () () ()

() () (/) ()

() (

فصل

في هديه في المسح على الخفين

()

فصل

في هديه في التيمم

()

:

()

) :

() (

	.()	()
	.(/)	()
.() ()	(/)	()
.(/)	(/)	()
	.(/)	()

()

فصل

في هديه في الصلاة

() :

:

:

:

:

(/)

()

()

.(

()

/)

. () :
 : . : . : .
 : . : . : .
 .)

. () () :

() () :

() () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()

) : () (...

) :

() (

) :

() (

) :

) : (

)

(

()

: ()

			()	(/)	()
	(/)	()	()	(/)	()
		(/)	()	(/)	()
(/)	()	()	(/)	()	()
			() ()	()	()

()

()

()
()

()
() :

()

() :

() () (/) (/) ()
() () (/) (/) ()

()

: .

: .

:

:

()

:

:

:

() [:]

:

:

:

[:]

:

:

:

:

:

:

()

:

.

()

()

()
()

()
()

()
()

()

()

()

() () () ()
 () () () ()
) () () ()
 () () () ()

() () () ()

فصل

):

) () () () ()
 () () () ()
 () () () ()

(/) (/) ()
 : () ()
 () () ()

$()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$

$()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$

$()$ $()$

$()$ $()$ $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$ $()$ $()$

$()$ $()$ $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$ $()$ $()$
 $()$ $()$ $()$ $()$ $()$

()

() ()

:
()

فصل

:
()

() () () ()
() () () ()

_____ =

(/) () (/) ()
(/) () (/) (/) () ()
(/) (/) (/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/) (/) (/)

: ()
()

فصل

:

فصل

: () () : () () ()
(/) () () () ()
() () () ()

() :

)
(
() ()
() : () :
() () :
()
) :

() ()
) :

(/) () () ()
() (/)
() (/) () (/) ()
() (/) (/) () ()

() () () :

:

:

:

() :

:

:

()

:

				<u>()</u>	()
	(/)	(/)	(/)	()	()
	(/)	()	()	()	()
()	()	()	(/)	(/)	()
			(/)		

فصل

()

()

:

:

:

()

- -) : () (

:

:

			(/)	()
()	(/)	(/)	()	()
	(/)	(/)	()	()
			()	()

.

()

()

: :

:

:

.

) : .(() :)
 : ...) : ()
 : ()
 () :
 : ()

(/)	()	()	()
	.(/)	(/)	()
.() ()	(/ /)	()	()

:

()
()

:

()
() () :

)
() () : ()

() ()

_____ () ()

() (/) () () ()

() () (/) ()

= (/) () () () (/) ()

:

:

:

[:]

فصل

: : . [:]

. () ()

) :

() (

() :

) :

: (

()

. () ()

_____ =

/)

()

()

()

. (/)

()

. (/)

(

. (/)

()

()

()

. ()

(/)

()

()

()

. (/)

()

()

()

()

()

()

:

()

()

() ()

) : [] :

()

(

() () :

:

()

()

:

(/)

(/)

(/)

(/)

()

()

()

()

()

()

()

(-) ()

(/)

()

()

()

()

(/)

(/)

()

()

()

()

()

() :

فصل

()

:

:

(/)	()	()	(/)	()
(/)	()	()	(/)	()

() ()

·
:

()

):

()

()

() (

·
:

:

·()	()
·()	()
·(/)	()

:

.

- -

:

:

):

.() (

:

):

. (

. ()

-

()

()

(/)

()

. ()

. ()

(/)

()

-

.

() ()

:

:

.

() () ()

.

()	.(/)	() ()	<hr/>	(/) ()
	(/)		()	()
			.(/)	

:()
()

()

:

()

:

:

:

()

()	()	(/)	()
(/)	()	()	(/)
(/)	()	()	()

(/)	()	()	()
-------	-----	-----	-----

()

()

()

() (

):

:

):

:

() (

:

:

):

):

() (

:

(

()

:

:

:

:

!

(/)	(/)	()	()	()
(/)	(/)	()	()	()

(/)	()	()	(/)	()
-------	-----	-----	-------	-----

(/)

() ()

(/) ()

(/) (/) () ()

()

: () () :

()

:

): () :

):

(

(/) () (/) ()

(/) () (/) ()

() : ()

فصل

. :
:

()
:
() :

. (/) () () () () ()
.() () () (/) ()
_____ ()
()
()

فصل

) :

.() (

) :

.() (

) :

.(

)

.() (

فصل

) :

:

.() (

)

.()

(

) :

()

() (

... (.

)

:()

/)

()

()

(/)

()

.(

.()

()

()

.(/)

()

()

.(/)

()

(/)

()

.()

(/)

()

.()

()

(/)

()

() ()

()

() () ()

() ()

() ()

() ()

() ()

()

.()	(/)	()	()	()
			.(/)	()
.(/)	(/)	()	()	()
		.()	()	()
			.(/)	()
.(/)		()	()	()
.()	(/)	()	(/)	()

()

()

.

:

:

()

()

() () :

()

() ()

() :

()

:

:

.

()

.

.

()

(/)

()

()

()

(/)

()

()

(

/)

()

(/)

()

()

(/)

(/)

()

()

(/)

()

()

:()

()

(...):

:

: :

()

: .

:

()

.

:

:

:

()

:

	/)	()	<hr/>	()	()
		()	.(/)	(
(/ /)		()	.(/)	()	()
		()		()	()
				.(/)	
			.(/)		()
			.(/)		()

()
:

()

()

:

[:]

:

:

):

(

:

(/) () (/) ()
(/) (/) () ()

:
()

:

.

:

:

:

.

. ()

! ... :

! :

! :

! :

! () :

:

:

:

:

()

:

:

:

:

()

:

:

()

):

.(

:

:

()

.

()

.()
(/)

()
()

/ /) ()
(/) ()
.()

: :

()

: ()

.

:

.

:

()

.

:

:

:

:

:

:

.

:

:

()

:

.

:-

-

:

:

:

:

.

:

.(/)

()

()

.

.

()

:

:

:

:

:

:

فصل

في هديه في سجود السهو

) :

() (

) : ()

() (

:

:

:

.()

()

()

(/)

()

.(/)

()

()

()

∴

()

∴

∴

()

∴

∴

∴

∴

∴

()

∴

∴

فصل

()	()	()	(/)	()
()	()	()	(/)	()
		(/)		()

()

()

()

()

()

:

:

:

:

:

:

	()	(/)	()
(/)	()	()	()
	()	(/)	()
	()()	(/)	()
		()	()

:

:

()

.

() ()

:

:

:

:

.

:

.

.

:

:

.

.

)

(

(/) (/) () () ()

(/) () () () ()

(/) () () (/) ()

(/) (/)

) : ()) ((

: : . : .
:

:

فصل

()

: ()

): () (

:

):

() (/) (/) ()
(/) (/) ()

() ()

()

:

:

:

فصل

فيما كان رسولُ الله يقولُه بعد انصرافه من الصلاة، وجلوسه بعدها،

وسرعة الانتقال منها، وما شرعه لأُمَّته من الأذكار والقراءة بعدها

):

() ()

()	()	(/)	()
(/)	()	(/)	()
()	()	()	()

:

.() ()

:

.() ()

.()

.()

):

.() (

):

.() (

):

.() (

.(/)

()

()

(/)

()

.(/)

()

()

.(/)

(/)

()

()

.(/)

()

()

.()

(/)

()

.(/)

()

()

()

.()

()

()

()

.

:
:

:

:

)

() (

:

:
()

()

):

() (

() (

):

()

()

() ()

(/) () ()

() ()

() (/) () ()

(/) () ()

(/) ()

() ()

()

() :)
) : :
. (

):

. () : ()
:
) :

:) : () ()

. (/)

. () ()
() ()
. (/) ()

() (

)

:

(

()

):

() (

:

()

):

() (

:

()

:

):

:

() (

:

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

()

()

()

() () : : () :
() :
() ()

فصل

()
()
:
() () () :
() () () ()
:
.

(/) ()
(/) () ()
(/) ()
() () ()
() () ()
() () ()
() () ()
() () ()
() () ()

()

فصل

في هديه في السنن الرواتب

:

() (

:

)

):

() (

())

:

:

):

() (

):

())

(/)

()

()

(/)

(/)

(/)

()

()

()

()

. () (

) :

:

() (

:

) :

: (

. () (

. :

. () :

:

:

. : . () () :

) : : :

: : (

. (/) () () ()

. (/) () ()

() (/) ()

. () () (/) . () ()

.()

()

() :

() () :

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

.() () :

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

.(/)

()

(/)

()

.(/)

()

:
 :
) : () (:
 :
 . () () :
 . () () :
 : :
 : ()
 : ()
 () () ()
 () () ()
) :

()	. () (/)	. (/) ()	(/) (/)	() () ()
		. () (/)	(/) (/)	() () ()
		. () (/)	(/) (/)	() () ()

:

: .

.

.

.

):

()

. () (

. : :

:

.

- -

.

. (/)

()

()

فصل

()

()

) :

() (

:

()

:

:

.(

) :

:

:

:

:

:

:

()

()

(/)

()

()

(/)

()

()

.()

:

فصل

في هديه في قيام الليل

:

: [:]

:

:

:

[:]

:

[:]

:

:

:

:

\vdots
 \vdots \cdot \vdots $[\vdots \vdots]$
 $(\)$ \vdots

\vdots
 $!$
 \vdots

\vdots
 \cdot
 \vdots

\cdot
 $)$:
 \cdot $(\)$ (

\cdot
 \cdot
 \cdot \vdots
 \cdot \vdots
 \cdot $(\)$

$(\)$ $(\)$ $\cdot(\ /)$ $(\)$
 $(\)$ $(\)$ $(\)$ $(\)$
 $\cdot(\ /)$ $(\ /)$
 $\cdot(\)$ $(\)$

: : () () :

() : ()
: ()

: ()

() : : () ()

: : ()

()

: ()
()

: .

:
() .

.() () ()

.() (/) ()

.(/) () ()

.() ()

.(/) ()

.() () ()

.() () (/) ()

:

()

()

فصل

في سياق صلواته بالليل ووتره وذكر صلاة أول الليل.

:

()

()

:

()

:

()

.(/)

()

.(/)

(/)

()

.()

()

.()

()

.(/)

()

()

: () :
) : ()
 ()
 () [:] :
 :
 : - :
 :
 ()
 : () :

فصل

: ()
 :
 ()

		.(/) ()
(/)	(/)	(/) ()
		.(/ /)
		.(/) ()
		.() ()

.
 :
 :
) : ()

() (

. () :
 . () :
 () : ()
 () . ()

) : -

. () (

()	()	()	()
.(/)	(/)	()	(/)
(/)	()	()	()
			.()

) :
 ()
) :

()
 ...
 ()
) :

()
) :
 ()

(/)
 ()
 (/)
 ()
 ()
 (/)
 ()
 ()
 (/)
 ()
 (/)
 ()

()

()

:

:

:

): () (

:

:

:

:

:

:

:

:

.

(/)

(/) (/) (/)

) : :

() . (:

(() () :

: :

! : () :

(/) (/) ((/) () () ()

(/) ()

() : : :
 :
 :
 ()
 : ()
 :
 () :
 : ()
 () ()
 ()
 : ()
 :
) :
 .(: ()
 : () :
 :

 .(/) ()
 () () (/) ()
 (/) () ()
 .(/)
 .() () ()
 () ()
 .(/) () (/) ()

():

:

:

:

:

:

:

:

.():

:

.

∴ ∴
∴ ∴
∴ ∴

∴ ∴ ()
() ∴
() ∴
) ∴ ()
()

∴ ∴ ∴ () ()
()

∴ ∴ () ()
∴ ()
) ∴
() ()

∴ (/) () () (/) ()
() () ()
() () ()
(/) (/) ()
(/) () ()

! : .
:):

.(

:

:

: : : .
:)

.(

:

.
.

: :

. : .

:

:

:

()

()

):

(

:

:

:

:

:

:

(/)

(/) ()

()

:
) :

(:
:

فصل

()
()

()

):
()

(
()

()

()

):

()

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

() ()

()

()

فصل

في هديه في سجود القرآن

)

() ()

):

() ()

:

:

) () () ()

() ()

() ()

() ()

(/) ()

() ()

() ()

() ()

(/) ()

() ()

() ()

() ()

(/) ()

() ()

(/) ()

() ()

() ()

() ()

()

() () () () () :
() () () () () ()
() :

()

:
:
:
:
:

()
() ()

(/) ()
() ()
() ()
() ()
() (/)

فصل

في هديه في الجمعة وذكر خصائص يومها

() :

() (

:

()

)

() (

()

:

() (:)

() (

() (

() (

) :

() (

: () (

)

()

(/)

()

(/)

()

()

()

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

()

(/)

(/)

()

()

:

:

.() (

:

:

:

.

:

:

:

:

()

.

.

:

()

)

:

.() (

()

):

:

:

:

:

:

.

:

:

.

.(/)	()
.(/)	()

: .

:

:

:

:

:

:

:

.(

:()

) :

:

:

:

:

:

.

() (

:

.

)

.

:

.

:

.

:

.

.

.

.

:

:

:

()

.
 :
 .
 :
 ()
 () ()
 :
 ()
 :

.
 :
 :

:
 :
 :
 :
 :

.(/) ()

() () :

()

()

() (/) ()
() () ()

) : .() ()

() (:
- -

: ())
() (:
) :

:

() (/) () (/) (/) (/)
.() (/) () (/) (/) (/)

() (

فصل

:

:

:

:

.

:

:

:

:

.

:

:

:

:

.

:

:

.

:

.

:

.

:

.

()

:

:

:

()

(/)

()

) :

() (

:

:

:

:

-

) :

:

() (

:

:

()

:

:

()	(/)	()	(/)	()
()	(/)	()	(/)	()
()	(/)	(/)	(/)	()

: .() (

:

.() :

()

: .

() :

.()

.

.() :

:

:

.

.

.

:

:

:

.

:

[:]

:

) :

.() (

:

.() (/) ()

(/) ()

()

.() (/)

(/)

()

()

:()

: : : : :

()

()

:()

:() ()
:() ()

): :
) :

: : :

		()
	.(/)	()
	.()	()
.(/)	(/)	()
		()

.
 :
 :
 ()
 : : :
 () :
 :
 : : :
 : : :
 : ()
 :

()
 : :
 :

.() ()
 .(/) ()

: .
 :
 : [:] :
 () :
 : :
 : :
 : () :
 : :
 :) : :
 : .(: :
 : () () :
 : () :
 : :
 :) :
 : (

.() ()

()

) :

() (

) : ()

() (()

) :

: : :
: :
:

: :
:
: : .

() (:

) ()

.	()
.	()
.	()
(/)	()

() (

()

()

:

()

:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

()

(/)

()

. :
 :
 . ()
 . : :
) : :
 . (:
 : . ()
 . () : ()
 . () : ()
) : ()
 . (: ()
) : ()
 . () ()
 (/) () (/) ()
 . () (/) ()
 . () (/) ()
 . () (/) ()
 . () (/) ()

: .

: .

()

:

()

()

!

:

:

- - .

:

:

:

. ()

: [:]

:

:

() ()

() () () () : () ()

() () (/) ()
.(/) (/) (/) (/)
.(/) (/) (/) (/)

.()
() : ()
)

() ()
) :

. () ()

فصل

(/) () () ()
.() ()
.() ()

()

:

()

()

()

()

()

(/)

()

()

()

.()

.()

()

.(/)

()

()

()

.(/)

()

.()

()

(/)

()

(/)

()

.()

. :
()

.() () : .() :
() .() :) :
: :
:

) :
() : .() () :
:) :
:
() ([:]

.(/)	.() ()	() ()	<hr/>	(/) (/)	() ()
	.()	() ()		.() (/) (/)	() () ()

!

.

:

.

.

:

()

:

()

:

.(/) ()

() :

()

) : -
(

()

(: ()
() :
() : :
() : :

() (/) () (/) ()
(/)
(/) ()
() () ()

) : ()
() ()

:
: ()

: ()

: ()

()
()

:

()	(/)	()
()	()	()
(/)	()	()

()

) :

) : () (

() (

:

:

()

()

:()

:

()

()

()

()

.

()

.

()

.

()

:

.

()

.

:

:

.

()

:

:

.

:

:

.

:

:

:

.

.

.

:

:

:

.

:

:

.

()

:

(

) :

:

:

:

.

.

()

()

()
فصل
في هديه ، في العيدين

()

()

()

()

()

	()	()
()	()	()
(/)	()	()
	()	()
	()	()
(/)	()	()

()

: : ()

()

:

)
() ()
() () () ()

				<u>(/)</u>	()
				(/)	()
	(/)			(/)	()
					()
					()
(/)	()	()		()	()
				()	()
				()	()

()
...
():

()

():

():

()

[:]

() ()
() ()

()
()
()

:

() ()

.

()

()

:

:

() ()

:

)

:

()

()	()	(/)	()
	()	(/)	()
()	()	(/)	()
	()	()	()
()	()	()	()
	()	()	()

()

:
:
:
:
:
:
:
:

فصل

في هديه في صلاة الكسوف

:

()

):

()

()

(/)

()

.()

()

:

) :

(

()

:

:

:

:

() ()

. ()
. ()
. () ()

فصل

في هديه الاستسقاء

.
) :
 () (.
 :
 ()

- -

) :

() (

∴ [:] : [:]

:

.

:

) :

.(/) () (/) ()
 (/) () () (/) ()
 .() (/)
 .() ()

$() ($
 $:$
 $()$
 $:$
 $:$
 $) :$
 $.$
 $($
 $) :$
 $) () ($
 $() ($
 $:$
 $:$
 $) :$
 $($
 $()$
 $) :$
 $() ($
 $() ($
 $) :$
 $:$
 $) :$

 $(/)$ $()$ $()$
 $(/)$ $()$ $()$
 $(/)$ $()$ $()$
 $.$ $()$
 $(/)$ $()$
 $.$ $()$
 $(/)$ $(/)$ $()$

) : () (

) :
() (:
() () :
() () :

فصل

في هديه في سفره وعبادته فيه

:

()

()

()

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

)

.() (

) :

⋮

∴

) : () (

) :

(

.(

.()

)

.() (

) :

.() (

		.()		()	()
		.()	()	()	()
()	.()	()	()	()	()
				.(/)	()
		.()			()

() .
:

() .

() : ()

:
:

.
:

:() () :

.(/)	()	()	(/)	()
	.(/)	()	(/)	()
			.(/)	()
	.()	()	()	()

) :

: () (

:

) :

: () (

:

) :

:

!

:

: ()

() ()

:

()

.(/)

(/)

.()
()

(/)
(/)
.(/)

()
()
()

!

:

·
:

()

:

:

:

()

·
:

()

·

:

: .

· () ()

:

:

:

·

(/)

(/)

· (/)

(/)

()

()

· (/)

· (/)

(/)

()

· (/)

(/)

()



:
:
()

()

:
.

:
()

:
()

()

فصل

:
:

:
:
() [:]

. ()

. ()

. (/) ()

. ()

. ()

. () (/) ()

: () .

()

:

() : ()

:

:

.

:

.

:

: .

:

()

: .

()	()	(/)	()
()	(/)	()	()
()	()	()	()

() ()

فصل

()

() ()

()

فصل

()
()
()
()
()

·
·

·

· ()

·

·

·
·

·

·

·
·

·
·

·

· ()

()

()



() ...

()

()

()

() ()
(/) ()
()

فصل

فصل

في هديه في قراءة القرآن، واستماعه، وخشوعه، وبكائه عند قراءته،
واستماعه وتحسين صوته به وتوابع ذلك

() ()
() : () :
() ()

()

[:]
()

() () : () () :

() () (/) ()
(/) (/) (/) ()
(/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/)

: :- -

:-

) :

(

)

.(

:

:

:

()

:

:

()

.

:

:

:

[:]

:

()

:

:

:

:

:

:

:

.()

()

.()

()

(/)

(/)

()



: .

. : :
: [.] :

()

: : .
.

) : :

: . () ()
()

: :
:
:

.()

(/)

()

.(/)

()

) : () :

:

:

:

) : () : () :

: . :) :
 () () :
 . () () :
 () :
 . () () :
 : :
 ! : :
 : :
 : :
 .) : () ()
 : :
 : :
 : :

. (/) ()
 . (/) ()
 . (/) ()

:

:

:

):

(

:

:

:

(

):

:

فصل

في هديه في عيادة المرضى

() ()

:

() :

) :

() (

() :

) :

() (

() (

) :

() :

) :

() () (

() : ()

: () :

() (/) ()

(/) ()

() (/) ()

() (/) ()

(/) ()

() () (/) ()

() (/) ()

. () (

)

. () (

() () :

. () (

) :

.

.

:

()

.

		.()	()	()
	.()	()	()	()
			.	()
()	()	.(/)		()
		()		()
				.(/)

() () :

·
:
:
:
:

فصل

()

() () (/) ()
() () () () ()

() :
: [:]

فصل

()

()

()

()

.()

()

()

()

.(/)

()

.(/)

()

.()

()

()

()

:

فصل

:

()

() () :

()

:

:

()

:

:

:

()

فصل

		() ()	(/)	()
	()	()	(/)	()
(/)	()	()	(/)	()
		()		()
(/)	(/)	(/)		()
			(/)	()

:

):

.() (

):

.() (

):

.() (

):

.() (

() .()

.()	(/)	()	()	()
	.(/)	()	()	()
	.(/)	()	()	()
			.()	()
	.()	()	()	()
			.(/)	()

()

:

()

:()

:

:

:

:

:

:

:

()

:

:

:

()

.(/)

(/)

(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

(/)

()

()

.(/)

فصل

) :

() (

) ()

() (

: : :

: ()

:

:

:

:

:

:

()

()

:

:

...

:

:

:

:

:

()

:

=

(/)

()

()

(/)

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

()

()

()

()

(/)

()

()

(/)

()

()

()

:

:

:

:

:

:

:

:

فصل

()

:

:

)

()

()

(/)

()

()

(/)

()

()

()

()

/)

()

(/)

(

:

()

:

:

:

: .

()

:

:

()

:

:

:

:

:

فصل

()

()

()

(/)

()

.()

(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

()

:

فصل

()

)

): (

.() (

.()

.()

):

()

:

:

:

:

:

:

(/)

()

()

()

.()

()

(/)

()

()

()

.(/)

()

()

)

()

()

()

()

.(/)

(

.()

()

.(/)

()

()

! :
() (: :
: : : :
: . : : :

()

: ! : : !

فصل

()

()

(/) () (/) () ()
(/) () () () (/)
() (/) () () ()

()

()

فصل

()

()

فصل

في هديه في زيارة القبور

:

)

() (

:

() () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()
 () () () () ()

فصل

()

()

()

فصل

() () (/) (/) ()
() () (/) (/) ()
(/) () () (/) ()

فصل

في هديه في الصدقة والزكاة

:

:
:
:
:

()

()

(/)

(/)

()

()

(/)

() ()

() ()

()

()

()

:

()	()	()	()
()	(//)	(//)	()

:

فصل

في مَنْ هو أهل لأخذ الزكاة

()

()

()

:

()	()	(/)	()	()
()	()	(/)	()	()
()	(/)	()	()	()

: ()

فصل

في زكاة العسل وما ورد فيه

()

() ()
() () :

() ()
() : () :

() :

()	()	(/)	()
(/)	()	() () ()	()
()		()	()
		()	()
(/)	()	(/)	()
	()	(/)	
(/)	()		()

()

()

()

فصل

في هَدْيِهِ في زكاة الفطر

()

()

:

:

()

()

()

:

:

() :

=

(/)

(/)

()

()

()

()

(/)

()

()

()

(/)

()

()

(/)

(/)

()

(/)

(/)

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

()

) :

()

()

(

()

فصل

في هديهِ في وقت إخراج هذه الصدقة

) :

()	()	()	(/)	()
(/)	()	(/)	(/)	()
			()	()
			(/)	()
		(/)	()	()

() ()
: ()
()
:

فصل

في هديهِ في تخصيص المساكين بها

:

فصل

في هديهِ في صدقة التطوع

() () () ()
() () () (/) ()
(/) (/)

()

()

فصل

في أسباب شرح الصدور وحصولها على الكمال له

:

:

: [:]

:]

.[

:

(/) (/) ()
(/) (/) ()

) :

) :

() (

: . (

:

:

:

:

:

. (/)

(/)

()

·
:

·

()
·

·
:
:

·

· ·

· ·

:

:

·() (/) ()

: [:] :

[:]

.

:

.

فصل

في هَدْيِهِ في الصيام

:

. [:]
() () :
()

:

()

(/) () () (/) ()
() () (/ /) ()
(/ /) ()
(/) ()

()

:

()

فصل

()

:

) :

() (

:

:

:

()	()	(/ /)	()
()	(/)	() (/)	()
		(/)	()
	()	(/)	()
() ()	(/)	(/)	()

:

:

.() :

) : :

() : .(

.^()() :

:

:

.() ()

()

: .

:

()

:

:

:

:

:

() : : .

: .

: .

()

) : :

.() (/) ()

.() (/) ()

.() (/) (/) ()

فصل

في أنه لم يكن يدخل في صوم رمضان إلا برؤية محققة أو بشهادة شاهد واحد

()

()

) :

:

()

(

) :

) : ()
()

) :

) :

()

) :

()	()	()	()
(/)	()	()	()
()	(/)	()	()
()	()	(/)	()
()	()	(/)	()
()	(/)	()	()
()	(/)	()	()
()	(/)	()	()

:

.

:

:

:

()

:

:

:

.

) :

()

()

:

()

:

:

:

:

:

.

:

(/)

()

()

()

(/)

()

()

.():

.():

():

:

:

:

.

:

:

.

:

:

.

:

.

:

.

:

.

()

()

فصل

في هَذِيهِ فِي الْفَطْرِ

()

) :

()

) :

(

()

) :

(/)

(

/ /)

()

()

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

()

()

()

()

()

(
 () :
) :
 () :
 () :
 :

فصل
 في الصوم في السفر

:

[:] :

()

()	(/)	(/)	()	()
			()	()
		()	(/)	()
			()	()

:
() : ()
()

) : () :
()

فصل

في أن أعظم [الغزوات] وأجلها كان في رمضان.

:) :
()
:

()	()	()
()	()	()
()	(/)	()

:

()

:

فصل

:

()

:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

(/)

(/)

(/)

() ()

()

()

()

()

()

() ()

()

فصل

في الصوم جُنْباً وتقبيلاً الزوجة للصائم

()

()

()

()

()

() : : :

() () :

() ()	(/)	(/)	()
() ()	(/)	(/)	()
		()	()
	()	()	()
	()	(/)	()

: ()

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

:

()

()

:

:

.

.

()

:

():

:

:

:

:

:

(/) ()

.()C

:

:

:

):

.()C

:

.

:

:

:

:

.()

:

:

.C

)

.()

:

):

.()C

:

.()C ()

(/)

()

()

.()

(/)

()

.()

()

.()

(/)

(/)

()

$) :$ $:$ $($
 $:$
 $) :$ $.$ $:$ $:$
 $.() (:$ $:$ $:$
 $:$
 $.$ $()$
 $:$ $:$
 $) :$ $.$ $() ($
 $.$ $()$ $($
 $:$ $:$

$.()$ $(/)$ $.()$ $()$
 $.()$ $(/)$ $(/)$ $()$
 $.()$ $(/)$ $(/)$ $()$
 $.()$ $()$ $()$

() :

·
:

:

() :

·

:

:

:

:

:

·^()()

:

·

:

· ()

) : (: (: () :

: () (

.

:

()

.

:

.

:

() :

[:] :

()

() ()

) :

:

:

:

:

.

:

.

:

:

.

()
()

()
()

(/)
(/)

_____ ()
(/) (/) ()

.

:

.

:

.

:

.

:

.

.

) :

:

.

:

(

.

:

.

:

.

:

.

:

.

:

:

):

(

:

:

:

:

:() :

() :

():

فصل

في هديهِ في إفتار يوم عرفة بعرفة، وسُنَّة صيامه لغير الحاج

()

:

()

()

()

(/)

()

()

()

(/)

()

() ()

⋮

() ()

فصل

في حكم صوم السبت والأحد والجمعة

:

() ()

()

:

:

			()	()
	(/)	()	()	()
()	()	(/)	()	()
		(/)	(/)	

:

. .

):

()

:

:

:

:

:

:

:

()

:

. .

فصل

):

()

:

:

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

()

(/)

(/)

()

:

[:]

) : () (

:

: ()

) : () (

: . :

: .

:

: .

. .

فصل

في حكم المتطوع في الصيام إذا أفطر

: . :

() :

.(/) (/) ()

.() ()

.(/) (/) ()

()

: :
: () :

. () () :
:

:
:
.

: ()) : () ()
:) : () ()

: () () :

.(/)	()	()
.(/)	(/)	()
.(/)	(/)	()
	.()	()
.()	()	()

فصل

في كراهة تخصيص يوم الجمعة بالصوم

()

) :
(^()

: . :

) :
(^()

: .

فصل

في هذيه في الاعتكاف

() (/)
() (/)
() ()

فصل

في هديه في حجّه وعمره

:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

) :

() (/) ()

(/) () () ()

:

.() ()

) :

.() ()

.() ()

) :

.() :

(()) :

(()) :

.()

.() ()

.() ()

: :

.() () :

:

.()	()	()	(/)	()
			.(/)	()
()	()	()		()
	.()	()	(/)	()
			.(/)	()

() ()

:

() ()

فصل

في كون عُمَرُ الرسول كلها كانت داخلاً إلى مكة

فصل

() ()
() ()

) :

()

()

فصل

في أنه لم يُحفظ عنه أنه اعتمر في السنة إلا مرة واحدة

:

)

()

:

:

()

()

()

()

()

()

()

()

() : () : ()
:() : :
() :
() :

()

:

:

()

):

(

:

()

.(

):

()

فصل

.(/)	.(/)	()
.(/)	(/)	()
.(/)	(/)	()

(...

:

:

.

.

:

..(

.

):

. ...

() ()
()

):
: ()
) : ()
()

(
:
) : ()
:

() (.....

		.(/)	()
		.(/)	()
	.() ()	(/)	()
.(/)	(/)	()	()
		.(/)	()
.() () ()	(/)	(/)	()
		.()	()
	.()	(/)	()

. ()
 :
 () ()
)
) : ()
 : ()
)
 ()
 :
 : () () :
 :
) : () :
 ()

	. (/)	()
. ()	(/)	()
	. (/)	()
	. (/)	()
	. ()	()
	. (/)	()
. ()	(/)	()

:

.() (

:

:

:

.

:

) :

) :

.() (

:

.

:

:

.

: .

:

)

.(.(//) ()
.(//) ()

.(: :

: .

.

: :

:

:

:

:

()

:

:

:

):

: . (... :

.)

.() ()

.(

):

()

(

:
:

:

:

:

:

:

:

:

.

.

:

.

.

.(/)

()

:

:

فصل

في الأغاليط التي وقع فيها بعض العلماء في عمّر النبي

:

:

:

:

) :

(

:

:

:

فصل

في الأوهام التي وقع فيها بعض العلماء في حج النبي

()

فصل

في الأغاليط التي وقع فيها بعض العلماء في إحرام النبي

فصل

في أعذار القائلين بهذه الأقوال، وبيان منشأ الوهم والغلط

()

فصل

في عذر مَنْ قال إنه لم يعتمر في حَجَّته أصلاً

:

:

() :

:

فصل

في عذر مَنْ قال إنه اعتمر عُمرَةً حلَّ منها

:

()^()

:

() :
() :

:

:

() (/) () (/) ()
() (/) () (/) ()

: .

فصل

في أَعذار الذين وهموا في صفة حَجَّتَه

()

:
:

: .()

.() () :

() :

.()

.() () :

.() ()

) ()

.()

) :

]

()
 .() () () ()
 . ()
 . ()
 . ()
 . ()
 .() ()

[

:

.() (

:()

)

):

((

):

.(

):

.() (

(

):

:

()

.(/)

()

.()

()

:

:

:

.

:

:

.

:

.

.

:

.

:

:

:

.

:

:

: ()

:

.

) :

.(

:

:

) :

:

.

.(

:

:

فصل

في عذر مَنْ قال إنه حج متمتعاً تمتعاً حلَّ فيه من إجماعه

:

:

:

(

) :

.(

) :

[] :

:

()

:

()

:

:

:

()

() :

:

()

:

: . :

.() () () ()

.() ()

.(/) (/) ()

()

:

:

:

فصل

في الرد على مَنْ زعم أنه حَجَّ متمتعاً

:

:

.

:

()

:

:

:

:

:

.

:

()

:

:

()

:

.

:

:

.

(/)

()

()

()

()

.

:

.

.

:

.

:

:

.

.

):

.(

:

) : () (

:

:

:

:

:

:

فصل

(/) .

()

(/)

()

في عذر مَنْ قال إنه حج قارناً قراناً طاف له طوافين، وسعى له سعيتين

:

:

:

:

()

:

:

()

:

()

:

()

()

:

:

.

.

:

:

.

:

:

:

.(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

فصل

في أنه لا عذر البتة فيمن قال إنه حج حجاً مفرداً اعتمر عقبيه من التنعيم

:

فصل

فيمن غلط في إهلاله

:

:

:

فصل

في عذر مَنْ قال إنه لَبَّى بالحج وحده واستمر عليه

:
:

فصل

في عذر مَنْ قال إنه لَبَّى بالحج وحده ثم أدخل عليه العُمْرة

:

: :
() :

: :

. :
:
: : : .

:

: . : : .

)

:(

:

()

):

:(:

.():

:

:

:

فصل

في عذر القائلين إنه أحرم بعُمْرة، ثم أدخل عليها الحج

:

:

)

(

:

.(/) (/) ()

()

: .

()

):

:

(

()

...

:()

:

()

:

:

:

:

:

.

:

):

()
() () ()

()
:

...
:

) :
()
()

) :

(:
:

) :

(
() :

:

()
()

فصل
ولنرجع إلى سياق حجته
()

()

() (/) ()
() () ()

∴
()

(

:

فصل

:

فصل

∴

:

:

:

:

∴^()()

(/) (/) ()
() () ()

فصل

() : () : () : ()
() :

:

:

() :

:

:

:

.

.

() :

:

:

:

:

.

.

:

.

:

:

:

.

:

:

(/) () (/) ()
(/) ()
(/) ()

∴

() : () :

:

()

):

()

: ()

:

()

()

فصل

: () : :

):

(/)

()

(/)

()

()

(/)

()

() ()

(/)

()

$\cdot ()$ $($
 $:$ $($ $) :$
 $\cdot () :$
 $\cdot () ($
 $:$

$:$
 $:$ $:$ $:$
 $:$ $($ $)$ $:$
 $)$
 $) :$
 $:$ $\cdot () ($ $) :$ $:$ $\cdot ($
 $($ $) :$ $($ $) :$
 $) :$

	$\cdot ($	$/)$	$($
$\cdot ($	$) ($	$($	$/)$
$\cdot ($	$)$	$($	$/)$

) : . (:
(... :
(:
:

: :
) : :
() : :
:

: .
 : .
) : . (:
 :) : . (:
 : :

:
 :

:() () :

:

:

:

:

:

.

):

:

.

(

:

.

():

:

.

:

: ():

فصل

عدنا إلى سياق حَجَّتِه

) :
(^()

:

(^()) : :

:

:()

:

:() :

:

:

(^()

:

()

()

(/)

()

() ()

()

()

/ /)

(/)

()

(/)

.(/

()

() ()

(/)

()

.(/)

()

(/)

()

:

):

:

: ()

:

: ()

):

: ()

: ()

: ()

: ()

.() () () ()	(/)	()
.() () (/)	(/)	()
	.()	()
	.()	()
	.()	()

) :

) : ()

....(

: () : () : () : () : ()

) : ()

: ()

	()
(/)	()
()	()
() (/)	()

.)
): : ()

.) (

: :
: :
: :

:

:
:
:

:

:

:

.() ()
.() ()

• •

:

:

•

(

)

:

:

:

:

•

:

:

:

•

:

•

()

:

:

:

:

:

:

:

:

[:]

:

فصل

في معارضة أحاديث الفتح بما يدل على خلافها

:

()

:

) :

()

()

:

:

()

:

:

()

:

) :

() (

:

) :

()

() (/)

(/)

()

()

()

()

()

.

:

فصل

) : .
.(

):

.(

:

):

(

:

:

:

:

:

:

:

:

.

()

·
:

·
:

· :
· :

· :
· :

·
:

· :
· :

· :
· :

· :
· :

·

·
:

·
:

· ()

(/)

()

· : : : :
: : : : :
·

· : : : :
: : : : :
·

: · () : :
· ()

: : : : :
: : : : :
·

: : : : :
: : : : :
·

: : : : :
: : : : :
·

· : : : : :
: : : : :
·

: : : : :
· : : : : :
· () (/) ()

∴ ∴ ∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴ [∴ ∴]

() () :

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

∴

() () (/) ()

فصل

()

() (/) ()

فصل

. : :

) : () :

() (

. : :

: :

:

) : ()

.(

(/) () () (/) () ()
 .(/) (/) () ()

[:]

:

:

:

.

) :

() :

:

) :

:

(

()

: .

) :

:

(

) :

()

:

:

:

:

.

() :

:

:

()

()

()

()

() () :

() :

) :

) :

) :

() :

(

(

:

(

) :

:

(/) (/) ()

:

:

·
:

: .

:

·

) :

:

(

:

:

:

:

:

·

·

() :

·
·
·

·

() ()

·
·

·

·

·

·

·

·

·

() () () () (/) ()
(/) () ()

[:] : ()

.

:

)

() (

:

... .

فصل

:

. () () (/) ()
.(/) ()

فصل

()
:
()
) :
:
()
()

(/) ()
(/) ()

()

:

() [:]

):

() (

:

:

:

:

:

.

()	(/)	(/)	()
		(/)	()
		(/)	()
		(/)	()

) : : .() :

:) : .() :

) : .() :

:

فصل

[:]

) : . ([:] .()

		.(/)	()
.(/)	(/)		()
		.(/)	()
		.(/)	()
	.(/)	(/)	()

.() .

() : . : ()

() : : () ()

() : ()

:() : : : : : : :

.(/)	()
.()	()
.()	()
.()	()

() () :

فصل

() () : () ()
() () : () ()

() () : () ()

() () () :

(/) () () ()
(/) () () ()
(/) () () ()
(/) () () ()

:

فصل

:

)

(...

: ()

: :

:

:

. (/) ()

) :
.(

.
()
:

.() :
.

()

()

.()() (/) ()
.(/) ()
.() (/) ()

: :

()

:

()

) : ()

. () : . (

) : :

(

. ()

. ()

()

. ()

(/)

()

. ()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

. (/)

(/)

:

.

.^()():

) : ()

.^()(

.^()

) :

.^() () :

()	(/)	()	<u>.() ()</u>	()
			(/)	()
	() ()	()	.()	
			(/)	()
			.() (/)	
			.(/)	()
			.()	()

:

.

:

.

()

:

.

:

.

:

.

()

:

.

:

.

() () () () ()

() () (/) (/) ()

(/) (/)

) : ()
 ()
 ()

() (/) ()
 () (/) ()

) :
 :
 :
 : ()
 : ()

:
 . () : () : . ()
 :
 :
 . ()

:
 :
 :
 .
 (/) () (/) ()
 . () (/) ()
 . () () ()

)

:

.^()(

:

:

:

.

:

.
:

:

. :

:

.

.

.

:

:

:

:

:

.

) :

(

) :

(

:

.

.^()(

:

.(

) :

) :

:

.

.(/)

(/)

.()

()

()

فصل

في صلاته في المزدلفة ووقوفه بالمشعر الحرام

:
:
) :
(⁽¹⁾ :
:
:
[:] : :
.() (/) () () ()

فصل

) :
() :

:

()

:

:

:

() (/) (/) (/) (/)
() () (/) (/) (/)

) :

.() (

.()

.() () :

.() :

.() (

. :

) :

) :

) :

(

.() (

- -) :

.() () :

) :

:

) :

.() () () ()

.() (/) ()

.() () ()

.() (/) ()

.() (/) (/) ()

.(/) ()

.
 :
 :
 :
 .^()()
 .^()() : ()
 .^()() :
 :

^()() :

:

) :

:) . () :

. () ()	(/)	()
	. ()	()
. ()	()	()
. () ()	(/)	()

.^()(

.

:

:

...

:

.

.^()() :

:

.

:

:

.

.

:

.

:

.() ()

(/)

()

.() ()

()

:

:

فصل

في أنه لا يختص الذبح بالمنحر وحيثما ذبح في منى أو مكة أجزأه
)

()

) :

() : ()
() :

فصل

في خلق رسول الله رأسه

-
) :

() () () () ()
.(/) (/)
()
(/) () (/) ()
.() ()

: ():

:()
...

:

:()
:()

()
:

): ()

():

:():

):

:()

:

.(/)	()
.()	()
.(/)	()
.()	()

():

. : . :
: :
)

:
(^()

:
[:]
()

فصل

:

. - - : :
_____ .(/) ()

:

:()

):

(
:

:()

: [:] :

:

(:) :

-

..

...

·
:

:

:

:

:

:

:

(

)

:(

)

:

:

:

·

..

() :

: ()

:

.

:

:

:

:

:

() :

:

:

.

.

:

.

...

/)

()

()

()

()

.(/

() :
 :
 . :
 . :
 : . () :
 : ()
 : ()
 ()

فصل

) : ()
 : ()
 ()

	(/)	()
() ()	(/)	()
()	()	()
(/ /)	()	()

) :
() :
() :

() :

:

() :

) :

() :

:

:

:

فصل

:()

()

- -

:()

.(/)	()	()	()
	.()	(/)	()
	.()	(/)	()
		.(/)	()
.(/)	()	()	()

:

.

.

:

:

.

:

.

:

:

.

:

-

-

.

:

:

:

:

.

:

() :

:

:

:

:

:

:

:

:

:

- -

:

) :

(

() :

فصل

:

: ()
: () :

*

:

() [- :]

:

()

*

:

[- :]

()

-

-

	<u>()</u>	()
	()	()
(/)	(/)	()

فصل

في رجوعه إلى منى وبياته بها

):

(

()

:

:

-

:

) :
()

) :

() () () (/) ()
(/) () ()

()... ()

فصل

في هل كان يرمى قبل صلاة الظهر أو بعدها؟

:

:

()

:

:

()

:

:

فصل

في تضمن حجته ست وقفات

:

:

:

:

:

:

فصل

في خطبه في أيام الحج

:

:

(/)

()

(/)

()

()

()

()

()

) : : :
 : - (: - (:
 : () : () :
) : () :

()

[:] : :

() ... () :

فصل

في ترخيص النبي البيتوتة خارج منى لمن له عذر

()

()

: :

(/) ()
 (/) ()
 () (/) ()
 () (/) ()
 () (/) (/)

فصل

في أنه لم يتعجل في يومين بل تأخر حتى أكمل رمى أيام التشريق الثلاثة

()

() : () :

() :

()

:

....

()

:

:

() () (/) ()

(/) (/) (/) (/) ()

(

() (/) (/) ()

:()

()
: () :
):
:(
: () :
()

()
()

() :
) :
(

() : () :
:
:

()
- ()
- () : ()
() : ()
() :
()

() (/) ()
()()() ()
(/) ()
() (/) ()
() () ()

فصل

في دخوله في الكعبة

:

() :

: : :

() : () :

) :

() : () :

: () :

() (/) ()
() (/) ()

: : : ()

: :
() :

فصل

في وقوفه في الملتمزم

) :

()

: : :)

()

:
: _____
() (/) ()
() (/) ()
() () ()
() () ()

فصل

في موضع صلاته صلاة الصبح صبيحة ليلة الوداع

:
:()
:()
* [- :]^()
()
) :
(
()

فصل

() : : () :
) : :
()
) :

() (/) ()
() (/) ()
) () () (/) ()
()

(

.()

:

:

:

.

فصل

:

()

):

.()

:

:

- : -

:

.()

.(

):

فصل

.() () () () () () () () () ()

:

فصل

:

فصل

:

:
()

:

:

:

فصل

: ()

فصل

:

فصل

:

فصل

:

فصل

:

فصل

فصل

()

: ()):

:

() ()

فصل

:

:

:

()	(/)	()
()	(/)	()
()	()	()

فصل

فصل

فصل

فصل

() :

فصل

()^()

(/) ()

فصل

فصل

فصل

فصل

:

: () : () () ()

:

: .

:

:

. () ()

فصل

:
:()
()
:

... : ()

()

فصل

:

فصل

:

فصل

في هَدْيِهِ في الهدايا والضحايا والعقيقة

()

() (/)

.[:]

..
: :
: :
.[:]
: :

[- :] *

.[:]

: :

: :

.
.

: .

()

()

:

()

()

()

) () () ()
.()
() ()

() :

() : ()

()

() :

() : ()

فصل

في ذبح هدى المتمتع أو القارن

			(/)	()
		()	(/)	()
				()
			()	()
(/)	(/)	()	()	()
		(/)	(/)	
(/)	()	()	(/)	()

فصل

في أن من هَدِيه أن يُضَحَّى بالمُصَلَّى

: () ()
 ()
 :) :
 ()
) : ()
 : :
 : ()
 :

فصل

في هَدِيه في العقيقه

() : ()
 () () ()
 (/) (/) ()
 () () ()
 () () ()
 (/) (/) () ()

: .
 : :
 : ()
 : () :
 () () : ()
 () :
 :
 : () : () :
 : ()
) : ()
 :

فصل

في عَقَّه عن الحسن والحسين

(/)	()
()	()
(/)	()

:

()

.

:

(()) :

()

:

.

..

:

:

.

) :

:

() (

:

:

:

:

:

:

) :

() :

:

(

() (

)

.(/) () ()

.() ()

(/) () () () () ()

(/) () () () () ()

.() () (/)

.() () () ()

[:]

:

: () .) :

() (

فصل

()

) :

() (

فصل

:()

:

:

:

فصل

) :

.	()	()	()	()
			(/)	()

()

فصل

في هديه في تسمية المولود وختانه

) :

:

:

(

:

:

:

:

:

:

:

:

فصل

في هديه في الأسماء والكنى

) :

()

) :

()

) :

() :

:

()

(/)

()

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

() ()

()

()

()

()

()

()

()

: () :
 () : () : () :
 () : () : () :

:
 :
 : : : : : : : :
 () : : : : : : : :

- -

(/)	()	()	()
		(/)	()
		(/)	()
		(/)	()

·
() ()

) :

(

:

:

[:]

:

.() (/) ()

فصل
في المحظور من الأسماء

: ()

: () :

()

فصل

()

فصل

() (/) ()

في نديه أُمَّته إلى التسمي بأسماء الأنبياء

() :

فصل

في النهي عن التسمية ببعض الأسماء

() :

:

:

(/) (/) () ()
() ()

:

:

:

(^() ()) : ()

:

فصل

في الكنى

:

(() ()) ()

() () :

:

:

) :

:

() (

() :

:

:

:

) :

:

() (

:

()	()	(/)	()
()	()	(/)	()
()	()	()	()

() : ()

:

:

:

() : () :

:

) () :

() (

:

()

:

:

:

:

) :

() (

:

() :

:

() ()

() ()

() ()

(/) () (/) ()

()

فصل

:

:

:

()

()

فصل

في النهى عن تسمية العنب كرمًا

()

):

:

() () ()

فصل

في كراهة تسمية العشاء بالعتمة

):

() () (/) ()
() () (/) ()
() () (/) ()

) : ()
: ()

) : ()
) : ()
[:] : ()

[- :] * :

فصل

في هديهِ في حفظ المنطق واختيار الألفاظ

() (/) () (/) ()
() (/) () (/) ()
() () (/) () ()
() (/) (/)

() :

فصل

في النهى عن سب الدهر

() :

() :

() :

() :

() :

()	()	(/)	()
()	()	(/)	()
(/)	()	(/)	()
		(/)	()

) :
:
() :
:
() :
:
() :

فصل

في النهي عن قول الرجل: خبثت نفسي

) :
:
() :

() :
() :
() :
() :

() ()

() () ()
() () ()
() () ()

:

.

:

:

:

.

:

:

:

:

()

(()) :

.

- -

) :

()

$$= \frac{(/) ()}{(/) ()}$$

:

. () (/) =

[:]

:

[:]

:

:

.

.

.

:

.

:

):

):

(

(

فصل

في هديه في الذكر

():

():

:

:

()

()

(

) :

) :

:

()

(

) :

-

) :

- (

()

()

()

(/)

()

.(

/)

.()

: (/)

()

:

()

$() ($
 $:-$
 $:()$
 $() [:]$
 $) :$

$) :$
 $() ($
 $:$

$() ($
 $() () :$
 $) :$
 $($
 $() () :$
 $($
 $:$

$()$	$()$	$()$	$(/)$	$()$
$(/)$	$() ()$	$(/)$	$(/)$	$()$
$(/)$	$()$	$(/) (/)$	$(/)$	$()$
$()$	$(/)$	$()$	$()$	$()$
$(/)$	$(/)$	$(/)$	$()$	$()$
$()$	$(/)$	$()$	$()$	$()$

$() () :$

$() (\dots) :$

$) : () () :$

$- - () () :$

		<u>$() ()$</u>	$()$
$()$	$()$	$() ()$	$()$
	$()$	$()$	$()$
$() ()$	$()$	$()$	$()$
	$()$	$()$	$()$
$()$	$()$	$()$	$()$

:):

.
) : ():

(: : ():

: . () ():

. () :) : ():

: () : ():

. ()	()	()
. ()	()	()
	. ()	()
	. ()	()
	. ()	()

()
):

()

فصل

في هديه في الذكر عند لبس الثوب ونحوه

):

()
):

()

()
):

() (/) ()
(/) () ()
()

() :
 () :
 () : () - ()

فصل

في هديه عند دخوله إلى منزله

() :
) :
 () :
 () :
 () :
 () :
 () :
 () :

()	()	()
()	(/)	(/)
()	(/)	()
()	()	()
()	()	()
()	()	()
()	()	()

.()C

: : () ()

: ()

:

.

.
) :
() C

: - - : ()

:

. () () (/) ()
() (/) ()
() ()

:

:

فصل

فيما يقال عند الخروج من الخلاء

() :

()

فصل

في هديه في أنكار الوضوء

) :

()

) : () :

(/) (/) () () ()
(/) (/) () () ()

: : : (:
 . () :
 . () :
 : () :
 : () :
) : () :
 : :
 () (:
 : :
 : :
) : : (:
 () : : (:

فصل

(/)	(/) ()	(/)	()
		()	()
		()	()
		(/)	()
	()		()
	()		()

في هديهِ في الأذان وأذكاره

() :

() :

.

.(

) :

()

.()

) :

.(

فصل

فيما شرعه لأُمَّته من الذِّكْرِ عند الأذان وبعده

:

(/) ()
(/) ()

() :

:

) :

(

فصل

في هديه في الذكر عند رؤية الهلال

) :

() :

) :

(

) :

:

-

- (

() :

:

فصل

في هديه في أذكار الطعام قبله وبعده

(/)

()

(/)

()

()

()

()

() :

()

()

فصل

في إذا ما كان الآكلون جماعة فعلى كل واحد منهم أن يُسمِّيَ الله

:

:

:

)

()

(

:

()	()	()
()	(/)	()
()	()	()

) :

()(

()(

) :

:

()

):

([:]

):

()

(

()(

):

()(

):

()(

):

:

):

()

(

(/) () ()

(/) ()

() ()

() (/) ()

() () (/) ()

() ()

(/) ()

() ()

() :

() :

()

) :

()

(

:

) :

:

()

(

()

فصل

) : () :

()

()

:

() :

	(/ /)	()
.()		()
.()	()	()
.()		()
.()	(/)	()
.()	(/)	()
.()	()	()

$\cdot^{()}$ $^{()}(\):$

) :

$\cdot^{()}(\$

$\cdot^{()}(\):$

() :
 $\cdot^{()}$

: () :

$\cdot^{()}$ () :

) :

$\cdot^{()}(\$

) : () :

$\cdot^{()}(\$

) :

- -

$\cdot(\ /)$ ()

$\cdot(\)$ ()

$\cdot(\ /)$ ()

$\cdot(\)$ (/) ()

$\cdot(\ /)$ ()

$\cdot(\)$ ()

(/) (/) () ()

$\cdot(\ /)$

$\cdot(\)$ ()

) :
()

فصل

في هديه في السلام والاستئذان وتشميت العاطس

) ()

()

:

)

()

:

:

:

) :

()

:

:

() :

()

(/)

()

()

()

(/)

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

:

[:] [:] [:]

.

:

. [:]

):

.(

):

.(

: () :

فصل

في هديهِ في السلام على الصبية والنساء

()
() : ()
() :
() : ()
()
:

فصل

() () ()
() () ()
() (/) ()

في تسليم الصغير على الكبير والماشي على القاعد

()

()

: ()

: ()

()

()

: ()

):

()

):

()

):

()

() () (/) ()

(/) ()

() (/) ()

() () ()

() (/) () ()

() ()

() ()

) :

:

()

..(

:

فصل

()

(

فصل

في البدء بالسلاام قبل الكلام

() :

() :

) :

:

()

) :

()

() () () () () ()

() ()

() ()

(/) ()

(/) ()

: (:) :
()

() :

فصل

في التسليم على مَنْ يواجهه وتحمله السلام للغائب

()

) :
() :
() : (

فصل

في انتهاء السلام إلى: وبركاته

) () :
() : :
() : :
:

(/) () () ()
()
()
() (/) ()
() (/) ()

() () :
) : ()
 :
 :
) :
 () :
 ()
) : :
 (:
 :
 [- :] *
) : ()
 :
 : :
 () :
 :
 .
 .(/) () ()
 .() (/) ()

:
 :
 :

فصل

في هَدْيِهِ إِذْ بَلَغَهُ أَحَدُ السَّلَامِ عَنْ غَيْرِهِ أَنْ يَرُدَّ عَلَيْهِ وَعَلَى الْمَبْلُغِ

) : ()
 ()

()

:
 ()
) : ()
 ()

فصل

في هَدْيِهِ فِي الْإِسْتِثْنَانِ

() :
 () :

				()	()
				(/)	()
		(/)	() ()	()	()
	(/)	(/)	()	()	()
()	(/)	()	(/)	()	()
()	()	(/)	(/)	()	()

=

: :

فصل

في المستأذن كيف يرد إذا سُئِلَ عن اسمه

: :

:

: :

()

() : () :

()

() : () :

()

() :

() : () :

: () :

: () :

فصل

في أن رسول الرجل إلى الرجل إذن له

:

() : () :

()

:

() () () (/) ()

() () () (/) ()

() (/) ()

() () () ()

:()
() :

. :
:

:
: ()
: ()

()

فصل

في الاستئذان الذي أمر الله به المماليكَ وَمَنْ لَمْ يَبْلُغِ الْحُلُمَ

:
:

()

() :

(/) ()
() (/) ()

()

:

[:] ...

:

:

()

:

:

:

فصل

في هدييه في أنكار العطاس

) :

:

()

(

): ()

:

:

:

:

()

()

(

/)

()

(/)

()

:) : () :
 - : : ()
 . () () -

: ()

: - - :
 : . : .
 : .
 . () (/) ()
 . () () () (/) ()

. :
:
:
:
:

فصل

في غض الصوت في العطاس

:
() :
() :
() :
() :
() :
() :
() :
() :
() :
() :

() (/) () () ()
.() ()
.() ()

: :

:

():

: : :
: .

فصل

:

() :
() :

فصل

في هَدْيِهِ في أذكار السفر وآدابه
) :

:

(/) () () ()
.()

: (

()

:

:

()

)

()

:

()

()

()

(/)

(/)

()

()

.() :

) :

()

فصل

في ما يقوله إذا ركب راحلته

) :

) : .(

.()

) :

.(

) :

) :

(

.()

) :

(

) :

:(

)

.()

.()

()

(/)

()

()

()

.(

/)

()

()

فصل

في ما يقوله إذا وضع رجله في الركاب

() :

) : - () - - () :

) : - (

) : - () : () - - (

()

) :

()

) : . : : : . () : . : . (

()

) : : (

()

) : :

()	()	()
()	()	()
()	()	()
(/)	()	()
()	()	()

() :
 :) :
()

فصل

في هَدْيِهِ فيما يقول مَنْ رأى ما يُعجبه مِنْ أهله وماله
) :

:
([:]) :

فصل

فيما يقول مَنْ رأى مُبْتَلَى
) :

()

فصل

فيما يقوله مَنْ لحقته الطَّيْرَةُ
) :

:
()

(/) () () () ()
() (/) ()
() () ()() ()() ()
()
() () ()
() ()
() ()
()

) :

.(

فصل

فيما يقوله مَنْ رأى في منامه ما يكرهه

) :

.()

.()

:

) :

.()

:

.(

) :

. () :

:

:

فصل

فيما يقوله ويفعله مَنْ ابْتُلِيَ بِالْوَسْوَسَاتِ، وَمَا يَسْتَعِينُ بِهِ عَلَى الْوَسْوَسَةِ

()

() ()

(/)

()

.()

.()

()

.()

()

()

()

) :

.() (

:

:

) :

.() (

-

-

) :

.() (

:

:

. [:]

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:

[:]

:

:

:

.() [:]

.()

()

()

()

.()

()

.()

(/)

()

.()

()



∴) :
()
∴ [:] .

∴

∴ .

فصل

في ما يقوله ويفعله مَنْ اشدت غضبه

∴ () () (/) ()
∴ ()

:

[: ...] .

:

فصل

في ما يقوله إذا رأى ما يحب

.(

) :

(^()

) :

فصل

في أنه كان يدعو لمن تقرب إليه بما يحب وبما يناسب

- -

(^()

) :

) :

(^()

) :

:

(^()

) :

.()

()

()

.(/

/)

(/)

()

.()

()

.()

()

()

:

()

()

) :

()

فصل

في ما يقوله من سمع نهيق الحمار أو صياح الدّيكَة

()

()

) :

()

) :

()

()

) :

) :

:

(/)	()	(/)	()
() ()	(/)	(/)	()
()	()	(/)	()
(/)	()	(/)	()
	()	(/)	()
		()	()
(/)	(/)	()	()
(/)	(/)	()	()

() :
...
:

فصل

في التحذير من طغيان (أنا)، و(لى)، و(عندى)

() () ()
:] [:] :
[:] [:]
: () . [:]
: ()
) : () .
()

() () ()
() (/) ()

.[:]

:

.

:

: [:]

: [:]

. [:]

[:]

:

.(
):

.(
:

:

:

:

:

):

.(
:

):

[:]

:

() () :

)

() ()

فصل

مراتب الجهاد

:

:

:

:

:

:

(/)

()

/

()

:

:

(

) :

فصل

:

:

[:]

فصل

:

فصل

: :

)
()

فصل

:

[:]

:

()

()

) :

.(

فصل

في مَنْ كَمَّلَ مَرَاتِبَ الْجِهَادِ كُلِّهَا

*

:

[- :]

*

*

:

[:]

:

: . [:]

: . [:]

*

. [- :]

:

. [:]

*

*

:

*

*

*

*

*

*

*

. [- :]

:

:

:

:

:

.

.

:

.

$$\begin{array}{cccc}
 \cdot & & & \\
 \cdot & & : & : \\
 & & * & * \\
 [- :] & & * & \\
 \cdot [:] & & &
 \end{array}$$

.) () :

.() ()

:

:

فصل

[]

()

:

:

) : . () :

: : ()

() (

()

فصل

:

()

:

:

()

: () :

) : : () :

: (

) : : () :

) : : (

: () (/) ()

.() (/) ()

.(/) ()

.(/) ()

() : . () .

فصل

في هجرة المسلمين إلى الحبشة حين اشتد الأذى عليهم

: . : .

.

:

.

:

()

$() () :$

$:\quad \cdot \quad :$
 $:\quad () [:]$

$\cdot \quad :$

$:\quad \cdot$

$\cdot \quad :$
 $:\quad \cdot$

$() \quad (/) \quad ()$
 $(/) \quad ()$

()

()

:

:

:
:()

:

:

(/) ()
 (/) ()

()

:

فصل

:

:

:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

()

فصل

:

:

(/)

_____ ()
(/) (/)

:

: ()

:

: ()

:

فصل

/ (/) ()
/ (/) / ()

:

):

.()()

):
.()()

:

*

*

*

(/) ()

.
: (/) ()

() [- :]
:

):
(

:

:

:

:

()

فصل

()

:

()

(/)

()

()

()

()

()

:

()

.

:

:

:

:

:

(

()

):

:

(/)

()

(/) ()

() ()

:

*

*

[:]
[- :]

:

()

:

فصل

()

()

فصل

):

(

:

:

١٤٤٢

(/)

(/)

()

(/)

()

()

()

) :

(

:

:

:

:

.

()

.

()

()

· :

:

()

فصل

:

()

:

) :

) :

) :

.(/)	()
.(/)	()

:

:
) :

:

.

:

(

:

.()
(

()

()

		(/)	(/)	(/)
	.(/)	(/)	(/)	(/)
.(/)	.(/)	(/)	(/)	(/)
.(/)	.(/)	(/)	(/)	(/)

:

:

()

فصل

(/)

()

:

: :

:

:

()

() :
:

: ()
: ()
: ()

:
[:]

: :
:
:

:

(/) ()
(/) ()

.() :

.()

()

: ()
) :

()(

().

:

()
) : ()

:

(/) ()

(/)

()

.(/) ()

(/) ()

.(/) ()

۱۳۸۳

.(/) (/) ()

فصل

ثُمَّ مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ فِي مَسِيرِهِ ذَلِكَ حَتَّى مَرَّ بِخِيَمَتِي أُمَّ مَعْبَدِ الْخُرَاعِيَّةِ، وَكَانَتْ امْرَأَةً بَرَزَةً جَلْدَةً تَحْتَبِي بِفَنَاءِ الْخِيَمَةِ، ثُمَّ نُطِعِمُ وَنُسْقَى مَنْ مَرَّ بِهَا، فَسَأَلَاهَا: هَلْ عِنْدَهَا شَيْءٌ؟ فَقَالَتْ: وَاللَّهِ لَوْ كَانَ عِنْدَنَا شَيْءٌ مَا أُعَوَزَكُم الْقَرَى، وَالنَّشَاءُ عَازِبٌ، وَكَانَتْ سَنَةَ شَهْبَاءَ، فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ إِلَى شَاةٍ فِي كَيْسِرِ الْخِيَمَةِ، فَقَالَ: (مَا هَذِهِ الشَّاةُ يَا أُمَّ مَعْبَدَ؟) قَالَتْ: شَاةٌ خَلْفَهَا الْجَهْدُ عَنِ الْغَنَمِ، فَقَالَ: (هَلْ بِهَا مِنْ لَبَنٍ؟) قَالَتْ: هِيَ أَجْهَدُ مِنْ ذَلِكَ، فَقَالَ: (أَتَأْذَنِينَ لِي أَنْ أَحْلِبَهَا؟) قَالَتْ: نَعَمْ، بِأَبِي وَأُمِّي، إِنْ رَأَيْتَ بِهَا حَلْبًا فَاحْلُبْهَا، فَمَسَحَ رَسُولُ اللَّهِ بِيَدِهِ ضَرْعَهَا، وَسَمَّى اللَّهَ وَدَعَا، فَتَفَاجَّتْ عَلَيْهِ، وَدَرَّتْ، فَدَعَا بِإِنَاءٍ لَهَا يُرْبِضُ الرَّهْطَ، فَحَلَبَ فِيهِ حَتَّى عَلَتْهُ الرَّغْوَةُ، فَسَقَاهَا فَشَرِبَتْ حَتَّى رَوَيْتَ، وَسَقَى أَصْحَابَهُ حَتَّى رَوَوْا، ثُمَّ شَرِبَ، وَحَلَبَ فِيهِ ثَانِيًا، حَتَّى مَلَأَ الْإِنَاءَ، ثُمَّ غَادَرَهُ عِنْدَهَا، فَارْتَحَلُوا، فَقَلَّمَا لَبِثْتُ أَنْ جَاءَ زَوْجُهَا أَبُو مَعْبَدٍ يَسُوقُ أَعْزَأَ عَجَافًا، يَتَسَاوَكُنْ هُرَالًا لَا نَقَى بَهَنَ، فَلَمَّا رَأَى اللَّبَنَ، عَجِبَ، فَقَالَ: مِنْ أَيْنَ لَكَ هَذَا، وَالنَّشَاءُ عَازِبٌ؟ وَلَا حَلْوَبَةٌ فِي الْبَيْتِ؟ فَقَالَتْ: لَا وَاللَّهِ إِلَّا أَنَّهُ مَرَّ بِنَا رَجُلٌ مَبَارِكٌ كَانَ مِنْ حَدِيثِهِ كَيْتٌ وَكَيْتٌ، وَمِنْ حَالِهِ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: وَاللَّهِ إِنِّي لِأَرَاهُ صَاحِبَ قَرِيشٍ الَّذِي تَطْلُبُهُ، صِفِيهِ لِي يَا أُمَّ مَعْبَدَ، قَالَتْ: (ظَاهِرُ الْوَضَاءَةِ، أَبْلَجُ الْوَجْهِ، حَسَنُ الْخَلْقِ، لَمْ تَعْبَهُ تُجَلَّةٌ، وَلَمْ تُزَّرْ بِهِ صُعْلَةٌ، وَسِيمٌ قَسِيمٌ، فِي عَيْنَيْهِ دَعَجٌ، وَفِي أَشْفَارِهِ وَطْفٌ، وَفِي صَوْتِهِ صَحْلٌ، وَفِي عُنُقِهِ سَطْعٌ، أَحُورٌ، أَكْحَلٌ، أَزْجٌ، أَقْرَنٌ، شَدِيدٌ سَوَادِ الشَّعْرِ، إِذَا صَمَتَ عَلَاهُ الْوَقَارُ، وَإِنْ تَكَلَّمَ عَلَاهُ الْبِهَاءُ، أَجْمَلُ النَّاسِ وَأَبْهَاهُمْ مِنْ بَعِيدٍ، وَأَحْسَنُهُ وَأَحْلَاهُ مِنْ قَرِيبٍ، حَلْوُ الْمَنْطِقِ، فَصْلٌ، لَا نَزْرٌ وَلَا هَدْرٌ، كَأَنَّ مَنْطِقَهُ خِرَزَاتٌ نَظْمٌ يَتَحَدَّرْنَ، رُبْعَةٌ، لَا تَقْحَمُهُ عَيْنٌ مِنْ قَصْرِ، وَلَا تَشْنُوهُ مِنْ طَوْلٍ، غَصْنٌ بَيْنَ غُصْنَيْنِ، فَهُوَ أَنْضَرُ الثَّلَاثَةِ مَنْظَرًا، وَأَحْسَنُهُمْ قَدْرًا، لَهُ رُفْقَاءٌ يَحْفُونُ بِهِ، إِذَا قَالَ اسْتَمْعُوا لِقَوْلِهِ، وَإِذَا أَمَرَ تَبَادَرُوا إِلَى أَمْرِهِ، مُحْفُودٌ مُحْشُودٌ، لَا عَابِسٌ وَلَا مُفْنِدٌ)، فَقَالَ أَبُو مَعْبَدَ: (وَاللَّهِ هَذَا صَاحِبُ قَرِيشٍ الَّذِي ذَكَرُوا مِنْ أَمْرِهِ مَا

ذكروا، لقد هممتُ أن أصحبه، ولأفعلنَّ إن وجدتُ إلى ذلك سبيلاً)، وأصبح
صوت بمكة عالياً يسمعونه ولا يرون القائل:

()

:

:

فصل

:

:]

: .

[

.(/)

()

()

:

() : ()

() : ()

:

()

:

) :

((/)	()	(/)	()
((/)	()	(/)	()
((/)	()	(/)	()
			(/)	()
			(/)	()

$\cdot^{(1)}([:]$
 $) :$

$\cdot^{(1)}($
 $:$ $\cdot^{(1)}($ $() :$
 $()$
 $\cdot^{(1)}($ $:$ $)$
 $) :$

$:$

$\cdot^{(1)}($
 $) :$

$\cdot^{(1)}($

\cdot

\cdot $()$ $()$
 $(/)$ $()$
 $()$
 $(/)$ $(/)$ $()$
 $(/)$ $(/)$ $()$

() .

فصل
في بناء المسجد

) :

:

:

:

()

:

:

:

(

) :

:

(/) ()
(/) ()

()

فصل

:

[:]

()

:

()

() :

:

:

) :

:

()

(

)

)

(/)

()

:

(/)

()

⋮

(

:

⋮

(/)

()

:

:

()

()

:

:

:

:

:

:

()

فصل

()

)

() ()

فصل

()

()

[:]

()

) :

.([:]^()

.(/)

()

(/)

()

.(/)

()

.()

(/)

(/)

()

]

:

:

[:

:

:

:

:

[:]

:

:

فصل

()

= :

(/) ()

: [:]
[:]
()
() :
) :
:
:
()
[:]
()

فصل

:
.[:]

:

.[:]

:

*

*

.(/) ()

.[- :]

:

: [:]

.[:]

:]

[

.

:

.[:]

:

[:]

:

:

[:]

:

:

]

[:

)

()(

:

)

()(

() ()	()	()
	(/)	()

:

)

.^()(

):

(/)

()

$\cdot^{(1)}($
 $\cdot^{(1)}($) :
):

$\cdot^{(1)}($
 $\cdot^{(1)}($) :
 $\cdot^{(1)}($) :

$\cdot^{(1)}($
 $\cdot^{(1)}($) :
):

$\cdot^{(1)}($
):
:
(
):

(
 \cdot (/) ()
 \cdot (/) ()
/) ()
 \cdot (/) ()
(/) ()
 \cdot () ()
 \cdot (/) ()

.^()() : () :

: (

.^()() :
) :

.^()() :

:] : ()
.^()[) :

.^()() :
) :

) : () : (

.	()	()	
.	(/)	()	
.	(/)	()	
.	()	()	
.	(/)	(/)	()
.	/	()	

$() () : ()$
 $) :$
 $() ()$
 $) :$

$:$
 $() ()$
 $) :$
 $() ()$
 $) :$
 $() ()$
 $) :$
 $() ()$
 $) :$
 $() ()$
 $) :$

.	(/)	()
.	(/)	()
.	(/)	()
.	()	()
.	(/)	()
.	(/)	()
.	(/)	()
.	()	()
.	()	()

$\cdot^{()}(\quad)$:
 $\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$) :

$\cdot^{()}(\quad)$:
 $\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$:

$\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$) :
 $\cdot^{()}(\quad)$

\cdot (/) ()
 \cdot () ()
 \cdot () (/) ()
 \cdot () () ()
 \cdot () / ()
 \cdot () () ()
 \cdot (/) : ()
 \cdot (/) () ()
 \cdot () (/) ()

.^()(

فصل

()

فصل

) :

.^()(

) :

.^()(

) :

.(

.^()(

) :

:

.^()(

)

) :

:

:

.()

()

.()

()

()

(/)

()

()

.

()

()

.

(/)

()

(/)

()

:

$\cdot^{(1)}() :$

) :

$\cdot^{(1)}($

) : () :

: () :

$\cdot [:]^{(1)}$

) :

:

()

:

:

$\cdot [:]$

) : ()

()

()

()

(/)

()

()

()

()

()

()

((/)

()

()

()
.() :

: ()

.() :

()

()

()

()

()

.()	()	()
.	()	()
.()	(/)	()
.()	()	()
.() ()	(/)	()
.(/)	()	()
.()	(/)	()
.	(/)	()
.()	(/)	()

) :

() (

()

()

) :

() (

()

()

()

:

		(/)	()	()
()	(/)	(/)	(/)	()

()	(/)	()	()	()
-----	-------	-----	-----	-----

	()	()
--	-----	-----

()	:	()
-----	---	-----

(/)	()
-------	-----

:

:

()

()

() (

) :

()

()

() (

) :

:

)

() (

()

()

()

()

()

()

⊗

(/)

()

()

()

()

()

()

((

()

()

()

) :

()

(

: () :

:

: (

):

() (

)

:

: .

) :

() (

:

:

.

):

() (

()

()

()

(/)

()

()

()

()

()

()

(/)

()

()

(/)

()

()

(/)

()

فصل

() :
() :

فصل

() :
() :
() :

:

:

() :

() :

فصل

() :

()	()	()	(/	/)	()
				(/)	()
/)	()	(/	/	/)	()
				()	/
				()	()
				()	()
		()	(/)		()

()
):

):
()

()

فصل

):

()

): :

()
()

):

):

):

:
:

:
:

:

:

() () (/ /) ()

() () ()

(/) () ()

(/) () ()

(/) (/) (/) ()

(/) () ()

()

فصل

في هَدْيِهِ فِي الْأَسَارَى

) :

()

()

)

()

) :

(

) :

) :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

()

:

(/)	()	(/ /)	()
		()	()
		(/)	()

:
.[[:]^()

()

.

:

() () :

.
) :

(). (

()

. () ()
(/) ()
(/)
(/) (/) ()
(/) ()
() ()

()

()

) :

() (

) :

() (

) :

() (

()

:

[:]

) :

(/)

()

(/)

()

(/)

()

: (/)

()

(/)

()

()

(/)

()

() ()

فصل

) :

() ()

فصل

في هديه فيمن جسَّ عليه

()

) :

() ()

:

:

()

..

فصل

:

()

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

: ()

()

() .()

) :

(

()

() .

فصل

في هديه في الأرض المغنومة

:

() .()

(/)

()

(/)

()

:

: .

:

() (

) :

:

:

.

.

.

: .

:

[- :]

:

[:]

:

_____ . (/) ()

):() ()

): .(

): .(

:
:
:(

فصل

:

:

:

.()

()

()

() ()

(/)

()

()

() :

) :
()

فصل

() :
() :
() :
() :

()

فصل

في هديه في الأمان والصلح، ومعاملة رسل الكفار، وأخذ الجزية،
ومعاملة أهل الكتاب، والمنافقين، وإجارة مَنْ جاءه من الكفار حتى يسمعَ
كلامَ الله، وردّه إلى مأمّنه، ووفائه بالعهد، وبراءته من الغدر.

(/)	(/)	()
(/)	()	()
()		()
	()	()
(/)	()	(/)
(/)	()	()

) :

() :

() :

) :

() :

() :

) :

() :

:

) :

() :

() :

) :

فصل

:

:

.

:

.

()

(/)

()

()

()

()

()

()

(/)

()

(/)

(/)

()

()

/

:

:

:

.

:

()

فصل

:

(/)



()

().

:

:

:

. :

:

:

:

:

[:]

:

()

.() (/) ()
 .() (/) ()

() .

:

(()) :

فصل

:

:

() :

:

()

(/)

(/)

()

()

() :

()

⋮

()

⋮

.

⋮

()

⋮

(/)	()
(/)	()
(/)	()

() :

()

فصل

_____ :
(/) ()

فصل

فصل

في كيف كان يعامل رسل أعدائه إذا وفدوا عليه

) :

:

) :

:

(

$() ($
 $:$
 $) :$
 $() ($
 $:$
 $() :$
 $:$
 $) :$
 $() ($

فصل

()

.	()	()
(/)	()	()
.	()	()
(/)		()

()

ولما صالحهم على ردّ الرجال، كان يُمكنهم أن يأخذوا من أتى إليه منهم، ولا يُكرهُه على العود، ولا يأمره به، وكان إذا قتل منهم، أو أخذ مالا، وقد فصل عن يده، ولما يلحق بهم، لم يُكره عليه ذلك، ولم يضمنه لهم، لأنه ليس تحت قهره، ولا في قبضته، ولا أمره بذلك، ولم يقتض عقد الصلح الأمان على النفوس والأموال إلا عمن هو تحت قهره، وفي قبضته، كما ضمّن لبني جُدَيْمَةَ ما أتلّفه عليهم خالدٌ من نفوسهم وأموالهم، وأنكره، وتبرأ منه.^(٢) ولما

()

(/)

()

كان إصابته لهم عن نوع شبيهة، إذ لم يقولوا: أسلمنا، وإنما قالوا: صبياناً، فلم يكن إسلاماً صريحاً، ضمنهم بنصف دياتهم لأجل التأويل والشبهة، وأجراهم في ذلك مجرى أهل الكتاب الذين قد عصموا نفوسهم وأموالهم بعقد الذمة⁽¹⁾ ولم يدخلوا في الإسلام، ولم يقتض عهد الصلح أن ينصرهم على من حاربهم ممن ليس في قبضة النبي وتحت قهره، فكان في هذا دليل على أن المعاهدتين إذا غزاهم قوم ليسوا تحت قهر الإمام وفي يده، وإن كانوا من المسلمين أنه لا يجب على الإمام ردُّهم عنهم، ولا منعهم من ذلك، ولا ضمان ما أتلّفوه عليهم.

فصل

) :
:
()
()
) :

:

() (/) ()

()

.

.

:

:

:

.

() ()

.():

:
:
() :

.(/) (/) ()

:

()

()

:

:

=

:

()

فصل

()

()

.(/)

(/)

()

:

:

:

:

:

:

:

فصل

في الأصناف التي تؤخذ منهم الجزية

:

:

:

:

∴ .
∴

∴

()

∴ ()

)

∴

()

) :

∴ ()

∴ (/) () ()
∴ (/) (/) () ()
∴ (/) (/) () ()
∴ (/) (/) () ()

∴

() : () :

فصل

()
()

()

)
()

() (/) ()

(/) ()

() ()

(/) ()

:

:

() : [:]

()

:

:

()

^()(

):

:

.

() :

.

:

*

:

()

:

:

.

: [:] :

: ()
:
:

فصل

فصل

:
()

فصل

()

فصل

:

(/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/)

() .

فصل

() .

فصل

() :

() .

فصل

(/) (/) (/) : ()
(/) (/) (/) ()
(/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/)

:

: . :

() .

.
:
:
: () :

() () :

فصل

) :

: (

(/)	(/)	(/)	()
	(/)	(/)	()
		(/)	()

$[:]$:
 : () :
 $[:]$:
 : :
 $[:]$
 :
 .
 :
 : $[:]$
 $[:]$

) :
 ()
 .
 :
 : $[:]$
 : $[:]^{()}$:
 .
 :

. (/) ()
 . () ()

:

فصل

فصل

في غزوة بدر الكبرى

:

()

()

(/ /)

()

:

()

: (:)

.(
):
.()

:
:

:
: .():

()

:
:

: () : . : ()

(/) ()
(/) ()

: () :
() :

.

()

) :
(

(

) :

) :

() (

:

[:]

[:]

:

()

(/) ()

⊗

:

() ()

⊗

:

.

*

[- :]

[:]

:

[:]

()

()

()

()

[:]

:

:

:

:

فصل

في بدء القتال بالمبارزة

:

.

: :
: . :
:

() () ()
: :
[:] ()

() :

() () :

فصل

في ظهور إبليس في صورة سُرّاقة ووسوسته للعدو

:
: () (/) ()
: ()
(/) ()
(/) ()
()
(/) ()

: : :
 . : : : ()
 . : : :
 [:] :

) : . : .() :
 . : : (: () :
 : : () :
 . ()

()

.(/)	(/)	(/)	()
(/)	()	(/)	()
.(/)			()

.[:]

.
):

:

:

):

.()
) :

) :

.()
:

:

):

:

()

.()

):

:

()

:

:

:	()	()
/)		()
	(/)	()

.(/)

()

:

:

. [:]

: () :

()

):

(

:

:

:

):

(

:

):

:

(

() :

):

.(/)

()

:

.(/)

()

(/)

()

()

:

:

:

:

:

:

()

:

() :

()

:

()

) :

() (

()

(/)

()

:

(/)

(/)

()

()

(/)

()

=

$\frac{1}{2}$

(/)

· / ..

·

) :

() (

:

)

:

(

) :

() (

() :

.

.

.

=

(/)

(/)

()

(/)

()

(/)

()

) :

()

()

:

فصل

في غزوة بنى سليم

:

:

()

فصل

()

()

() ()
() ()
() ()
() ()
() ()
() ()
() ()

() .

فصل

() .

فصل

في غزوة بنى قَيْنُقَاع

() .

فصل

في قتل كعب بن الأشرف
()

() :

(/) (/) (/) ()
() (/) (/) (/) (/) ()
(/) (/) (/) (/) (/) ()
(/) (/) (/) (/) (/) ()
:

()

()

فصل
في غزوة أُحُد

()

:

:

()

()

(/)

()

:

()

:) :
.() (

()

:
:
: .

() :

.() :

(/) ()
.() ()

() .

: .

:

:

() . () :

.

()

:

:

. () (/ /) .

/ ()
()

() :

.

:

()

()

:

.

(/)

() ()

()

(/)

()

()

(/

/

/)

()

()

:

:

:

:

()

.

:

:

:

:

) :

:

() :

(

()

(/)

()

(/)

()

(/)

(/)

()

()

:

: . :

:

:

:

:

():

():

():

():

():

:

():

:

:

(/) (/) ()
 (/) ()

()

:

()

:

:

:

:

:

()

:

):

:

(

:

:

:

:

:

: () :

()

:()

:

:

() :

:

(/)

()

()

: ())

() () : () : [:]

: . : :

() :

: :

() (/) () (/) () (/) () (/) ()

.(

:

:

()),

:

:

):

(

):

() (

:

:

:

()),

:

(/)

()

:

(/)

()

..

(/)

()

..

(:) :

() .

) :

:

: () . (

:

:

:

:

.

:

) :

: ()

() . (

:

:

[:]

.

()

(/)

()

()

()

. ..

فصل

فيما اشتملت عليه هذه الغزوة من الأحكام والفقه

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

) :

()

()

:

(/)

()

()

()

()

:

()

:

()

()

()

()

:

	:	()
(/)	:	()
(/)	:	()
(/)	:	()
	:	()

:

:

:

فصل

في ذكر بعض الحكم والغايات المحمودة التي كانت في وقعة أُحُد

()

:]

:

[

:

:

:]

.[

:

.

:

.

:

:

[:]

[:]

:

.

:

.

:

.

:

.

:

.
 :
 *
 *
 [- :]
 :
 [:]
 :
 [:]

[:] :

.

:

.

:

[:]

.

:

[:]

:

]

.

:

[:]

:

: :

: [:]

. :

:

*

. [- :]

:

:

:

[:] : :

: ()

[:]

:]

[

: [:] :
 [:] :
] : [:
 : :
 [:] :

فصل

.

:

[:]

.

:

:

:

: [:]

: [:]

:

:

:

- :]

* .[

:

.[:]

[:] :

:

*

[- :]

فصل

في انقضاء الحرب ورجوع المشركين

):

.(

:

(:) :

() :

:

):

() :

:

(

:

:

() (

:

:

.

: .

:

:

:

:

:

:

:

*

()

()

/)

/)

()

(/)

(/)



فصل

(:) :

:

: (()) :

:

:

_____ : ()

:

.

:

:()

()

()

.

()

(/ /)

|||

()

()

فصل
في وقعة بئر معونة

) : . :

. : () : (.

. () :

()

. (/) _____ ()
: : ()

.⁽¹⁾():

:

:

.

:

().

().

:

:

:

/)

(

/)

(

/)

()

.(/)

(/)

(

.(/)

()

() ()

(

/

/

/)

()

.

.

()

.

:

:

()

:

()

..

.

.

:

..

(/) ()

(/)

:

.

.

()

.

(/)

: . : ()
:()

فصل

: :

: ()

فصل

في غزوة دومة الجندل

(/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/)

()

فصل

في غزوة المُرَيْسِيعِ^(١)

:

: :

()

(/)

.(/)

() ()

:()
()

(.....

()

:

:

()

()

):

:

.(

.

()

(/)

()

()

(/)

(/)

()

.(/)

()

)

:

:() (

:

. [:]

[:]

:

:

:

[:]

:

:

) :

(

:

:

:

:

:

:

فصل

في حصة عائشة رضي الله عنها ووزانتها

:

() :

() :

فصل

في طلبه مَنْ يعذره فيمن تولى الإفك

) :

:

(

: ()
 : () () :
 : .
 () : : () :
 () :
 :
 :
 :
 ()
 () : : () :
 : : ()

فصل

:
 :
 :

(/)	()
(/)	()

:
() :
() :

: :

()

فصل

في مرجعه من غزوة المريسيع

:

:

:

:

) :

:

() :

فصل

في غزوة الخندق

() : (/) ()
() (/) (/) ()

()

(/) ()

:
()

()

()

فصل

في سبب هذه الغزوة

: ()

: (/) ()

()

.

.

:

.

.

:

.

.

:

.

.

.

:

:

(

)

. : [:]

:

)

.^()(

:

):

.(

:

:

):

(

:

.() () (/ /) ()

() .

فصل
في قتل أبي رافع

() : () :
()⁽¹⁾

فصل
في خروجه إلى بني لحيان

()

(/) (/) ()
.(/) (/) (/)
(/) (/) ()
: ()

()

فصل
في سرية نجد

) :

: (

() :

:

: :

()

فصل
في غزوة الغابة

()

/) (/) (/) (/) (/)
(/) (/) (/) (/) (/)
:
(/) (/)
(/) (/)

:

:

():

:

()

:

:

() : () :

:

:() : () :

()

فصل

_____ ()

: :

: : ()

(/) ()

() .

:

() .

()

:

:

()

:

:

) :

.(/)	(/)	()
.(/)	(/)	()
		()
.(/)		()

: (

:

:

:

.

.

.

:

):

:

(

()

:

()

) :

(

:

:

... .

..

فصل

في قصة صلح الحديبية^(٢)

:

:

(/)

()

:

()

صلى الله عليه وسلم

(/)

(/)

(/)

(/)

(/)

(/)

(/)

(/)

:

فصل

في تقليده الهدي بندي الخليفة

()

:

:

)

(

:

() :

()

) :

(

()

:

:

) :

:

()

:

:

:

()

()

) : (

(

:

()

:

:

(

)

:

:

:

) :

:

) :

:

(

(

.(/) ()

.(/) ()

.() () :

:

:

:

()

()

()

:

):

.(

:

:

:

.

:

:

.

.(/)	()
.()	()
.()	()
()	()

.():

():

():

. :
:
() :
:
:
:
:
:
[:]
:
*
: [- :] *
: () :
[:] ... :
:
:
:
() :
:
:
()

- :] : :

() () : () : [()

() () : () () :

: () : : () :

()

()	(/)	()
()	(/)	()
()	(/)	()
()	(/)	()

) :

) : .

: (

() . (

:

:

فصل

:

) :

(.

:

(/)

()

[:]
.[:]

:

:

:

:

:

(

)

:

:

.() () () :

:

:

:

) :
 :
 (: [:]
 [:]
 :
 :
 :

) :
 (:
 () :
 :
 :
 :

:

.

() :

.

() :

:

.

:

.

.

:

.

:

.

:

فصل

في الإشارة إلى بعض الحكم التي تضمَّنتها هذه الهدنة

.

:

· :
·

: .() :
· :
· :

. [:] :

· :
·

.

:

:

[:]

فصل

في غزوة خيبر

:

.

:

:

:

:

:

: ()

.
:
:

:

:[:]

. .. ()
:

:]

:

:

[:]

:

[

()

):

:

:

.(/)

()

()

(/)

()

() : . : () :
: . :

() :
. : () : . :
: () :
: () :

:

() :
() :

فصل

في بدء القتال والمبارزة

:

:

) : () :

() :

(/) ()

(/) ()

$(\)$
 $(\)$

:

$)$:

$(\)$
 $(\)$

$)$:

:

$(\)$

:

:

$(\)$

:

.

:

.

$(\)$

:

$(\)$	$(\ /)$	$(\)$
$(\)$	$(\ /)$	$(\)$
	$(\)$	$(\)$

()

:

:

() :

:

:

() :

:

: :

:

:

:

:

:

:

[]

() :

:

:

(/)

()

() : . : () :) :
) :
. (:
: () :

: : :

:

() :

. () :) :

) :
) :

:(

(

(

):

:

(

):

:

:

:

:

:

()

()

:

:

:

()

() :

فصل

في كيف قسم رسول الله خير

:

:

:

() () ()
() () ()

.

:

()

:

:

:

:

:

:

:

):

.(

:

فصل

:

:

.

:

.

..

:

) : . : () : (: .

:

:

.

.() : .() : : .() : : .() :

:

:

:

:

:

:

.

فصل

فيما كان في غزوة خَيْبَر من الأحكام الفقهية

:

: :

:

()

()

(

) :

(/)

()

()

()

:

[:]

:

:

[:]

:]

:

[

فصل

:

:

()

:

-

-

فصل

()

()

(/)

()

:

:

()

():

:

[:]

فصل

()

()

):

.(

: ()

)

:
(

:

(/) ()

:

:

:

: .

()

()

:

(

):

:

:

فصل

في جواز المساقاة والمزارعة بجزء مما يخرج من الأرض، وكيف عامل
الرسول أهل خَيْبَرَ

:

فصل

في أن من هَدِيه عدم اشتراط كون البذر من رب الأرض

:

فصل

في خَرَص الثمار، وأحكام أخرى

:

:

:

:

:

:

) :

:

(

) :
() :

:

:

:

:

:

() :

:

:

:

) :

(

) :

(

()

()

· :
·

() :
·

· .. :
· :
· :

[:] :

• ..

:

• ..

:

()

:

:

.

:

• /

/)

()

: . :
 : :
 : :
 : :

:

. .
 :
) :
 . ()
 :
 ()
) :
 . ()
 :

 . () ()
 . () ()

) :

:

:

:

()

:

:

) :

()

:

(/)	()
()	()

.

:

()

) :

:

() (

فصل

في انصرافه من خَيْرٍ إِلَى وادى الفُرَى

:

:

)

(

() (

) :

()	()
()	()
(/)	()

()

] () :

[

:

.

: ()

() :

):

(

(/)

(/)

(/)

()



) :
(

()

()

()

()

:

:

:

:

()

...

:

() :

:

:

:

:

:

.

..

فصل

في فقه هذه القصة

:

:

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

()

(/)

()

() :

() :

فصل

في رد المهاجرين إلى الأنصار منائهم

()

فصل

(/) ()

()

:

:

:

:

:

:

:

() ()

:
:
:
:
() :
() : () :
() :
() :
() :
() :

فصل

في بعثه إلى بنى الملوّح بالكديد

: . : :

:

:

(.)

. ..

:

فصل

):

:

: (

:

_____ (/) ()

: . :

:

:

فصل

:

:

() :

() :

:

:

: .

:

:

:

.

:

() :

فصل

في بعثه سرية إلى إضم

:

) :

[:]

.(

) :

:

(

() :

.

فصل

في سرية عبد الله بن حذافة السهمي

()

()

) :

.(

فصل
في عُمرَة القُضِيَّةِ

:

() :
: ()

:

()

:

: :

):

: (

(/) ()

⊗

() (/ /)
(/) ()

فصل

في زواجه بميمونة رضى الله عنها

) :

(

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()
() : :

فصل

في حضانة ابنة حمزة بن عبد المطلب وما فيها من الفقه

:
:
:
:
:
() : () :
() : () :

:
:
:
:



:

:

فصل

في الاختلاف في سبب تسمية هذه العُمرَة بعُمرَة القضاء

:

:

:

:

:

[:]

فصل

في أن المُحصَرَّ ينحر هَدْيِهِ وقت حصره

[:]

:

فصل

في أن المُحْصِرَ بِالْعُمْرَةِ يَتَحَلَّلُ

:

فصل

في أن المُحْصِرَ يَنْحَرُ هَدْيِهِ حَيْثُ أُحْصِرَ

:

:

:

:

فصل
في غزوة مؤتة

) :
()

: :

[:]

:

:
:

:

:

:

(/)

()

.

:

:

:

:

:

:

)

(.)

(

:

)

:

:

(.) (

(/) ()
(/) ()

()

فصل

.

فصل

في غزوة ذات السلاسل

.

.

() / () .

:

:

: ():

:

:

:

فصل

):

:

[:]

:

.(

:

():

.

:

:

:

() .

:

فصل

في سرية الخَبَط

()

:

() :

:

() :

(

:

:

فصل
في فقه هذه القصة

[:]

:

:

:

[:]

:

:

:

:

:

[:]

[:]

:

()

:

):

(/)

()

() () :

() :

) :

(:

) :

(

() (/) (/) ()

فصل

في جواز الاجتهاد في الوقائع في حياة النبي

فصل

في الفتح الأعظم

:

:

:

:

:

) :

:

.

:

(

()

:

:

:

:

. [:]

:

()

(/)

()

:

:

: :
:

:
:

):

(:):

:

):

: (

:

:

):

.(

:
:

: : :
: :
:

: :

:

()

:

[:]
()

[:]

) :

() (

) :

:]

: (

(/)

()

()

(/)

()

/)

()

:
() :

فصل

في دخول النبي دار أم هانئ، وصلاته في بيتها بعد الفتح

()

) :

()

فصل

في النَّقَر الذين أمر رسول الله بقتلهم ولم يؤمنهم

(/) ()

()

(/) ()

) :

() (

:

:

() :

) :

() (

) :

() :

(

()

:

:

:

(/)

()

()

()

:

:

:

:

:

.

.

.

):

.(

):

:

(

):

(

):

(

.

:

:

:

فصل

في قصيدة حسّان بن ثابت في عُمرَة الحديبية

:

()

()

()

()

()

()

()

()

()

:

()

:

()

:

()

:

()

:

()

فصل

في الإشارة إلى ما في الغزوة من الفقه واللطائف

[:] :

. () :

:

[:]

فصل

في أن أهل العهد إذا حاربوا مَنْ هم في ذِمَّة الإمام وجواره وعهده يصيرون حرباً له بذلك

:

فصل

في انتقاض عهد جميعهم بذلك

:

:

فصل

في جواز صلح أهل الحرب على وضع القتال عشر سنين

:

:

فصل

في الإمام إذا سُئِلَ ما لا يجوز بذله، فسكت عن بذله

:

فصل

في أن رسول الكفار لا يُقتل

:

فصل

في جواز تبييت الكفار وأخذهم على غرّة

:

فصل

في جواز قتل الجاسوس وإن كان مسلماً

:

) :

(

:
:

:

:

..

فصل

في جواز تجريد المرأة كلها وتكثيفها للحاجة والمصلحة العامة

:

:

فصل

في أن الرجل لا يكفر ولا يأنم إذا نسب المسلم إلى النفاق والكفر متأولاً

:

فصل

في تكفير الحسنات للكبائر

:

$() () :$
 $: () :$
 $() :$
 $() :$

$:$
 $:$
 $)$
 $. ($
 $) :$

$() :$ $($
 $() :$ $($

 $.()$ $()$ $()$

فصل

في جواز مباغنة المعاهدين إذا نقضوا العهد

فصل

في جواز استحباب كثرة المسلمين لرسول العدو

فصل

في جواز دخول مكة للقتال المباح بغير إحرام

:

:

:

:

:

() :

:

:

:

):

.(

:

):

(

:

:

:

(

)

:

(

)

:

(

)

:

:

.

(

)

:

.

):

:

):

(

.

(

) :

(

.

:

:

:

:

:

(

):

.

:

.

:

:
.[:]

[:]

():

:
[:]

:]

:

[

:

.():

:

):

()

) :

(

.(

:

.

:

:

.

:

:

:

:

:

:

:

.

:

:

.

]

:

[:]

:

[

:

[

:

]

:

(

) :

:

(

) :



..

فصل

في هل يُضرب الخَراجُ على مزارع مكة أم لا؟

:

:

:

..

..

()
.() :

() () :
) : ()
() ()

()
() : :

. (/) ()
. (/) ()
. () ()
.(/) ()

:

:

:

:

.

:

):
(

.

:

:

:

.

):

(

():

:
[:] :

:
[:]

[:]

: :

:] : :
[

:

.

():

():

()

.
:

:

:

:

:

:

:

:

:

):

:

.()C

:

[:].

:

:

.

:

.

:

.

:

.

:

:

.()

()

فصل

في تحريم قطع شجر مكة

) : () : :
() : () ()

()

()

(/) ()
() ()

:

():

():

:

():

:

:

:

:

()

:

(/)

()

() :

فصل

[]

() : () : () :

:

:

:

: : .

() : () : () : () :

:

فصل

[]

) :

(

() ()

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring transparency and accountability in financial reporting.

2. The second part of the document outlines the various methods and techniques used to collect and analyze data. It highlights the need for consistent and reliable data collection processes to ensure the validity of the results.

3. The third part of the document focuses on the analysis and interpretation of the collected data. It discusses the various statistical and analytical tools used to identify trends, patterns, and correlations in the data.

4. The fourth part of the document discusses the implications and conclusions drawn from the analysis. It highlights the key findings and their potential impact on the organization's operations and decision-making processes.

5. The fifth part of the document provides a summary of the overall findings and recommendations. It emphasizes the need for continuous monitoring and evaluation to ensure the effectiveness of the implemented measures.

6. The sixth part of the document discusses the challenges and limitations of the study. It highlights the need for further research and exploration to address the identified gaps and limitations.

7. The seventh part of the document provides a conclusion and final thoughts on the study. It emphasizes the importance of ongoing communication and collaboration between all stakeholders involved in the process.

8. The eighth part of the document discusses the future directions and potential areas for further research. It highlights the need for continued innovation and improvement in the field.

9. The ninth part of the document provides a list of references and sources used in the study. It includes books, articles, and other relevant materials that provide additional context and support for the findings.

10. The tenth part of the document provides a list of appendices and supplementary materials. It includes additional data, charts, and tables that provide further detail and support for the analysis.

) :

:

(

:

() :

:

..

فصل

[]

:

() :

:

.

:

:

:

(

) :

() :

.

) :

: :

(

:

(

:

) :

()

()

)

(/)

()

.

(/)

()

() :
() :

..

فصل

[]

: : :
() :
) :
()

فصل

[]

:

()	()
(/)	()
()	()

فصل

[]

:

فصل

[]

:

:

.

:

:

:

:

:

()

:

:

:
 :
 [:]
 : ()
 :

[:]⁽¹⁾
 :
 :

()
 :
 ()
 :
 ()
 :
 ()

() / ()
 ()
 () () ()

()

:

:

()

:

()

:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

:

..

فصل

[

]

:

.

() () ()

(/) ()

) :) : ((

: [- :]
: ()

فصل

[[]

.
:
:
:

:

:

:

:

: .

:

: .

:

: .

:

:

:

.

: .

: .

:

:

:

.

:

: .

:

:

.

:

:

..

:

.

) :

:

:

: (

.

.

:

:

: .

):

(

:

:

: .

) :
(

()

() : : () : (

(/)

(/) ()

:
:

:

:

: .

: .

: ()
: ()

:

:

)

: (

: ():

):

:

.(

:

:

()

: () :

:

) :

(

() :

:

()

:

فصل

[]

) :

(

:

) :

(

) :

:

(

:

:

:

:

:

:

)

()

(/)

()

() : . : (() .

فصل

في الإشارة إلى بعض ما تضمنته هذه الغزوة من المسائل الفقهية والنُّكُت
الحكمية

() :

(/) . ()

:

[:]

:

:

. :

:

:

: .

[:]

:

:

:

:

.

:

...

فصل

[]

:

:

:

[:]

:

()

:

:

:

:

:

:

..

فصل

[

]

):

:

(

:

.

() :

:

:

:

() :

:

:

()

:

:

() :

:

.

:

.

:

:

:

:

فصل

[]

:

:

فصل

[]

فصل

في جواز بيع الرقيق والحيوان ببعضه ببعض

) :

.(

()

()

:

(

) :

:

:

:

:

:

:

.

:

.

:

)

()

(

()

.

..

فصل

[()]

() :

:

:

) :

(:

() :

:

() :

() :

:

:

()

(/)

()

: ()
 :
 :
 : ():
 [:] :
 :
 : [:]
 : [:]
 :]
] : [:
 : ():
 :
 : : : : :
 .()
 :
 : : : : :
 ():
 : : : : :
 ():
 : : : : :

فصل

[]

() :

.() :

.

:

.

:

()

:

() :

:

.

:

:

.

:

فصل

[

]

() .

()

()

فصل

[]

:

:

:

()

:

()

:

:

()

:

: ()

.(/) ()

.(/) ()

· : ()

: () :
: ()
) : ()
() : ()
() : ()
() : ()

فصل

[]

() :

_____ ()
.(/)

:

:

:

):

.(

:

:

:

.

.

) :
(

.

:

()

.

: () :

: () :

() :

:

: () :

.

:) :

.(

: :

:()

: () :
) :

.(

·
:

فصل

[]

:

:

:

:

:

:

:

:

:

():

:

فصل

[

]

:

فصل

[

]

:

..

فصل

[

]

:

فصل

[

]

:

:

:

[:]

فصل

[

]

:

فصل

[]

:

()

:

:

()

فصل

[]

() (/) ()
() (/) ()

:

:

*

[- :]

:

.

:

:

فصل

[]

:

:

(

):

:

: ():

:

فصل

[

]

: :

:

فصل

]

[

:

()

فصل

]

[

:

:

:

.():

:

() :

:

:

:

:

: . :

): ():

(.)

:

()

: [:]
()

فصل

]

[

:

(.)

:

:

:

(/) ()
 .(/) () ()
 .(/) ()

:

: :

: (

فصل

]

[

:

:

:

) :

: . :

(

):

(

:

:

:

:

.

:():

:

:

:

:

:()

:

: : (:)
:

:

:

فصل

[

]

:

):

(

():

[:]

:

:

:

. [:]

.

() :

:

) :

(

: () :

:) :

()

()

فصل

[]

:

() (/) ()

ﷺ

:

:

ﷺ

ﷺ

:

(/) ()

(/) ()

. () : () :

. () (

:

:

:

:

) :

. () (

(/)



()

. () () (/) ()

:
 :
) :
 () :
 () :
) :
 () :
 : () :
 :
)

 (/) : ()
 (/) ()

()

:

) :

()

(

()

:

:

)

(

:

(

:

()

:

) :

:

:

:

:

(/)

()

(/)

()

(/)

()

[() () ()]

):

().(

فصل

[]

:

() :

:

:

:

:

.

:

.

:

:

.

.(/) ()

() :
: () :
.
: () :
() : ()
فصل
[]
: ()
) :
: ()
..) :

..()
()

() :
() :

() :
()

فصل

[]

:

()

() ()
() ()

) :

(

:

(

)

) :

:

:

(

) :

) :

: (

:

(

:

) :

(

) :

(

) :

) :

(

:

: ():

:
:

: ()

: ():
):

: (

[:] :
():

():

فصل

[]

:

:

:

()

:

.(/) (/) ()

:

.

:

:

.

:

:

.

:

:

فصل

[

]

:

):

(

):

:

:
 . [:]
 :
 :
 :
 :
 :
 :
 : [:]
 [:]
 :
 فصل
 [:]
 :
 :
 :
) :
 . ()

 ()

· :
: (:)

فصل

]
[

:
) : : ()
:

) : . (:
.)

:

: ()

:

:

:

:

:

:

.():

():

:

:

: ():

: .

[:]
[:]

:
:

. [:] : [:]
:

() [:] :

: [:]

: () :

: () : .

.
:

(/) ()

: () :
: [:]

:
: . :
: . () :

فصل

[]

:

:

:

: . : . :
:

() () :

() (/) () (/) ()
_____ ()
()

:

) :

(^()

:

(/)

()

()

()

:

:

()

:

()

()

:

:

()

:

()

:

(/) ()

(/) (/) ()

() ()

(/) () ()

() ()

(/) ()

()

:

:

:

:

:

:

:

:

()

()

وقال أبو حنيفة: إن نوى إقامة خمسة عشر يوماً أتمَّ، وإن نوى دونها قصر، وهو مذهب الليث بن سعد، ورؤى عن ثلاثة من الصحابة: عمر، وابنه، وابن عباس. وقال سعيد بن المسيَّب: إذا أقيمت أربعاً فصلَّ أربعاً، وعنه: كقول أبي حنيفة.

:

:

:

:

:()

فصل

[]

:

() :

() : () :
() () ()

) :

()

()

(/) () (/) ()
(/) () () (/) ()
()

:

فصل

[]

:

:

() :

فصل

في أنه لا متعلق للجبري في قوله : (ما أنا حملتكم، ولكن الله حملكم)

() :

) :

()

[:]

:

فصل

[]

:

:

(/)	()	()	(/)	()
			(/)	()

:
 : . :
) :
) :
 (:
 (:
 :
 () :
 : . :
 []
 فصل
 []
 () (/) ()

:

:

فصل

[]

:

:

:

:

: () :

: () :

()

()

:

: ()

:

:

(/)

()

()

()

()

(/)

(/)

()

()

()

فصل

]

[

:

فصل

[

]

):

:

(

() :

:

) :

(^()

فصل

[

]

(/)

(/)

()

()

.(/)

:

.

()

.

:

:

.

فصل

في جواز إنشاد الشُّعر للقادم فرحاً وسروراً به

:

() _____ (/) () (/) () .

) :

() (

() (/) () ()
.() () ()

.

:

:

:

.

:

) :

.

(

:

: [- :]

*

):

(

)

(

:

:

:

[:]

:

[:]
() :

) :
(

:

:

:

فصل

في أن مَنْ أحبه الله تعالى أدَّبه في الدنيا على أدنى زلَّة

) :

(⁽¹⁾

() .

()

():

فصل

في جواز هجر المسلم إذا أثم

:

:

:

:

:

:

:

:

):

(

(

):

():

:

:

:

():

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

():

():

فصل

في أمر رسول الله الثلاثة باعتزال نساءهم

:

:

:

() :

:

:

:

:

:

:

فصل

في سجود الشكر والتهنئة وإعطاء البشير بخبر سار

()

()

()

:

:

() (/) ()
() () () ()
() () () ()

.() :
:
..

() :
() :
) : () (

.) :
: () : . : () :
.() : ()

.() ()

() :

()

:

:

:

: () ()

:

() :

:

:

.

:

.

..

:

() (/) (/) ()

() : : . :
:

() : :
: : : ()
) :
.
()

()
:
() : () :
() :
:
()
..

()
()
() () () ()

فصل

[]

[:]

فصل

في حَجَّةِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سَنَةَ تِسْعٍ بَعْدَ مَقْدَمِهِ مِنْ تَبُوكَ

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

: ()

:

:

()

: :

:

: .

:

:

[:]

:

[:]

فصل

في قدوم وفود العرب وغيرهم على النبي .

() () (/) () ()
.(/)
.() (/) ()

:
:
:
):
:
(
):
(
:
):
.(

):
:(
):
: [:]
:
: . [:]
:
):

) : ()

()

()

()

()

()

()

فصل

فيما في قصة وفد ثقيف من الأحكام.

()

()

:

:

(/)

()

()

()

()

:

:

:

:

فصل

في دخول العرب في دين الله أفواجاً

:

فصل
في قدوم وفد بنى عامر

: ()
) :

(^()

:

:

:

:

) : . () :

:

(

() :

:

:

() (/) ()

: :

()

()

فصل

في قدوم وفد عبد القيس وما في قصتهم من الفوائد

في (الصحيحين) من حديث ابن عباس: أن وفد عبد القيس قدموا على النبي ، فقال: (ممن القوم)؟ فقالوا: من ربيعة. فقال: (مرحبا بالوفد غير خزايا ولا ندامي). فقالوا: يا رسول الله؛ إن بيننا وبينك هذا الحي من كفار مضر، وإننا لا نصل إليك إلا في شهر حرام، فمُرنا بأمر فصل نأخذ به ونأمر به من وراءنا، وندخل به الجنة، فقال: (أمركم بأربع، وأنهاكم عن أربع: أمركم بالإيمان بالله وحده، أتدرون ما الإيمان بالله؟ شهادة أن لا إله إلا الله، وأن محمداً رسول الله، وإقام الصلاة، وإيتاء الزكاة، وصوم رمضان، وأن تعطوا الخمس من المعنم. وأنهاكم عن أربع: عن الدباء، والحنتم، والنقيير، والمزقت، فاحفظوهن وادعوا إليهن من وراءكم)^(١). زاد مسلم: قالوا: يا رسول الله؛ ما علمك بالنقيير؟ قال: (بلى جذع تنفرونه، ثم تُلقون فيه من التمر، ثم تصبون عليه الماء حتى يغلي، فإذا سكن، شربتموه، فعسى أحدكم أن يضرب ابن عمه بالسيف)، وفي القوم رجل به ضربة كذلك. قال: وكنت

(/) (/) ()

() (/) ()

:

.

: :

:

:

() :

فصل

في قدوم وفد بنى حنيفة

:

() :

:

:

: .() :
: ()

:
() :
: () :

:
())
() : : .
) :

: : ()
()

.(/) ()
. (/) ()
() (/) ()

()

فصل

في فقه هذه القصة

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

() (/ /) ()
() (/) ()

فصل

في قدوم وفد طيئ على النبي

:

) :

: (:

: () :

:

:

:

: :

فصل

في قدوم وفد كندة على رسول الله

: :

:

. () : . : ()

:

() :

() :

() :

:

:

:

(

) :

:

(

) :

:

) :

(

فصل

في قدوم وفد بنى الحارث بن كعب على رسول الله

:

:

:

: () :
: () :
() :

فصل

في قدوم وفد همدان على رسول الله

:

:

:

:

) :

()

() (

فصل

في قدوم وفد مُزينة على رسول الله

:

: () :

: () :

:

()

فصل

في قدوم وفد دَوْس على رسول الله قبل ذلك بخير

:

:

:

: .

(/) ()

(/) ()

(/) ()

:

:

:

:

: ():

:

:

:

:

:

:

:

.

:

.

:

.

.

:

:

:

:

:

:

.

:

(

)

:

(

:

)

فصل
في فقه هذه القصة

(/) (/) () ()

·
:

[:]

):

()

:

[:]

فصل

في قدوم وفد نجران على رسول الله

:

:

():

:

:

(/)

(/)

(/)

()

: (

[:]

. [:] : :

:

.

) : :

.(

..

() :

: :

() :

:

:
:

.

()

.

:

:

:

*

):
(

*

[- :]

:

:

:

.

:

.

:

:

:

()

:

():

.

.

.() : () :

:

:

)

.(

.

:

:

:

:

:

:

:

.

:

:

:

.

):

.(

.

:

:

(

):

(

):

):

.(

:

فصل

في أن مَنْ عَظَّمَ مخلوقاً فوق منزلته بحيث أخرجَه عن منزلة العبودية فقد
أشرك بالله

:

:

() :

[:]

:

:

:

:

:

) :

() : : ()
:

فصل

في قدوم رسول قَرُوَّةَ بن عمرو الجُدَامِي ملك عرب الروم
:

:

: ()

:

:

فصل

في قدوم وفد بني سعد بن بكر على رسول الله

:

:

:

:

: () :

: ()

): .

: ()

: () :
() :

:

() :

:

() : ()
()

فصل

في قدوم طارق بن عبد الله وقومه على رسول الله

:
:
:
:
()
:
:
:
() (/) () ()
() (/) ()

: (:
) :
(

: :

) : .
() : : (

: :

: () : .

):
(

: () :

):
: () :

: (

فصل

في قدوم وفد بنى سعد هُدَيْمٍ مِنْ قُضَاعَةَ

:

:

: () :

) : . : () :

: () :

: () :

:

: () :

فصل

في قدوم وفد بنى قَزَّارَةَ

:()

:

):

(

(

):

:

():

:

):

.(

فصل

في قدوم وفد بنى أسد

:

:

.

:

[:]

:

): . : ():

.(

فصل

في قدوم وفد بهراء

:

:

() : : () :
: : () :
) :
: (

:

فصل

في قدوم وفد عُذرة

: () :

) :

(

فصل

في قدوم وفد بلبي

:
) : ()
 () :
) : () :
 : () :
) : () :
 : () :
 () :

فصل

في ما يتعلق بقصة وفد بلبي من الفقه

:
 :
) :
) : (

.() (

:

:

:

:

:

:

:

.

:

:

:

.

:

.

:

:

) :

(

) :

. (

. ()

(/) ()

(/)

()

·
:

·
:

:

:

()

·
·
:

فصل

في قدوم وفد ذى مُرّة

:

() :

فصل
في قدوم وفد خولان

) :

() :

() :

()

()

()

:

[:]

() :

() :

() .

فصل

في قدوم وفد محارب

() :

() :

() :

() :

فصل

في قدوم وفد صدّاء في سنة ثمان

:

:

:

:

:

: : ():

:

):

:

:

(

():

:

():

):

):

(

: (

:

(

):

:

):

:

:

(

فصل

في قدوم وفد غسان

:

فصل

في قدوم وفد سلامان

.(

) :

:

:

:

) :

:

(

:

:

:

فصل

في قدوم وفد بنى عبس

:

) :

(

.() :

فصل

في قدوم وفد غامد

:

: () :

() :

) :

:

(

:

:

فصل

في قدوم وفد الأزدي على رسول الله

()

:

:

: :
) : () :
: (: (:
) : : (:
: () : .
: (:
) : (:
) : (:
(:
.

فصل

في قدوم وفد بني المُنْتَوِق على رسول الله

: :
: :
: :
: :
: :

:
) :

:

:

.(

:
) :

.

(

):

:

): .

.(

:

:

.(

:

.

):

:

.(

:

(

:

:

):

:

.(

: :

:):

.(
):

:

:

:

:

.(

):

: :

.(

):

: :

.(

):

: :

.(

):

:

·
:
: ()
:
·

:
· ()
:
· ()
:

·
:
· ()
:
:

·
:
:
:

·
:
:

() . :() :() :

:

:

:() :

:

: : .(:) :

:

:

.() ()

) :

:() .

: :(:) : . :() (

:() :

:

() :

):

:

(

) ()

(

:

:() :

:

[:]

.() :

·
:() :
:() :

·
:() :

·
(:) :
:

·
() :

·
:

·
) :
·
·
·
:

·
:():
:[]

·
():

·
():
():

·
():
:() · :()

·
():
:():
:():

·
:() ()
) :

·
: : :

·
:() ()

∴ ()

∴

) :

(

∴ () :

∴ () :

∴ () :

∴ :

() :

∴ (/) ()

() :

() :

فصل

في قدوم وفد النخع على رسول الله

() :

() :

) :

() : (

) : () :

(

(/) () () ()

.():
) :

(
: :

:

):

:

.(

:

.

:

()
()

فصل

في كتاب النبي إلى المقوقس ملك مصر والإسكندرية
) :

:

([:]

:

:

:

:

.

() ()

:

)

:

.(

:

فصل

في كتابه إلى المنذر بن ساوى

:

:

):

):

(

:

.(

فصل

في كتابه إلى ملك عُمان

:

)

:

(

.

:

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

.

فصل

في كتابه إلى هُوْدَةَ بن عليّ صاحب اليمامة

) :

(

) :

.(

) :

.(

(

) :

() :

:

.

:

:

:

:

:

:

فصل

في كتابه إلى الحارث بن أبي شيمر العَسَّان

:

) :

(

:

·
:

[:]

·
:

[:]

:

·

:

:]

..

[:]

·

..

فصل

في أنَّ طبَّ الأبدان نوعان

: ..

..

:

:

:

:

:

:

فصل
في هَدَى النَبِيِّ فِي التَّدَاوِي وَالْأَمْرِ بِهِ

\$

.()# \$: : #
 \$: \$:
 .()#
 \$: :# \$
 .()#
 : : :# \$ # \$
 \$:
 .()#
 # \$

() () () (/) ()
 .() ()
 .(/) ()
 () () () () () () ()
 .(/)
 .() (/) () (/) ()

[:]
[:]

\$:
\$:
\$:

فصل

في هديه في الاحتماء من التخم، والزيادة في الأكل على قدر الحاجة،

والقانون الذي ينبغي مراعاته في الأكل والشرب

\$: # \$

. (#)

:

:

:

.

:

.

:

.

()

:

.

()

()

(/)

()

.(/)

()

: :

:

:

\$: # \$
() #

:

. () ()

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

\$

]
[

:
:
:

:

فصل
في هَدْيِهِ فِي عِلَاجِ الْحُمَّى

\$: # \$
()#

\$:

\$: :
()#

() (/) ()
() (/) ()

:#

\$

:\$

\$

:\$

#

#

:\$

#

:\$

#

:\$

#

:

:

:\$

:

#

:\$

:\$

\$

:\$

#

\$

:

:

()

. : # \$:
 : # \$
 \$:
 . () # \$: #

:
 :

\$:
 . () #
 \$: # \$
 \$: () # # \$
 #

\$ (/) # \$: " " ()
 . (/) #
 : . : (/) ()
 . (/) (/) # \$ ()
 . () ()

()

:

:#

\$

\$:

()#

:

:

:

.

:

:

.

#

\$:

:

:

:

.(/) ()

.() () ()

:()#

\$

\$:

\$

:()#

:

فصل

في هدييه في علاج استطلاق البطن

| | | | | |
|---|------|---|---|----|
| | \$ | | # | \$ |
| # | \$: | : | : | : |
| | | : | : | |

| | | | |
|-------|-------|-----|-----|
| (/) | () | () | () |
| | (/) | () | () |
| | (/) | () | () |

\$:

.#

\$:

.()#

#

\$:

#

\$

.

#

\$

#

\$:

.()

(/)

()

.
\$: # \$
: \$: (#)#
(#)#

\$:

.() ()
.(/) () ()

فصل

\$ [:]

\$:

فصل

في هديه في الطّاعون، وعلاجه، والاحتراز منه

\$

: : \$
\$
\$: # \$
\$: # \$
\$: # \$
\$: # \$

() (/) ()
() (/) ()

\$: () # \$: ()

والمقصود: أن فساد الهواء جزء من أجزاء السبب التام، والعلة الفاعلة

() (/) ()
() (/) ()
()

للطاعون، فإن فساد جوهر الهواء الموجبُ لحدوث الوباء وفساده، يكون لاستحالة جوهره إلى الرداءة، لغلبة إحدى الكيفيات الرديئة عليه، كالعفونة، والنتن، والسُمِّيَّة في أى وقت كان من أوقات السنة، وإن كان أكثر حدوثه في أواخر الصيف، وفي الخريف غالباً لكثرة اجتماع الفضلات المرارية الحادة وغيرها في فصل الصيف، وعدم تحللها في آخره، وفي الخريف لبرد الجو، وردَّعة الأبخرة والفضلات التي كانت تتحلل في زمن الصيف، فتتحصّر، فتسخن، وتعفن، فتحدث الأمراض العفنة، ولا سيما إذا صادفت البدن مستعداً، قابلاً، رهلاً، قليل الحركة، كثير المواد، فهذا لا يكاد يُقلت من العطب.

وأصحُّ الفصول فيه فصل الربيع؛ قال بقراط# : إن في الخريف أشد ما تكون من الأمراض، وأقتل، وأما الربيعُ، فأصحُّ الأوقات كلها وأقلها موتاً، وقد جرت عادة الصيادلة، ومجهزي الموتى أنهم يستدينون، ويتسلفون في الربيع والصيف على فصل الخريف، فهو ربيعهم، وهم أشوقُ شىء إليه، وأفرحُ بقدمه.

وقد روى في حديث: «إذا طلع النجم ارتفعت العاهة عن كلِّ بلدٍ»^(١). وفُسِّر بطلوع الثريا، وفُسِّر بطلوع النبات زمن الربيع، ومنه: وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ [الرحمن: ٦]، فإنَّ كمال طلوعه وتمامه يكون في فصل الربيع، وهو الفصل الذي ترتفع فيه الآفات.

قال التَّمِيمِيُّ في كتاب «مادة البقاء»# : أشدُّ أوقات السنة فساداً، وأعظمها بلية على الأجساد وقتان، أحدهما: وقتُ سقوط الثريا للمغيب عند طلوع الفجر. والثانى: وقت طلوعها من المشرق قبل طلوع الشمس على العالم، بمنزلة من منازل القمر، وهو وقت تصرُّم فصل الربيع وانقضائه، غير أن الفساد الكائن عند طلوعها أقلُّ ضرراً من الفساد الكائن عند سقوطها.

: :

()

/ / /
(/) (/) () ()

()#

\$:

#

\$

#

\$

(/)

()

()

:
:
:

\$:
()

فصل

في هذيه في داء الاستسقاء وعلاجه

\$: # \$

()
\$ #
... # \$:

:
:

:

(/) (/) ()
(/) () (/) ()
(/) () ()

فصل

في هَدْيِهِ في علاج الجُرْح

\$

\$:

()

#

:

فصل

في هَدْيِهِ في العلاج بشُرْب العسل، والحجامة، والكيّ

\$

:

() (/) ()

:

\$:

()#

فصل

#

\$

\$:

:

:

()#

:

:

#

\$

\$

()#

\$

#

\$

()#

:

#

\$

()#

\$

()

()

()

()

()

()

()

(/)

()

()

(/)

()

\$: : # \$
\$: : : .
: # \$:
: # \$:
\$: # \$
\$: # \$:
\$: # \$:
\$: # \$:
\$: # \$:
\$: # \$:

فصل

في منافع الحِجَامَةِ

: .()#

\$:

..#

\$

#

\$:

:

:

:

:

:

\$:

.()#

:

\$: #

\$

()#

| | | | | |
|-----|--------|--------|------|-----|
| | .(/) | # | \$: | () |
| () | (/) | () | | () |
| | | .(/) | () | |
| | | .(/) | | () |

.()# \$: # \$
 \$: # \$
 .#
 \$: # \$
 .()#

فصل

في مواضع الحِجَامَةِ وَأَوْقَاتِهَا

. :
 \$: # \$
 .() #
 \$:
 .()#

:

: # \$

:

(/) (/) () ()
 (/) (/) () ()
 ()
 (/) ()

فصل

()

فصل

في هديه في أوقات الحجامة

\$: # \$
()#

\$:

()#

\$: # \$

()#

\$: # \$

()#

: ()

.() ()

.() ()

.(/) () ()

.() ()

: :
: # \$

\$:
.#

\$:
:# \$.# \$ # \$

فصل

:# \$

\$:

.()#

:

\$:

:
:

.# :

: :

\$

\$

\$:

()

:

.#

\$:

.#

\$

\$:

:

.()#

فصل

:

()#

\$

#

\$

:

:

.(/)

(/)

()

(/)

()

()

()

.()

()

.()

()

. : .
: . : .
() \$:

\$:

:
:
:

فصل

في هديه في قطع العروق والكي

\$

() (/) ()
: (/) () () (/)
(/)

()

()

: # \$

:

:

\$:

:

:

() #

:

:

\$

()

() #

\$:

\$:

#

() #

\$

:

:

()

() ()

() (/) () ()

() # \$ ()

/) ()

(/) () ()

() () (/) ()

() () () (/) ()

: . : # ()

: :
: .

\$

:

: :

: # \$

:

:

.() (/) ()

\$: # \$: # \$:
()# \$: #

[:]

.() () ,(/) ()

فصل
في صرع الأخطا

\$

فصل

في هديه في علاج عرق النساء

\$

\$:

()

(/) :

()

()

\$

فصل

في هذيه في علاج بيس الطبع واحتياجه إلى ما يُمشيه ويُلينه

| | | | | | |
|-----|------|-------|---|----------|---------|
| | | # \$ | | # \$ | |
| : | : | # | | \$: | : |
| | | \$: | | : | # \$ |
| | | : | | # | ()# \$ |
| \$: | : | | | # | \$ |
| | : | # | | | |
| | | | | ()# \$: | |
| | | | : | # | \$: |
| : | . | | | | |
| | | | : | # | \$: |
| | | | | | : |
| . | : | # \$: | | # \$: | |
| | | : | | : | : |
| | | | | : | |
| : | | | | | |
| | : | . | | . | : |
| | : | # \$ | | # \$. | |
| /) | (/) | () | | () | () |
| | | | | | (|
| | | (/) | | () | () |

: # \$

:

:

: # \$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

\$:

()

:

فصل

في هَدْيِهِ في علاج حِكْمَةِ الجسم وما يولد القَمَل

\$:

#

\$

#

\$:

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.()

()

.(/)

()

\$ # \$

#

:

...

:

:
:

:

\$:

.#

()# \$: # \$
\$: # \$
()# \$: #

فصل

في هديه في علاج ذات الجنب

\$: # \$
()#

: . :
: .

:# \$

: # \$

: .

:

(/) () .# \$ ()
(/) ()
(/) (/) () ()

:

: :

: .

:

:

:

#

\$:

:

#

\$

:

:

#

\$:

.

\$:

#

\$:

.

. (#)

:

#

\$

\$:

:

.(/)

.(/)

(/)

()

()

:

:

:

:

:

:

فصل

في هديه في علاج الصداع^(٢) والشقيقة

:

\$

()

\$:

:

:

()

:

()

(/)

()

:

:

()

()

(/)

()

(/)

()

()

()

في سبب صداع الشقيقة

: # \$

: # \$
: # \$
() # \$:

فصل

في علاج صداع الشقيقة

\$ # \$
\$:

. (/) ()

#: (\$) :
:

()

فصل

في الحنَّاء ومنافعه وخواصه

(/) () ()
() () ()

فصل

في هدييه في معالجة المرضى بترك إعطائهم ما يكرهونه من الطعام
والشراب، وأنهم لا يُكرهون على تناولهما

:

\$

\$:

()#

:

()

()

()

.

:

.
#

\$:

:

.

.

.

:

\$

\$:

.#()

\$:

.#

#

\$:

فصل

في هذيه في علاج العذرة وفي العلاج بالسعوط

\$: # \$

.#()

.() (/) ()

.() (/) ()

:
: # \$:

\$ # \$

\$:

#

()

:

:

:

..

:

:

\$

:

:

:

:

:

() #

\$: # \$

فصل

(/)

()

()

()

في هَدْيِهِ في علاج المفوود

\$: # \$

()#

:# \$

\$:

#

\$:

()#

: . : .

() (/) ()

()

\$ () #

\$:

() #

#

\$:

#

\$:

()

()

| | | | | |
|-----|-----|-----|-------|-----|
| () | () | () | () | () |
| () | () | () | (/) | () |
| | | | () | |
| | | | (/) | () |
| | | | (/) | () |

:# \$.

\$ # \$

فصل

.

:

فصل

في هديه في دفع ضرر الأغذية والفاكهة وإصلاحها بما يدفع ضررها،
ويُقوى نفعها

\$:

#

\$

. (#)

:

() / () .

فصل
في هَدْيِهِ فِي الْحَمِيَةِ

[:]
\$
\$:

فصل

\$:
.# \$:
\$:
: # \$:
\$: # \$:
.()#

فصل

. () ()

في هَدْيِهِ في علاج الرَّمَدِ بالسكون، والدَّعَةِ، وتركِ الحركةِ، والحميةِ مما
يَهيج الرَّمَدَ

\$:# \$
.#

:

: :

.

:

.

:

\$ # \$

:

:

:

#

\$

:

\$:

. (#)

. () () ()

فصل

في هديه في علاج الخدران الكلى الذى يجمد معه البدن

\$ # :

\$:

\$ # :

:

:

\$ # :

\$ # \$ #

فصل

في هديه في إصلاح الطعام الذى يقع فيه الدباب وإرشاده إلى دفع

مضرات السموم بأضدادها

\$ # :

.\$ #

() (/) ()

\$:

#

\$

()#

:

..

:

:

:

:#

\$

:

:

()

()

فصل

في هديه في علاج البثرة

:
: # \$:
\$: # \$:
#

: # \$
()

:# \$

فصل

[]

:

() ()
(/) ()

: # \$: . :
 ()

.# \$:
 :

\$:
 :

: :
 :
 :

()

. # \$:

..

فصل

في هديهِ في تغذية المريض بألطف ما اعتاده من الأغذية

: # \$

:

. (#)

\$:

\$:

:

\$

: #

()

:

:

:

\$:

#

\$

. (#)

:

:

. (/)

. () (/)

(/) ()

() ()

. (/)

()

.

:

:

()

\$

فصل

في هديه في علاج الأبدان بما اعتادته من الأدوية والأغذية، دون ما لم
تَعَدّه

.

:

() (/) .

: : .

: # \$:

\$: ..

: : : : : .

فصل

في هدييه في علاج السمّ الذي أصابه بخيبر من اليهود

:

: # \$:

:

: #
: # \$: . :

\$: # \$:

\$:

()

\$:

\$:

#

:

\$ [:]

(/) .# \$.() ()

.(/)

\$:

فصل

في هَدْيِهِ في علاج السّحر الذي سحرته اليهودُ به

:

\$:

#

\$

()

#

:

:

:

:

:

#

\$

.(/)

()

: :

. :

\$ # \$
:

.
:
:

:# \$

:

فصل

في أن الأدوية الإلهية هي أنفع علاجات السُّحر

:

..
:

..

فصل

في هَدْيِهِ في الاستفراغ بالقيء

\$

:

:

()

:

(/)
=

()

()

(/)

()

فصل
في أنَّ القيء أنفع في البلاد الحارة والإسهال أنفع في البلاد الباردة

فصل
في بعض فوائد القىء

:

:

:# \$

فصل
في هديه في الإرشاد إلى معالجة أحنق الطيبين
:# \$

: # \$:

()#

\$:

#

\$:

\$:

:

#

\$:

#

\$:

#

\$:

\$

#

:

#

\$

#

\$:

:

:

:

#

\$

#

\$

#

\$

#

\$

:

:

.(/) ()

:

()

:

()

:

()

.

..

فصل

| | | | |
|------------|-------|---------|-----|
| | | | |
| \$ (/) | (/) | # \$ | () |
| .(/) . / | | (/) # | |
| / / | | | () |
| . | / | / | |
| / | | | () |

:()

\$

: # \$:

()

. : : : : :
: : : : :
:

: # \$:

:
* () *

:

.
:

.
:
:

.

()

فصل

فصل

فصل

فصل

فصل

فصل

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

فصل

فصل

فصل

في هذيه في التحرز من الأدوات المعدية بطبعها، وإرشاده الأصحاء إلى
مجانبة أهلها

()

\$:

#

\$

()

()

.()# \$
 \$: # \$
 \$: : # \$
 .()# .()# \$
 \$:
 :
 .()
 :
 :

.(/) ()
 .() () ()
 .() (/) ()
 (/) ()
 : ()

. (# \$:

) () :

\$:

\$: # \$.#

:

: # \$: :

\$ # \$: (# # \$:

(/) ()
 : ()
 .(/) ()

.()

.. (#)

\$:

. :
: :
:

\$:

#

. :
\$:
: #
: # \$
: # \$:
:
:

.(/) ()

في هَدْيِهِ في علاج القَمَل الذي في الرأس وإزالته

: # \$
\$:

: #
()

: :
:

: . : . :
:

.
:
:
:

()

:

:

*

[- :]

#

\$:

() # \$:

:

() # \$:

: # \$:

: # \$:

:

[:]

والمقصود.. أن النفوس الجاهلة الضالة أسقطت عبودية الله سبحانه،
وأشركت فيها من نُعَظَّمه من الخلق، فسجدت لغير الله، وركعت له، وقامت

/ ()
() ()

بين يديه قيام الصلاة، وحلفت بغيره، ونذرت لغيره، وحلفت لغيره، وذبحت لغيره، وطافت لغير بيته، وعظمته بالحب، والخوف، والرجاء، والطاعة، كما يُعظّم الخالق، بل أشد، وسوّت من تعبده من المخلوقين برّب العالمين، وهؤلاء هم المضادون لدعوة الرُّسل، وهم الذين بربهم يعدلون، وهم الذين يقولون وهم في النار مع آلهتهم يختصمون: تالله إن كنا لفي ضلالٍ مبينٍ إذ نسويكم برّب العالمين [الشعراء: ٩٨]، وهم الذين قال الله فيهم: وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ، وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ [البقرة: ١٦٥] وهذا كُله من الشُّرك، والله لا يغفر أن يُشركَ به. فهذا فصل معترض في هديه في حلق الرأس، ولعله أهمُّ مما فُصِدَ الكلام فيه.. والله الموفق.

فصل

في هديه في علاج المصاب بالعين

| | | | |
|------|---|-------|------|
| \$: | : | # | \$ |
| | | #() | |
| | | \$: | # \$ |
| | | | #() |
| \$: | : | # | \$ |
| | | | #() |
| | : | # | \$ |
| | | | () |
| | | | () |
| | | | () |
| | | (/) | () |
| | | () | () |

. : # \$
:
\$:
() : #
:

\$:
() # :

() # \$:
\$:
() #

.
:
()

.() (/) ()
. () (/) () ()
. (/) ()
. () . () ()
. (/) ()

.
.
()#

\$:

:

:
: [:]

*

*

*

*

.) (/) ()

فصل

في أنواع المقصود بالعلاج النبوي لهذه العلة

\$

:

:

: : #

\$:

() #

\$:

:

:

:

:

#

\$:

#

\$:

\$:

#

\$:

#

\$:

.()

()

.#

\$:

.#

\$:

.#

\$:

.#

فصل

في ما يُدفع به إصابة العين

:
\$:

#

\$:

: :

\$:

.#

\$:# \$

.()#

: .
:

:

: .

.

فصل

في أمر العائن بغسل مغابيه وأطرافه وداخلة إزاره

:

:

: .

.

#

\$:

.() ()

فصل

في ستر محاسن مَنْ يُخَافُ عَلَيْهِ الْعَيْنَ بِمَا يَرُدُّهَا عَنْهُ

\$

\$:

· :
: # \$:
: : : : :
· : : : · :
: : : : :
: : :

فصل في الرُقَى التي ترد العَيْن

: :
: :
: :
:] * [-
·

فصل
في هَدْيِهِ في العلاج العام لكل شكوى بالرُقَى الإلهية
: # \$:
: \$:

()#

\$: # \$: :

()#

\$: : # : :

\$: :

()#

\$: # \$ #

فصل

في هَدْيِهِ في رُقِيَّةِ الأَدِيغِ بِالْفَاتِحَةِ

\$: # \$

: .

| | | |
|-------|-----|-----|
| (/) | () | () |
| | () | () |
| | () | () |

:
:
:
\$:
.:()# \$:
\$: # \$.()#

:
\$.[:]
:
[:]

: :

.(/) ()
.() ()

\$

[:] :

فصل

في أنّ لتأثير الرُقَى بالفاتحة وغيرها سرّاً بديعاً في علاج ذوات السُّموم

فصل

في هديهِ في علاج لدغة العقرب بالرُقِيَّة

\$

#

\$

()

()

()

:

\$
\$

:

() # \$

:

:# \$

.(/) () () (/) ()

..
: : # \$
: \$:

()#

\$:
:
()#
\$:
\$: #

()#
()#
: \$: # \$
()# \$:

() ()
() (/) ()
()
() (/) ()
()

\$: # \$

.()#

:

فصل

في هَدِيَه في رُفِيَة التَّمَلَة

\$ # \$

.#

:

#

\$

.()#

\$:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

فصل

.(/) () ()

.(/) () ()

: : ()

في هَدْيِهِ في رُقِيَّةِ الحَيَّةِ

: # \$:

\$: # \$

. (#)

:

: # \$:

\$:

. (#)

\$:

فصل

في هَدْيِهِ في رُقِيَّةِ القَرْحَةِ والجُرْحِ

\$: # \$

:

\$:

. (#)

. ()

()

/

()

. (/)

()

:

\$:

:# \$

:
:

\$:# \$

فصل

في هديه في علاج الوجع بالرقية

\$ # \$

\$:

:

:

()#

\$

:#

\$

\$:

()#

فصل

في هديه في علاج حر المصيبة وحرزنها

:

:

. [:]

:

\$:

#

\$

()#

:

:

. ()

()

. ()

(/)

()

. ()

(/)

()

. [:] *

:

:

*

*

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

:

:

:

:

:

\$:

() #

:

./

()

.()

()

:

:

:

\$:

#

\$

:

.#

. (#)

\$

:

:

. (#)

\$:

#

\$

:

:

.(/)

()

.(/)

()



:

\$:

()#

فصل

في هدييه في علاج الكرب والهم والغم والحزن

#

\$

\$:

: () ()

فصل

في بيان جهة تأثير هذه الأدوية في هذه الأمراض

#

\$:

:

.

: \$: # \$ # \$
 : [:]
 : [- :] *
 : ()
 : : # \$ # \$

\$:
 . () #

(/) () () () ()
 = () (/) () ()
 (/)

.# \$:

\$:

#

\$:

.#

#

\$:

.
#

\$:

·
:

·
:

:

*

*

*

[- :]

=

.(/) ()

: # \$:
: # \$:
[:]
: .

\$:

:()

..

وقد روى ابن ماجه في سننه# من حديث مجاهد، عن أبي هريرة قال: رأيت رسول الله وأنا نائم أشكو من وجع بطني، فقال لي: يا أبا هريرة؛ أشكمت دَرْدُ#؟ قال: قلت: نعم يا رسول الله، قال: فمُ فصل، فإنَّ في الصلَاة

:

()

شِقَاءٌ#^(١).

:

:

:

*

[- :]

#

\$

\$

:

#

فصل

()

في هَدْيِهِ في علاج الفَرْع، والأَرْق المانع من النوم

: # \$
:
:
:
\$
:

:
\$:
:

:
()

فصل

في هَدْيِهِ في علاج داء الحريق وإطفائه

\$:
:
#

() () () ()
() () () ()
() () () ()
() () () ()

فصل
في هَدْيِهِ في حفظ الصحة

:

[:]

: # \$
 : .()# : \$:
 : # \$ \$:
 : # \$.()# \$:
 : .()# \$:
 : [:]
 \$: :# \$
 .()#

.(/) ()
 .() () ()
 .() () ()
 .() () ()

\$: :

\$: # \$

\$: # \$
\$:

\$: #
\$:

فصل

في هديه في المطعم والمشرب

() () ()
()
()

:()

:

.()#

\$:

.()#

\$:#

\$

:

:

\$:

()

()
)

()
(

()

(/)
)

()

.(

.()

(/)

()

.()

(/)

()

()#

:

:

:

#

\$:

:

\$ ()

()#

\$

()#

\$:

: #

\$:

: .#

\$:

:

\$:

: #

| | | | | |
|-----|------|-----|--------|-----|
| | | | .(/) | () |
| | | | .() | () |
| | .() | () | .() | () |
| () | () | () | () | () |
| | | | .(/) | |

فصل

في هدييه في هيئة الجلوس للأكل

\$: (#) \$:
(#)
\$

()

() : # \$:

()
()
()
()
()

فصل

فصل

\$:
() # \$ # \$
:
:
:
:
:

فصل

في هَدْيِهِ في الشَّرَابِ

() () ()

. #
.()#

\$:
\$:

. ()

. ()

(/) ()

.(/) ()
.() ()
(/) ()
(/)

#

\$:

:

:

:

\$

() #

#

\$:

فصل

:

:

:

:

()

()

فصل

: # \$
() # \$:
\$: #
: # \$

: # \$:
[:] : . : .

.() ()
.() ()

\$:
()

\$: # \$
()

فصل
\$
\$:
()

| | |
|-----|-----|
| | () |
| () | () |
| () | () |

()

\$ ()

:# \$ # \$:

فصل

\$:

#

\$

.() () (/) ()

.(/) ()

.() .() ()

. : () :

فصل

. : \$: # \$
: #
() :

فصل

\$

()

:

فصل

في تدبيره الملبس

. () ()
(/) () . () ()
() ()

فصل
في تدبيره لأمر المسكن

فصل

في تدبيره لأمر النوم واليقظة

. () #

:

.

.

: # \$:

.
:

:

.

:

()

:

. (/) ()
 (/) # \$ ()

. (/)

:

:

.#

\$:

\$:

()#

:

[:]

[:]

فصل

فصل

.()

()

\$

\$:
:

. (#

فصل

في الجماع والباه وهدي النبي فيه

() (/) ()

:

:

.

:

:

:

:#

\$

:

:

:

:

:

.

..

:

. (#)

:

\$:

.(/)

(, , /)

()

\$: # \$

.()#

.#

\$:

()

:

\$:

.()#

\$:

()#

.()#

\$:

\$

:

\$.()#

\$

.()#

\$:

:

:

#

\$

.()#

\$

\$

\$:

:

:

#

.()#

()

.()

(/)

()

.(/)

()

.()

(/)

()

.()

(/)

()

.(/)

(/)

()

.()

()

.()

()

.()

()

.(/)

(/)

()

\$: # \$
() #
\$
:
:
\$:
() # \$
:
() \$: # \$ () #
\$ () #
:

() #
\$: # \$
\$:
\$ ()
\$
:

() /) ()
()
(/) () ()
()
(/) () ()
()
(/) () ()
()

. (#)

\$:

\$:

:

#

\$

. (#)

.
فصل

:

:

:

.

#

\$

:

.

.()

()

()

.()

()

. ()# \$:

. ()# \$:

[:]

:

:

[:]

:

:

()

:

:

:

.(/) ()
() (/) ()
()

:

:] ()

:

:

#

\$

. [

:

. [

:

]

\$:

() #

: #

\$

: #

\$

:

\$:

:

#

\$

() #

() #

\$:

\$:

, /)

()

()

.(/)

()

(

.()

(/)

()

()

(/)

()

.(/)

.()

()

(/)

()

فصل

...

:

()

:

:

:

فصل

في هديهِ في علاج العشق

:

(/)

()

()

(/)

()

.()

\$:

\$: (#)

.(#)

فصل

:
[:]

[:] : .
:

:
:

:
[:]

.() (/) ()
() () ()

\$: # \$
\$ () #
: () ...# \$:

: *
.[:]
:

: [:]
\$ () # \$:
:

.() : (/) ()
.(/) ()
(* /) ()

فصل

: : # \$
\$
.: (#)#
\$
.: (#)# \$:
:
[:]

فصل

:

.
.
()
()

\$: #

. () #

\$:

. :

. () # \$:

. (/ / /) ()

. () (/) ()

فصل
في هَدْيِهِ في حفظ الصحة بالطيب

()
: # \$
\$: # \$
() #
: # \$ # \$
\$ \$
\$: # \$
() #
\$:
()

(/) ()
() ()
(/) (/) () ()
(/) () ()
(/) () ()

فصل

في هديه في حفظ صحة العين

:# \$

: : . (# \$:
: # \$
: ()
: # \$

. (# \$:

() ()
(/) () () ()
(/)
() (/) () ()
(/) ()
(/) (/)

\$: # \$
 .()#
 \$: # \$
 \$: # \$
 .()#

فصل

في ذكر شيء من الأدوية والأغذية المفردة التي جاءت على لسانه مرتبة
 على حروف المعجم

:

\$: # \$:
 .()#

:

| | | | |
|-----|-----|-------|-----|
| | | | |
| | () | (/) | () |
| () | () | () | () |
| | () | (/) | () |
| | () | (/) | () |

\$

\$:
: \$: #
#

\$:
: #

\$: # \$:
\$: : #

:
: # \$:

(/) ()
.(/) ()
.(/) () ()

() : # \$

: # \$:

: # \$

: :

: # \$

:

:# \$:

()# \$:

() () ()

(/) () ()

()#

\$:#

\$

:

()#

\$

:

:

()#

\$

:

..

:

\$:

#

\$:

#

\$

:

()

#

\$

()

()

(/)

()

(/)

()

()

()

#

.

:

\$:

#

\$:

()#

:

:

:

:

..

()#

\$:

:

:

| | | | | | |
|-------|-----|-------|-----------|-----|-----|
| (/) | () | () | () | () | () |
| | | (/) | (, (/) | | |

()#

\$:

\$:

#

\$:

()#

:

:

[:]

.() ()

. /)

()

.()

(/)

()

: # \$:
\$:
: (#) # ..

()

\$: () # \$:
#

: # \$:
\$:
: () : #

.() (/) ()
: ()
.() ()
.() (/) ()

#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

.

.

.

.

.

\$: : : ()#

\$: # \$:

()#

\$: :# \$

() #

: ()

\$:

: # \$:

()# \$:

\$:

()#

: # \$ ()

:

() (/) ()

() ()

() () ()

()

()#

\$:

:

#

\$

\$

()#

:

:

:

:

\$

:

()#

:

:

()

:

\$:

:

| | | |
|---|-------|-----|
| : | () | () |
| . | () | () |
| . | (/) | () |
| : | | () |

:

: #

..

\$

:

\$:

. (#)

\$:

:

.. (#)

:

:

:

\$: .#

\$

(/)

(/)

. ()

()

()

()

. () #

:

\$:

. #

\$:

: #

\$:

. () #

:

\$:

:

. () #

:

/) () : (/) ()
 . ()) () ()
 . () ()

.

:

()

. [:]

\$:

:#

\$

()#

:

.() ()

.() (/)

()

()

()

:
 :
 *
 \$: . [:] # \$
 . () #
 \$: # \$
 . () #

. (/) (/) ()
 . (/) () () ()

[:]

*

: :
: : [:]
\$: # \$
.()#

:

:# \$

\$

() : #
: # : \$:

()
() () ()

[:]

\$:

() #

:

. #

\$

()
(/)

.

:

:

:

[:]

()#

\$:

:

:

:

()#

\$

:

:

\$

:

()

.()

()

()

()

\$: .

: .

\$: .#

.#

.. .

.

:

.

.()

()

()

[:]

#

\$

:

#

\$

:

:

:

:

#

\$

:

()

/)

()

()

\$:

:

.#

\$:

\$:

()#

.

.

.

.

.

:

.

:

:

.

.

:

:

\$:

#

\$:

()#

()

()

(/)

()

()#
.
()
.
()# \$: # \$
.
:# \$
.
()

.
.
\$:# \$

:

) (/) ()
/) (/) (/) ()
(/) (/)
(/) ()
()
() ()
(/) ()
(/) ()

.
:
\$
()

. : :

.
.
.

.

.

:

. ..

:

#

\$

.(/)

(/)

()

()



()

:# \$

.

:

:

:# \$

:

:

:\$

.()#

.

.

(/)

()

(/)

() ()

()

()

.() ()

\$: # \$

:

() #

:

:

\$:

:

\$:

:

#

()

:

#

:

:

:

() (/) ()
()

:
 :
 [:]
 :# \$
 \$:
 . () : #
 :
 :
 \$:
 :
 :
 () # \$:

\$ # \$:
 :# \$ () #

| | | | |
|-------------|-------|-------|-----|
| | (/) | () | () |
| | | (/) | () |
| | () | (/) | () |
| (/) (/) | (/) | () | () |
| | | () | () |

\$:

:# \$

:
.#

.
()

:
[:]
:
.[:]
:
[:]
\$:# \$

.()
#

..

.() (/) ()
: : : ()
: ()

[:]
[: \$]
\$:
() # \$:
: # \$: # \$
: # \$:
\$:
()

:

(/) () ()

:[:]
:

\$:
()#

\$:

:

\$
()# \$

\$

()#

\$

\$:

:

. ()
. ()
. ()

. (#)

:

*

[- :]

\$:

:

\$:

#

. (#)

:

[:]

:

:

:

:#

\$

:#

\$

. ..

. ()
. ()

[:]

[:]

:

:# \$

\$

:# \$

:

\$

:# \$

#

\$:

\$

\$:

#

\$

()#

()

()

\$:

:

:

:

:

:

()

:

.

.

:

:

:

:# \$:

\$:

()#

:

#

\$

()

()

\$:
()#

:

.

\$:

:

:

()# \$:

() (/)

() ()
() ()

.

:

:

.

:

:

.

#

#

:

\$:

\$:

.

:

:

.

:

.

:

:

:

.#

\$

..

\$:

:

#

\$

() #

.#

\$:

()

:
()

() #

\$: # \$

(/)

()

. ()

(/)

()

()

()

()

()

. (/)

. ()

() (/)

()

\$:

. () #

:

\$:

#

\$

. () #

\$:

. () #

:

:

:

. ()

(/)

. (/)

()

()

()

:
:
[:]
\$:
:
.[:]

:
[:]

\$ () # \$:

#

:

#

\$

() #

\$

\$:

#

\$

() #

:

:

:

:

:

#

\$

#

\$

() () () ()
()
(/) (/) ()

\$:

\$

()

:

: . :

(/)

()

()

()

.()

()

\$

\$

\$

\$

\$

#

\$:

:

:

:

[:]

∴

\$

\$:

.#

()

\$

()

.#..

()

..

: # \$:

:

:

:

:

:

: # \$:

:
.()# \$

:

:

:

: # \$:

.(/) ()

: :

\$: # \$:

() #

:

:

\$

:

:

\$: # \$

:

. () ()

: \$: (# \$: .#
: (# # :
:

\$ (# \$: :
: (# #

.. .

.
.
.

\$: :
#

.() ()
.() ()
.(/) ()
.() ()

.
 :
 .
 \$:
 #
 : . : :

[:]

\$:

\$:

. [:]

#

\$

. () #

. () #

\$:

#

\$

. () #

. ()

()

()

. ()

(/ /)

(/)

()

() : . :# \$

: :

: # \$

\$:
.()#

·
:

: .

\$:

.#

(/ /)

()

.(/)

.() ()

()

() #

\$:

:

\$:

: #

:

:

.

:

:

\$:

#

:

| | | | | |
|-------|-----|-------|-------|-----|
| (/) | () | (/) | (/) | () |
| | | | () | () |
| | | | () | () |

\$:
 \$: #
 : # \$:
 # \$:
 :
 : ()

فصل
 في لحوم الطير

. [:] :
 \$: # \$
 () #

\$ # \$:

. () ()
 ()
 / ()

. (#)

:

:

:

:

:

:

\$:

\$:

. (#)

:

:# \$

:

\$:

\$:

: #

. (#)

:

: # \$

:

\$:

| | | |
|------|-------|-----|
| .() | (/) | () |
| () | () | () |
| | .(/) | () |

()#

:

()#

\$:

:

\$:

()#

:

.

:

\$:

:#

\$:

()#

.#

:

\$: # \$

(/)

(/)

()

#

\$

()

(/)

()

()

()

()

()

()

فصل

في ضرر المداومة على أكل اللحم

()

:# \$

فصل: في الألبان

[:]

[:]

: \$: # \$

()#

()

(/) ()

(/) ()

()

\$.# \$

. (#)#

\$. :

:# \$

. (#)#

#

\$. :

:# :

()

()

(/)

()

:

:

:

:

.

:

.

.

.

.

.

.

:

:

:

:

:

:

:

:

()

()#

#

\$

:

\$:

:

()

:
 . ()
 :# \$
 \$:
 . () # \$: . () #
 \$: :# \$
 :#
 :
 .. # \$:

:
 ()

| | | |
|---------|-------|-----|
| . (/) | (/) | () |
| | . () | () |
| . (/) | (/) | () |
| . (/) | () | () |

\$:

:

()#

..

:

:

()#

\$

:

\$:

()
()

\$: # \$
() #
:

\$: :
: # \$ () #

\$: : # \$: () #

\$: # \$

(/) ()
()
()

\$:
:

() #
: # \$

\$:
:

\$:
\$:
()

(/) ()
() (/) ()

\$:

.#

\$:

:

.#

.#

\$:#

\$

()

: :

:

:

:

\$:

#

\$

:

.#

:

()

:

:

.

.

:

\$:

..

\$:

#

.#

\$:

#

..

.()

()

.(/)

()

\$

#

\$

:

:

#

()

\$:

\$

#

\$:

() #

:

| | | | | |
|-----|-------|-------|-------|-----|
| () | (,) | (/) | (/) | () |
| | | (/) | (/) | () |

#

:

:

.

.

.

.

.

..

.

\$:

#

\$

.

.

.

#

فصل

في التحذير من الجمع بين البَيْض والسَّمَك

\$:

#

#

\$

\$: #

\$:

#

\$:

#

فصل

في أنَّ الحَمِيَّةَ المفرطة في الصحة كالتخليط في المرض

: \$:

#

فصل

في بعض المحاذير والوصايا الطبية

: :

:

:

\$:

.#

فصل

في أسرار وحقائق لا يعرف مقدارها إلا من حسن فهمه

:

:

\$:

:#

\$

:

()#

()

()

(/)

()

فصل

في هديه في الأفضية والأنكة والبوع

وليس الغرض من ذلك ذكر التشريع العام وإن كانت أفضيته الخاصة تشريعاً عاماً، وإنما الغرض ذكر هديه في الحكومات الجزئية التي فصل بها بين الخصوم، وكيف كان هديه في الحكم بين الناس، ونذكر مع ذلك قضايا من أحكامه الكلية.

فصل

\$. () : #
: # \$
()

فصل

في حكمه فيمن قتل عبده

()
\$: :
() #

:

(/) () () ()
(/) () () ()
(/) () () (/) ()
(/) () () (/) ()

()# \$: # \$
: : ()
: # \$
()

فصل

في حكمه في المحاربين

()

فصل

في حكمه بين القاتل وولى المقتول

: # \$: # \$:
: # \$:
()
: # \$:
\$: : # \$:
#

() () ()
() () ()
() () ()
(/) () ()
() () ()

: # \$
 :
 \$:
 : () #
 :
 .# \$

فصل

في حكمه بالقَوَدِ على من قتل جارية، وأنه يُفَعَلُ به كما فَعَلَ

\$:# \$

()#

فصل

في حكمه فيمن ضرب امرأة حاملاً فَطَرَحَهَا

\$:# \$

\$: ()# \$ #

()#

| | | | | |
|-------|-----|-----|-------|-----|
| | | | | () |
| | | () | (/) | () |
| | | () | (/) | () |
| = /) | () | () | (/) | () |

()
\$
#

فصل

في حكمه بالقسامة^(٣) فيمن لم يُعرف قاتله

\$: #
\$: #
\$: #
#

\$: # \$
=

| | | |
|-------|-------|-----|
| | (/) | () |
| : | (/) | () |
| - | - | () |
| () | (/) | () |
| (/) | () | () |

: # \$

:

: # \$:

\$:

:

: #

فصل

في حكمه في أربعة سقطوا في بئر، فتعلق بعضهم ببعض، فهلكوا

:

#

\$:

\$:

.()#

فصل

فيمن تزوج امرأة أبيه

:

:

\$:

.()#

\$

\$:

:

:

#

\$

.()#

:

\$:

:

.()#

.

:

:

:

.()

.(/)

.(/)

()

(/)

()

()

.()

()

.(/)

()

فصل

في حكمه بقتل من اتهم بأمر ولده فلما ظهرت براءته، أمسك عنه

:

#

\$

:

:

:

:

#

\$:

:

:

فصل

في قضائه في القتل يُوجد بين قريتين

\$:

فصل

في قضائه بتأخير القصاص من الجرح حتى يندمل

: # \$

: \$:

\$:

\$:

#

()

\$:

: . :

\$

: #

#

\$:

()#

\$

:

()#

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

:

:

:

:

فصل

في قضائه بالقصاص في كسر السن

:# \$

:

\$:

.(#

فصل

. () (/) ()

في قضائه فيمن عضَّ يدَ رَجُلٍ، فانتزع يده من فيه، فسقطت ثنية العاض بإهدارها

\$ #
\$:
() .

فصل

في قضائه فيمن أطلع في بيت رجلٍ بغير إذنه، فحدَّفه بحصاةٍ أو عُود، ففقا عينه، فلا شيء عليه

\$ #
\$:
()
\$:
()
\$:
()
:

[]

فصل

\$

() (/) ()
() (/) ()
()
() (/ /) ()

()
\$ # \$
\$
\$

()
()

()

\$:

() () ()
() (/) ()
(/) () ()
() () ()
(/) () ()
(/) () ()
(/) (/) ()
(/) (/) (/)
() (/) (/)

. () #

. :
\$:

. () #

. ()

. ()

\$

. () #

. () #

\$

:

. ()

| | | | |
|---------|-------|-----------|-----|
| . (/) | . () | () (/) | () |
| . (/) | () | () | () |
| | . () | (/) () | |
| . () | () | (/) | () |
| | | () | () |
| | | . () | () |
| . () | (/) | () | () |
| | () | | () |

:
 : () \$
 . () #
 :
 :
 :
 :
 :
 :

\$ ()
 :
 :
 :
 :
 :
 :

(/) (/) () () ()
 . (/) () ()
 (/) ()

()# \$

فصل

في قضاؤه على من أقر بالزنى

\$:

: # \$: . : #

: : # \$: :

: : #

: # \$: : # \$:

\$:

: . : # \$: . :

: # \$: :

: # \$: .

\$: . : # \$:

\$: . : # \$: . :

: . : #

() : : # \$

: : # \$

() ()

() . (/) ()

()
 : \$:# \$
 :
 # \$:
 # \$:
 :

()
 \$:
 #
 :# \$
 ()
 : # \$
 :
 : # \$:

\$:
 ()
 \$: # \$

() ()
 .() () .() ()
 .(/) ()
 .(/) ()

()#

:#

:

\$

() () () () ()

\$

.

.

:

()

:

.

:

:

.

.

:

.

:

فصل

في حكمه على أهل الكتاب في الحدود بحكم الإسلام

\$:# \$ # \$

\$:

:

: \$ #

:

:

() () ()

. (#)

\$

:# \$

:#

()

()

: .

:

:

.

\$

()

:

:

:

.(/) ()
.() ()
.() ()
.() ()

()

() :

·
:

:

:

·

:

\$

:

:

:

:

·

:

:

: .

() ()

()

()

.(/)

()

·

:

فصل

\$:
() :

: :
() :

: # \$:
\$: # \$
() #

() () () () ()
(/) ()
(/) () () ()
(/) () () ()
(/) () (/)

: . :
:

فصل

:# \$

\$

.()#

:

:

:

:# \$

\$

()#

:

:

:

فصل

.() ()

.() ()

:
:]

()

[

\$:

:#

\$

()#

\$

#

:

:

#

\$

()#

\$:

\$:

()#

:

| | | |
|----------|-------|-----|
| () | (/) | () |
| .() () | | () |
| .() () | () | () |
| .() () | (/) | () |

:

:

:

:

\$

.()#

[]

فصل

:

:

.()

:

.()

.()

:

.()

.()#

\$

:#

\$

.()

(/)

()

.()

()

()

.(/)

(/)

()

()

.()

()

(/)

()

.()

()

.()#

\$:

\$:

.()#

.()

: .()#

\$

:

: .

.()

:

:
:
:

.()

:

:

.()

:

:

.()

()

.()

()

()

()

()

.()

(/)

()

.(/)

()

()

()

()

()

()

(/)

(/)

()

()
 :
 ()
 \$:
 : ()#
 :
 :
 ()
 ()
 :
 ()
 \$:
 ()#

وأسقط القَطْعَ عن سارق الثَّمَرِ والكَثْر، وحكم أن من أصاب منه شيئاً بفمه

| | | | | |
|-----|-------|-------|-------|-----|
| | | | (/) | () |
| | | () | (/) | () |
| | (/) | () | (/) | () |
| | | (/) | () | () |
| | (/) | | | () |
| () | (/) | () | () | () |
| | | | (/) | () |

وهو محتاج، فلا شيء عليه، ومن خرج منه بشيء، فعليه غرامة مثليه
والعقوبة، ومن سرق منه شيئاً في جرينه وهو بيدره، فعليه القطع إذا بلغ ثمن
المجن^(١) فهذا قضاؤه الفصل، وحكمه العدل.

()

.()# \$:

()

\$:

()

#

#

\$:

()

:

\$:

:

#

\$:

:

#

\$:

#

.()#

\$:

()

:

.

فصل

(() () () () () ()

.() () (/)

.() (/) (/) ()

.(/) () () ()

.(/) () (/) ()

.() ()

.() (/) () ()

.(/) ()

(/) () () ()

.()

في حكمه على من أتهم رجلاً بسرقة

\$:

:

() :

فصل

:

()

()

() (/) () ()
() (/) () ()
() - ()

:

:

:

:

:

:

:

\$:

. (#)

:

\$: :# \$

. (#)

()

.(/)

()

:
:
: # \$:

:
:
: # \$

فصل

\$:

\$

\$:

()

\$:

\$:

:(/)

:()

()

\$:# \$

. (#)#

:

:

:

:

: # \$

:

.(/) ()

 ()

فصل

في قضائه فيمن سبّه من مسلم أو ذمّي أو مُعَاهِدٍ

()

\$: ()

() #

:

()

:# \$

()

:

:

#

\$:

() #

\$:

:

:# \$

:

:

(/)

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

()

()

()

()

: () :

فصل

في حكمه في الساحر

() \$:

فصل

في حكمه في أول غنيمة كانت في الإسلام وأول قتييل

() ()

() ()

[:]

:

-

-

()

:

\$:#

\$

()#

:

فصل

في حكمه في الجاسوس

:

\$:

()#

(/)

()

()

(/)

()

()

:

:

:

:

فصل

في حكمه في الأسرى

()

\$:

()#

()

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

∴

()

فصل

()

فصل

في حكمه في فتح خيبر

()

∴

∴

()

() (/) ()

(/) ()

فصل

في حكمه في فتح مكة

:

.# \$

.# \$:

فصل

في حكمه في قسمة الغنائم

:

:

:

:

:

:

:

: . :
[:]

. [:] :
: :
\$:

: #

فصل

: :
: # \$

() # \$:

: :
:

. () ()

:
()

فصل

()

:
\$:

()

()#

\$:
()#

:

\$

فصل

\$

:

:

:

:

:

| | | | | | |
|-----|-----|-------|-------|-----|-----|
| () | () | () | () | () | () |
| | | () | (/) | | () |
| | | | () | | () |
| | | | () | () | () |
| | | (/) | () | | () |

()# \$:

:
:

:
:# \$

\$: # \$: #
\$: #
()

:
:
:

:

.() : (/) ()

\$ # \$:
() :#
[:] :

\$:
: . :

\$:

فصل

في حكمه فيما حازه المشركون من أموال المسلمين، ثم ظهر عليه المسلمون، أو أسلم عليه المشركون

:

(/ /) () ()

()
 ()
 :# \$ \$ # \$
 # \$ # \$
 \$:
 #
 :
 ()# \$: :

.# \$:

فصل

في حكمه فيما كان يُهدى إليه

| | | |
|-----|---------|-----|
| () | (/) | () |
| () | () | () |
| () | (/ /) | () |

:# \$

:
: (#) # \$

()

()

:
()

\$:

() #

\$:

:

() #

.() : (/) ()

.(/) (/) ()

: () ()

.() (/) (/) ()

()

(/) () () ()

فصل

فصل
في حكمه في قسمة الأموال

\$:

()#

\$: # \$
\$: () ()#

() : (/) ()
(/) ()

()

:

#

:#

\$

:

#

\$:

()

:#

\$

:

\$:

#

()

:

.

:

.

:

:

.(/)

()

.()

(/)

()

.(/)

(/)

()

()

\$:

:#

\$

. (#

:

:#

\$

\$:

. (#

:

:#

\$

. (#

| | | |
|---------|-------|-----|
| | () | () |
| . () | (/) | () |
| . (/) | () | () |

\$:

()#

.

:

: [:]

.

:

(/) ()

:

*

*

[- :]

[:]

:

.

.

:

()

:

.

() ()

[:] :

:

:

:

ومن تأمل النصوص، وعَمَلَ رسول الله وخلفائه، وجده يدل على قول أهل المدينة، فإن الله سبحانه جعل أهل الخمس هم أهل الفىء، وعيَّتهم اهتماماً بشأنهم، وتقديماً لهم، ولما كانت الغنائم خاصة بأهلها لا يشركهم فيها سواهم، نصَّ على خمسها لأهل الخمس، ولما كان الفىء لا يختصُّ بأحد دون أحد، جعل جملة لهم، وللمهاجرين والأنصار وتابعيهم، فسوى بين الخمس وبين الفىء في المصروف، وكان رسول الله يصرفُ سهم الله وسهمه في مصالح الإسلام، وأربعة أخماس الخمس في أهلها مقدماً للأهم فالأهم، والأحوج فالأحوج، فيزوج منه عزابهم، ويقضى منه ديونهم، ويُعين ذا الحاجة منهم، ويُعطى عزبهم حظاً، وامتزوجهم حظَّين، ولم يكن هو ولا أحد من خلفائه يجمعون اليتامى والمساكين وأبناء السبيل وذوى القربى، ويقسمون أربعة أخماس الفىء بينهم على السوية، ولا على التفضيل، كما لم يكونوا يفعلون ذلك في الزكاة، فهذا هديُّه وسيرته، وهو فصلُ الخطاب، ومحضُ الصواب.

فصل

في حكمه في الوفاء بالعهد لعدوه وفي رسلهم، أن لا يُقتلوا ولا يُحبسوا،
وفي النبذ إلى من عاهده على سواء إذا خاف منه نقض العهد
\$: : :

.()#

\$:

.()#

:

[:]

.()

:

[:]

\$:

.()

:

#

.(/) () ()

. () (/) ()

. / # \$ ()

.(/) () () ()

\$:

()#

فصل

في حكمه في الأمان الصادر من الرجال والنساء

()#

\$:

()

()#

\$:

()#

\$:

:

:

:

:

:

() ()

() () () ()

() ()

(/) (/) () (/) ()

(/) ()

#

\$

(/)

()

()

فصل

في حكمه في الجزية ومقدارها وممن تقبل

\$

:

.

:

:

:

:

:

.

.

.

:

:

.

.

()

()

.

.

| | | | | |
|---|-----|-----|-------|-----|
| (| /) | () | () | () |
| | | | () | / |
| | | | (/) | () |

فصل
في حكمه في الهدنة وما ينقضها

فصل

()

()

فصل

في حكمه في التَّيِّبِ والبكر يُزَوَّجُهُمَا أبوهما

() :# \$

: : ()

()

: \$: # \$
()# \$:
()# \$:

\$ # \$ # \$ ()
() (/) (/) ()
(/)
() () : () ()
() () () (/) ()
(/) () ()
() () (/) () ()
(/)

:

\$:

#

\$:

\$:

: () #

\$:

\$: #

.()

()

() #

\$:

#

\$:

#

\$:

#

()

(/)

()

()

()

.(/)

:
: . :

:

فصل

:

فصل

()

:

. [:]

:

()

\$: :
#

.() ()

.(/) () ()

() () () ()

(/)

فصل

في حكمه في النكاح بلا ولي

\$: # \$

()#

\$: ()# \$:

()#

فصل

()

فصل

في قضائه في نكاح التفويض

()

() () () ()

(/) ()

(/) () () () ()

(/) () () () ()

(/) () () () ()

() ()

() () (/) ()

(/)

() () () () () () ()

() (/)

: # \$: : \$:

()

()

فصل

في حكمه فيمن تزوج امرأةً فوجدها في الحبل

: # \$ # \$
\$:
#

() ()
(/) ()

()

: .
:

:

:

فصل

في حكمه في الشروط في النكاح

()#

\$: :# \$

\$:

()

: ()#

()#

\$: :

() () ()

() (/) ()

() (/ / /) ()

() (/) ()

(/) ()

فصل
في حكمه في نكاح الشغار والمُحلل، والمتعة ونكاح المُحرم، ونكاح
الزانية

()

\$

:

:

:

()

:

:

:

(/) () () ()

() (/) ()

()

:

:

()

:

:

.

:

:

:

.

:

:

:

:

.

:

:

:

.

.(/) () ()

.(/) () ()

فصل

\$
: (#)
\$:
\$:# \$
(#)
:
: :
\$: # \$:
(#)
:

فصل

وأما نكاحُ المتعة، فنثبت عنه أنه أحلها عامَ الفتح، وثبت عنه أنه نهى عنها

() () () () () ()
() (/) (/) () () ()
() () () () () ()
() (/) (/) () () ()

عَامَ الْفَتْحِ^(١) وَاخْتُلِفَ هَلْ نَهَى عَنْهَا يَوْمَ خَيْبَرَ؟ عَلَى قَوْلَيْنِ، وَالصَّحِيحُ: أَنْ
النَّهْيَ إِنَّمَا كَانَ عَامَ الْفَتْحِ، وَأَنَّ النَّهْيَ يَوْمَ خَيْبَرَ إِنَّمَا كَانَ عَنِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ،
وَإِنَّمَا قَالَ عَلَى لَابْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنِ مُتْعَةِ
النِّسَاءِ، وَنَهَى عَنِ الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ مُحْتَجًّا عَلَيْهِ فِي الْمَسْأَلَتَيْنِ، فَظَنَّ بَعْضُ
الرُّوَاةِ أَنَّ التَّقْيِيدَ بِيَوْمِ خَيْبَرَ رَاجِعٌ إِلَى الْفَصْلَيْنِ، فَرَوَاهُ بِالْمَعْنَى، ثُمَّ أَفْرَدَ
بَعْضُهُمْ أَحَدَ الْفَصْلَيْنِ وَقَيَّدَهُ بِيَوْمِ خَيْبَرَ، وَقَدْ تَقَدَّمَ بَيَانُ الْمَسْأَلَةِ فِي غَزَاةِ
الْفَتْحِ^(٢).

: # \$

:

:

:]^(١)

:# \$ [

:

فصل

\$

#^(١)

\$:

:

:

.() () ()

.(/) ()

.(/) ()

.() .(/) ()

()

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

فصل

() () (/) ()
 () () () () () ()

. [:] :
[:] :
:

:

[:]

[:]

:

:

.

:

:

. () # \$:

(/) () ()

فصل

في حكمه فيمن أسلم على أكثر من أربع نيسوة أو على أختين

() :

()# \$: .# \$:
()# \$:

:

فصل

: # \$:
()

فصل

\$:

()#

:

()
() () (/) ()
() () () ()
() (/)
() () ()
() () (/) ()

#

\$:

فصل

فِيمَا حَكَمَ اللَّهُ سُبْحَانَهُ بِتَحْرِيمِهِ مِنَ النِّسَاءِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ

:

[:]

:

.

\$

:

()#

.

.

.

:

:

.

:

:

.

[:]

:

.() (/) ()

:

.

:

·
[:]

:

:

:

·

.

:

·

:

:

:

[:]

:

[:]

· [:]

[:]

:

:

·

:

:

:

:

.

:

:

:

*

. [- :]

.

:

[:]

:

\$:

[:]

: (#)

: .

:

.

#

\$:

: .

.() (/) ()

.

:

\$:

#

:

.

:

.

فصل

:

[:]

فصل

*

[- :]

[:]

\$:

()#

فصل

()#

\$

:

∴

[:]

[:]

:

.()

.(/)

(/)

()

()

:

:

فصل

:

:

:

:

[:]

:

:

:

()

:

:

:

.

:

:

.

.

:

\$

[:]

()

.(/) ()

.() ()

\$
()

\$

\$: # \$ # \$

() (/) ()

\$: : (#)

: (#)

\$: : # \$

: (#)

فصل

في حكمه في الزوجين يُسَلِّمُ أحدهما قبل الآخر

()

()

\$:

#

()

\$:

(/) () ()

(/) ()

() ()

() () () () () ()

()

()

(/) () () ()

: . (#

: :
() .

: ()

()# \$

. () () ()
\$: ()
/ ()
/ ()

:

: [:]

[:]

:

:

: [:]

[:]

:

\$

()

()

ويلى هذا القول مذهبٌ من يقف الفرقة على انقضاء العدة مع ما فيه، إذ فيه آثار وإن كانت منقطعة، ولو صحت لم يجز القول بغيرها. قال ابن شبرمة: كان الناس على عهد رسول الله يُسلم الرجل قبل المرأة، والمرأة قبل الرجل، فأيهما أسلم قبل انقضاء عدة المرأة، فهي امرأته وإن أسلم بعد العدة، فلا نكاح بينهما، وقد تقدّم قول الترمذى في أول الفصل، وما حكاه ابن حزم عن عمر رضى الله عنه فما أدري من أين حكاه؟ والمعروف عنه خلافه، فإنه ثبت عنه من طريق حماد بن سلمة، عن أيوب وقتادة كلاهما عن ابن سيرين، عن عبد الله بن يزيد الخطمي، أن نصرانياً أسلمت امرأته، فخيرها عمر بن الخطاب رضى الله عنه إن شاءت فارقت، وإن شاءت أقامت عليه^(٣). ومعلوم بالضرورة، أنه إنما خيرها بين انتظاره إلى أن يسلم، فتكون زوجته كما هي أو تُفارقه، وكذلك صح عنه: أن نصرانياً أسلمت امرأته، فقال عمر رضى الله عنه: إن أسلم فهي امرأته، وإن لم يسلم، فرق بينهما، فلم يسلم، ففرق بينهما. وكذلك قال لعبد بن النعمان التغلبي وقد أسلمت امرأته: إما أن تسلم، وإلا نزعها منك، فأبى، فنزعها منه.

() (/) .

()

() (/) .

فصل

في حكمه في العزل

: # \$
\$. # \$:
() #
:

() # \$:
: # \$
()
: # \$
()
: # \$
: # \$:
:

(/) () .() (/) ()
(/) ()
(/) (/) () ()
() (/) () ()
() () (/) ()
() () () ()

\$: (\$) # \$:
: # \$:
\$:
\$:
: # \$:
: # \$:

()
: # \$:
: # \$:
: # \$:
: # \$:
: # \$:

.(/) .(/) () () ()
.(/) () ()
.(/) (/) ()
.(/) (/) ()

\$:

() #

:

:

:

()

:

:

:

.

.

:

:

.

()

.

:

:

#

\$

:

:

()

()

(/)

()

\$:

#

\$:

#

.

:

:

.

:

:

:

:

:

.

.

:

:

.

:

:

.

:

:

.

:

: : . :

فصل

في حكمه في الغيل، وهو وطء المرضية

\$: :# \$

()#

\$:

#

() : : : : :

\$: :

\$: :

\$: : # \$:

(/) () ()

(/) () () () ()

فصل

في حُكمه في قسم الابتداء والدوام بين الزوجات

: # \$

. () :

\$

\$:

.#

:

\$:

\$: #

. () #

\$:

:

#

\$:

()

:# \$

()

:# \$

| | | |
|---------|---------|-----|
| . () | (/) | () |
| . () | (/) | () |
| | . () | () |
| . (/) | (/ /) | () |

()

:

()

()

:#

\$

:

:#

\$

[:]

:

()

:

. [:]

: (/) ()
 . ()
 .() ()
 .() ()
 .() (/) ()

فصل

في قضاؤه في تحريم وطء المرأة الحبلى من غير الواطيء

\$

: # \$:

\$:

() #

:

\$

() #

\$:

:

() #

\$:

()

#

\$:

:

:

| | | | |
|-------|-----|-------|-----|
| () | () | () | () |
| (/) | () | () | () |
| () | () | (/) | () |
| () | () | (/) | () |

\$:

. :

: :

. :

فصل

في حكمه في الرجل يعتق أمته ويجعل عتقها صداقها

: # \$:# \$
() :

فصل

في قضائه في صحة النكاح الموقوف على الإجازة

() (/) () (/) .

\$

()

\$:#

:

:

: .

:

:

:

:

فصل

في حكمه في الكفاءة في النكاح

:

: [:]

:]

: [:]

: [

. [:]

. () () ()

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring transparency and accountability in financial reporting.

2. The second part of the document outlines the various methods and techniques used to collect and analyze data. It highlights the need for consistent and reliable data collection processes to ensure the validity of the results.

3. The third part of the document focuses on the analysis and interpretation of the collected data. It discusses the various statistical and analytical tools used to identify trends, patterns, and correlations in the data.

4. The fourth part of the document discusses the implications and conclusions drawn from the analysis. It highlights the key findings and their potential impact on the organization's operations and decision-making processes.

5. The fifth part of the document provides a summary of the overall findings and conclusions. It emphasizes the importance of ongoing monitoring and evaluation to ensure the continued effectiveness and relevance of the data collection and analysis process.

فصل

في حكمه في ثبوت الخيار للمعتقة تحت العبد

\$ # :

:

#

\$:

\$:

#

: #

\$:

:

:

#

\$:

#

\$

.()#

\$:

:

:

:

.

.(

/)

()

\$: : (#)

\$: # \$:
\$:

\$:
\$:

ثم اختلفوا في معناها، فقالت طائفة: اللام ليست على بابها، بل هي بمعنى
\$على#، كقوله: إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا [الإسراء: ٧]

() () .

أى: فعلیها، كما قال تعالى: مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
[فصلت: ٤٦].

\$:

:

:

وقالت طائفة أخرى: بل هذا أمرٌ تهديد لا إباحة، كقوله تعالى: اَعْمَلُوا مَا
شِئْتُمْ [فصلت: ٤٠] وهذا في البطلان من جنس ما قبله وأظهرُ فساداً، فما
لعائشة، وما للتهديد هنا؟، وأين في السياق ما ينقضى التهديد لها؟ نعم هُم
أحقُّ بالتهديد، لا أمُّ المؤمنين.

:

.

:

:

فصل

#

\$:

:

:

()#

\$:

:

\$:

#

\$:

:

.#

فصل

في فقه قصة بريرة

:

.

:

:

:

:

\$:

()#

()

(/)

()

()

()

\$:

. (#)

:#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

(/)

()

..

:

:

.

:

.#

\$.:

:

:

.

: :

.

.

:

.

:

.

:

:

:
#

\$

\$:

#

:

:

:

:

:

.

| | |
|----------|-----|
| .(/) | () |
| .(/ /) | () |

:

.

()

·
:

\$

· () #

:

:

:

:

.

.

.

.

:

:

:

:

:

.

:

()

()

فصل

في قوله : \$لو راجعته# فقالت: أتأمرني؟ فقال: \$لا، إنما أنا شافع#، فقالت:
لا حاجة لي فيه، فيه ثلاث قضايا.

:

:

:

:

[:]

فصل

\$:

#

()#

\$:

فصل

في قضائه في الصداق بما قلَّ وكثُرَ وقضائه بصحة النكاح على ما مع الزوج من القرآن

:

#

\$

()

:

()

:

()

(/)

()

()

()

()

()

∴
()

.

.

.

∴

∴

.

.

.

.(/) ()

فصل

في حكمه ، وخلفائه في أحد الزوجين يجد بصاحبه برصاً أو جنوناً أو
جذاماً، أو يكون الزوج عتياً

:# \$

\$:

()

: # \$

()#

\$:

()#

:

:

:

\$

:

\$:

:

#

\$:

:]

: #

.(/)

(/)

()

.(/)

()

.(/)

()

.

:

()

:

:

()

:

:

:

:

:

()

:

:

:

.

.

.

.

()

(/)

()

()

()

()

.

:

\$:

() #

. ()

(/)

()

()

:

فصل

في حكم النبي في خدمة المرأة لزوجها

:# \$

:

:

()

:# \$

:

\$:

\$:

#

: ()

:

:

:

()

()

()

(/)

()

(/)

()

(/)

()

:

:

:

:

[:]

: [:]

.

:

.

:

:

:

.

. (#)

\$:

:

()

:

:# \$

: #

\$:

:

: # \$:

()

#

\$

:

[:]

:

:

:

:

:

:

[:]

()

()

.

.

:

:

[:]

.

.()

:

:

.()

.

.

:

:

:

.

:

:

:

.(/)

()

()

.(/)

()



: :

. [:]

.

.

[:] :

.

. ()

. ()

:

. ()

. ()

:

()

:

:

()

()

()

()

. (/)

()

. ()

()

. ()

()

. :
 . () :
 . :
 . () : # \$
 . :
 . :

. :
 . :
 \$:
 \$: #
 () : #
 . :

فصل

:
 .(/) ()
 .(/) ()
 .() ()

. () : : . ()

فصل

:

()

:

:

:

:

| | |
|---------|-----|
| . () | () |
| . () | () |
| . (/) | () |

∴

.

∴

()

∴

()

∴

∴

∴

()

∴

∴

∴

.

.

∴

∴

.

.(/)

()

. ()

()

.(/)

()

:

: .

.

: .

: .

: .

:

[:]

:

[:]

.

: .

:

.

:

.

:

:

.

.

:

\$:# \$

.()#

\$:()

.()#

.()#

\$:

.()#

\$:

.()

:

:#

\$

.()

()

()

.()

()

.()

(/)

()

()

()

:
()

\$: # \$
#

:

:

:

#

\$:

[:]

:

:#

\$

.(/) ()
() (/) ()

() : : : :

: :

:

:

:

:

:

:

. [:] .

:

:

:

.

:

()

()

(/)

()

(/)

()

فصل

:

[:]

:

()

:

()

:

:

()

:

()

:

(/)

(/)

()

()

(/)

()

()

()

()

(/)

()

:

:

.

:

:

:

:

.

.

:

:

:

:

:

:

.

#

\$

:

#

\$

:

:

.

: . ()

()

()

:

:

:

:

:

()

:

:

:

:

()

:

#

\$:

\$:

:

#

:

.

:

:

فصل

:

() #

\$:

:

.()

()

()

. (#)

\$:

:

. (#)

\$:

:

. (#)

\$:

:

:

.

:

:

:

:

:

. ()

:

[

:

]

:

:

:

:

.

:

:

:

.

()

()

()

()

()

. (/)

()

()

:

:

:

:

:

.

:#

\$

:

\$

.#

.#

\$.:

\$.:

. (#)#

\$.:

.#

: :

(

/)

()

:
 :
 : () : # \$
 . [:]
 . :
 . :
 :
 . [:]
 :
 [:] ()
 [:] :
 # \$:
 . :
 \$:
 () : # \$:
 :
 ()
 .
 () () ()
 . (/) ()
 . (/) ()
 . (/) ()

:

:

:

:

:

() # \$
: # \$

(/) ()

\$: # \$
() #

\$:

. #

:

:

:

:

:

:

[:]

[:]

:

:

:

: .

:

:

()

\$:

:

\$

\$

\$:

:

:

:

: [:]
[:]

:

: :

:

:

:

:

:

:

:

:

وأما حديث أنس: ﴿مَنْ طَلَّقَ فِي بَدْعَةٍ أَلْزَمَنَاهُ بِدُعْتِهَا﴾، فحديث باطل على رسول الله ، ونحن نشهد بالله أنه حديث باطل عليه، ولم يروه أحد من الثقات من أصحاب حماد بن زيد، وإنما هو من حديث إسماعيل ابن أمية

الذارع الكذاب^(١) الذي يذرع ويفصل، ثم الراوى له عنه عبد الباقي بن قانع^(٢)، وقد ضعفه البرقاني وغيره، وكان قد اخلط في آخر عمره، وقال الدارقطني: يخطيء كثيراً، ومثل هذا إذا تفرد بحديث لم يكن حديثه حجة.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

()

()

.

:

:

:

:

[:]

. [:]

:

:

:

:

:

.

:

:

:

.

فصل

في حكمه فيمن طلق ثلاثاً بكلمة واحدة

:

\$:

#!

:

#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

:

#

\$

:

:

.

.

:

:

:

:

.

:

\$:

#

\$

.() #
: :

[:] :

\$:

() #

:

:

: [:]

:

: [:]

:

:

() #

\$:

[:]

[:]

:

: [:]

:

()

:

()

()

(/)

()

()

(/)

()

() (/)

()

: .

.

:

: [:]
[:]

:

: [:]
[:]

.

:

:

:

.

:

: .

.

:

:

.

:

:

.

:

:

[:]

[:]

:

.

:

:

[:]

:

[:]

: . ()

#

\$

:

.

:

\$:

.(/) ()

()#

\$:

:

\$:

()#

:

:

#

\$

#

\$:

:

#

\$

:

:

()

()#

\$:

:

#

\$

:

()

:

\$:

()#

()

(/)

(/)

()

() () ()

()

()

()

()

()

()

()

()

\$:

:

.#

:

:

...#

\$:

:

.()#

\$:

:# \$

:

:

#

\$:

.()

:

: : #

\$:

:

.()#

\$:

:

\$

:

-

-

:

:

.(/)

()

.()

()

.()

()

:

.

.

:

:

:

.

.

:

:

()

:

:

:

:

:

()

:

()

:

(/)

()

()

(/)

()

(/)

()

: () :

:

() :

\$

:

()

:

.

:

:

| | |
|-----|-----|
| () | () |
| () | () |
| () | () |

:

[:]

:

:

:

#

\$:

:

:

:

:

:

#

\$

()

:#

\$

()

.() ()

()

:

() :

() ()

\$

فصل

:

\$

:

:

(/)

()

()

()

∴

.

∴

()

.

∴

∴

()

∴

.

.

∴

∴

()

()

.

()

.

:

.

()

:

:

.

:

()

:

:

:

:

#

\$

:

.

()

()

()

:

.

:

.

:
:

: .

:

()

:

.

:

:

:

\$:

. () #

. () #

\$:

:

| | |
|-------|-----|
| . () | () |
| . () | () |
| . () | () |

: :

\$:

() #

: : :

: # \$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.() ()

: [:]

: :

: :

: .

:

: .

:]

:

: [

[:]

:# \$

: :

: .

\$:

. (#

:

. ()

.() ()

.() ()

:

()

:

وذهب إلى القول الأول أهل الحديث، فيهم أحمد، والشافعي، ومالك، وذهب إلى الثاني أبو حنيفة، هذا إذا أصابها الثاني، فإن لم يُصِبها فهي على ما بقي من طلاقها عند الجميع. وقال النخعي: لم أسمع فيها اختلافاً، ولو ثبت الحديث لكان فصل النزاع في المسألة، ولو اتفقت آثار الصحابة، لكانت فصلاً أيضاً.

:

:# \$

:

:

.()#

\$

:

:

:

.()#

:

\$

:

\$:

()

.(/)

()

()

()

. () #

:
:
:
:

\$:

. () #

:
:

| | | |
|-------|---------|-----|
| . () | . (/) | () |
| | . () | () |

\$
\$

:

:

:

:

:

:# \$

:

.
:
:
:
:

:

:

:

:

:

:

#

\$

\$:

:

:

.#

*

: [- :]

:

.
()

:

:

:

.() () () () ()

()

()#

:

: .

: .

:

:#

\$

:

:

:

#

\$

:

#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

#

\$

:

#

\$

#

\$

#

\$

:

:

:

:

:

()

()

: # \$

:
\$:

:

:

:

:

:

:

:

\$
\$:

\$

\$

:

:#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

: :

:

()

:

:

.

:

:

.

:

.

.

:

:

.

.

:

:

.

:

:

.

:

:

()

:# \$:

:

: . :

: . :

()

:

:

:

:

:

()

:

()

.(/ ()

.(/) ()

.(/) ()



.

[- :]
()

:
*

\$

() : .# \$:

:# \$

:

. [:] ()

:

:# \$

()

:

:

:

()

.

:

:

.

:

| | | |
|----------|---|-----|
| . | : | () |
| .(/) | | () |
| .(/) | | () |
| .() () | | () |
| () | | () |

()

:

*

[- :]

:

:

:

.() ()

:

.

.

:

:

.

.

:

.

:

:

.

:

:

.

:

:

.

:

.

:

.

#

\$

:

:

:

.

:

.

:

.

#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

:

فصل

:

:

:

:

فصل

فصل

فصل

فصل

#

\$

[:]

فصل

() ()

:

: .

فصل

:

:

:

:

:

: .

فصل

:
*
:

[- :]

:
-
-
:

فصل

.
:
[:]

.
:
[:]
:
:

فصل

:

:

[:]

:

:

:

[:]

[:]

فصل

:

:

:

:

:

#

\$:

()

:

:

#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.(/) ()

: [:]
[:]

: :
:

.

:

*

*

:# \$ # \$ [- :]

:

\$:

:

()

:

#

:

:

()

\$:

:

#

\$

[:]

.()

()

.(/)

()

\$: : #
 # : : #
 \$: :
 .()#
 :# \$
 : : # \$:
 # \$:
 \$: :
 \$: : #
 : #
 : #
 \$:
 : #

.()
 :
 : # \$:
 : .()# \$:
 :
 : .()# \$:

: :
 .() () ()
 .(/) ()
 .() ()
 .() () ()

:

\$:

:

[:]

:

:

() #

.

.

:

:

:

.

:

:

.

.

:

[:]

:

:

:

:

. (/)

()

: [:]

: .

: [:]

: [:]

:

:

:

: [:]

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:

#

\$

:

:

:

.

فصل

\$:

()#

: : ()
: .
:

فصل

:

: # \$: :

\$: () : :
\$: # \$:

\$: :
:
:

:
[:]

.() (/) ()
.() ()
: ()

. : [:] :

. :
:

:]

[
:

: . : :

:

.

:

:

:

.

:

:

:

.

فصل

:

:

:

:

:

:

:

:

\$

:

:

:

\$

:

#

فصل

:

:

:

:

:

#

\$

: [:]

:

:

[:]

:

:

:

:

:

[:]

:

: [:]

: [:]

: [:]

:

:

فصل

:

فصل

[:]

[:] :

فصل

فصل

فصل

:

:

:

فصل

:

:

فصل

:

:

:

:

:

()

:

.

(/) ()

: . : . : .
: . : .
: . : .
()

: : : : :
: . : : :
.

:]

: :
:
[:]

فصل

:

() ()

\$

\$

\$ # \$

: . :

:

: . ()

:

()

:

:

. (/)

()

()

فصل

:

.

.

:

*

*

*

.[- :]

:#

\$

:

\$:

:

:

.

:

.

\$:

:

.()#

:

\$:

:

.(/)

()

#

()

:

:

#

\$:

[:]

:

:

:

()

\$:

#

\$

:

:

#

#

:

:

()#

:

.(/)

()

.()

()

.(/)

()

()

:

\$:

() #

:

#

\$

\$:

()

:

:

#

\$

#

\$:

()

:

:

:

()

:

:

:

#

\$:

()

(/)

()

()

()

()

()

(/)

()

()

()

#

\$:

: :

:

: [:]

:

: :

:

: .

: .

[:]

:

:

:

()

: # \$:

: # \$:

\$ # \$

\$ # \$ # \$

\$

\$:

\$:

\$

()

قالوا: وأما ردُّكم لقوله: ﴿لولا ما مضى من الأيمان، لكانَ لى ولها شأن﴾،
وهو حديث رواه أبو داود في سننه، وإسناده لا بأس به، وأما تعلُّكم فيه على

عَبَاد بن منصور، فأكثر ما عيب عليه أنه قدرىُّ داعية إلى القدر^(١)، وهذا لا
يوجب ردَّ حديثه، ففي الصحيح: الاحتجاجُ بجماعة من القدرية والمرجئة
والشيعية ممن عُلِمَ صدقُه^(٢)، ولا تنافى بين قوله: لولا ما مضى من كتاب
الله تعالى#، ولولا ما مضى من الأيمان#، فيحتاج إلى ترجيح أحد اللفظين،
وتقديمه على الآخر، بل الأيمان المذكورة هي في كتاب الله، وكتاب الله
تعالى حكمه الذى حكم به بين المتلاعنين، وأراد : لولا ما مضى من حكم
الله الذى فصل بين المتلاعنين، لكان لها شأن آخر.

: :

:

:

[:]

:

()

: /

()

وهذا يتَّضحُ بالفصل الثاني المستفاد من قضاء رسول الله ، وهو أن المرأة إذا لم تلتعن، فهل تُحدُّ أو تُحبسُ حتى تُقرَّ، أو تُلاعن؟ فيه قولان للفقهاء. فقال الشافعي، وجماعة من السلف والخلف: تُحدُّ، وهو قولُ أهل الحجاز. وقال أحمد: تُحبسُ حتى تُقرَّ أو تُلاعن، وهو قولُ أهل العراق. وعنه رواية ثانية: لا تحبسُ ويُخلَى سبيلها.

:

:

:

#

\$:

:

:

#

\$:

:

:

:

[:]

:

:

:

.

:

:

:

:

:

فصل

:

:

[:]

[:]

:

:

:

:

فالجواب: أن حكم اللعان حُكْمٌ مستقلٌ بنفسه غيرُ مردودٍ إلى أحكام الدعاوى والبيِّنات، بل هو أصل قائم بنفسه شرَّعه الذي شرع نظيره من الأحكام، وفصله الذي فصل الحلال والحرام، ولما كان لعانُ الزوج بدلاً عن الشهود لا جرمَ نزل عن مرتبة البينة، فلم يستقلَّ وحده بحكم البينة، وجعل للمرأة معارضته بلعان نظيره، وحينئذٍ فلا يظهر ترجيحُ أحد اللعانين على الآخر لنا، والله يعلم أن أحدهما كاذب، فلا وجه لحد المرأة بمجرد لعان الزوج، فإذا مُكِّنت من معارضته وإتيانها بما يُبرىء ساحتها، فلم تفعل، ونكلت عن ذلك، عمِلَ المقتضى عمله، وانضاف إليه قرينة قوّته وأكّدته، وهي نكولُ المرأة وإعراضها عما يُخلصها من العذاب، ويذرُّه عنها. قالوا: وأما قولكم: إنه لو شهد عليها مع ثلاثة غيره لم تُحدَّ بهذه الشهادة، فكيف تُحدُّ بشهادته وحده؟ فجوابه أنها لم تُحدَّ بشهادة مجردة، وإما حُدَّت بمجموع لعانه خمسَ مرات، ونكولها عن معارضته مع قدرتها عليها، فقامَ من مجموع ذلك دليل في غاية الظهور والقوة على صحة قوله، والظنُّ المستفاد منه أقوى بكثيره

من الظن المستفاد من شهادة الشهود.

وأما قولكم: إنه أحد اللعانين، فلا يُوجب حد الآخر، كما لم يُوجب لعانها حدّه، فجوابه أن لعانها إنما شرع للدفع، لا للإيجاب، كما قال تعالى: وَيَذَرُوهَا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ [النور: ٨]، فدلّ النصُّ على أن لعانه مقتض لإيجاب الحد، ولعانها دافع وداريء لا موجب، فقياسُ أحد اللعانين على الآخر جمع بين ما فرّق الله سبحانه بينهما وهو باطل. قالوا: وأما قولُ النبيّ ﷺ: §الْبَيِّنَةُ عَلَى الْمُدَّعَى#، فسمعاً وطاعةً لرسول الله ﷺ، ولا ريبَ أن لعان الزوج المذكور المكرر بيّنة، وقد انضم إليها نكولها الجارى مجرى إقرارها عند قوم، ومجرى بيّنة المدعين عند آخرين، وهذا من أقوى البيّنات، ويدل عليه أن النبيّ ﷺ قال له: §الْبَيِّنَةُ إِلَّا حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ#، ولم يُبطل الله سبحانه هذا، وإنما نقله عند عجزه عن بيّنة منفصلة تُسقط الحد عنه يعجز عن إقامتها، إلى بيّنة يتمكّن من إقامته، ولما كانت دونها في الرتبة مع قدرتها وتمكنها، قالوا: وأما قولكم: إن موجب لعانه إسقاط الحد عن نفسه لا إيجابُ الحدِّ عليها إلى آخره، فإن أردتم أن من موجب إسقاط الحد عن نفسه فحق، وإن أردتم أن يسقط الحدُّ عنه يسقط جميع موجبيه، ولا موجب له سواه، فباطل قطعاً، فإن وقوع الفرقة، أو وجوب التفريق والتحرّيم المؤبّد، أو المؤقت، ونفى الولد المصرح بنفيه، أو المكتفى في نفيه باللعان، ووجوب العذاب على الزوجة إما عذاب الحد، أو عذاب الحبس، كلُّ ذلك من موجب اللعان، فلا يصح أنه يقال: إنما يوجب سقوط حد القذف عن الزوج فقط.

: : :

: :

.

:

:

[:]

()

: :
:
:
:

:
: [:]

[:]

:
:

:
:

: ()

: . :
: [:]
\$: # \$
.

:
:

فصل

:
\$: # \$
()#

] :
: [:
_____ ()

()#

\$

فصل

:

فصل

:

:

فصل

\$:

:

.#

:#

\$

فصل

:

[:]

:

()

:

فصل

:

:

فصل

:

:

:

:

:

:

:

:

:# \$

:# \$

:

:

:

()#

\$:

.

:

.

:

:

.(/)

()

\$:

#

:

:

فصل

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:
.
:
:

:
.
:
:

:
:

:
.

:
:

.

: # \$:

:

.#

\$.:

:

:

:

فصل

: # \$

: .

\$:
: # \$. #

:

: # \$:

:

:

١٠٠
١٠١
١٠٢
١٠٣
١٠٤
١٠٥
١٠٦
١٠٧
١٠٨
١٠٩
١١٠
١١١
١١٢
١١٣
١١٤
١١٥
١١٦
١١٧
١١٨
١١٩
١٢٠
١٢١
١٢٢
١٢٣
١٢٤
١٢٥
١٢٦
١٢٧
١٢٨
١٢٩
١٣٠
١٣١
١٣٢
١٣٣
١٣٤
١٣٥
١٣٦
١٣٧
١٣٨
١٣٩
١٤٠
١٤١
١٤٢
١٤٣
١٤٤
١٤٥
١٤٦
١٤٧
١٤٨
١٤٩
١٥٠
١٥١
١٥٢
١٥٣
١٥٤
١٥٥
١٥٦
١٥٧
١٥٨
١٥٩
١٦٠
١٦١
١٦٢
١٦٣
١٦٤
١٦٥
١٦٦
١٦٧
١٦٨
١٦٩
١٧٠
١٧١
١٧٢
١٧٣
١٧٤
١٧٥
١٧٦
١٧٧
١٧٨
١٧٩
١٨٠
١٨١
١٨٢
١٨٣
١٨٤
١٨٥
١٨٦
١٨٧
١٨٨
١٨٩
١٩٠
١٩١
١٩٢
١٩٣
١٩٤
١٩٥
١٩٦
١٩٧
١٩٨
١٩٩
٢٠٠

:

:

.

:

.

:

:

\$:

:

.#

:

:

:

.

:

:

:

:

.

:

. : . : :
: . :
:

:

:

.
فصل

:

:

:

:

:

.
فصل

:

:

:

.

.

:

\$:

#

.

:

:

.

.

.

.

:

:

فصل

:

:
:
:

:

فصل

:

:

#

\$:

:

:

:

\$:

#

فصل

:

:

:

:

:

[:]

:

:
:
:

:

:

:

:

:

:

: #

\$

:

فصل

:

.

:

.

:

:

\$:

() #

:# \$

()

:

:

()

.() ()

. () ()

. () ()

فإن قيل: فما تصنعون بقوله في حديث سهل الذي رواه مسلم في \$صحيحه#
في قصة اللعان: وفي آخره: ثم جرت السنة أن يرثَ مِثْهَا وَثَرَتْ مِنْهُ مَا
فرضَ اللهَ لها؟ قيل: نتلقاه بالقبول والتسليم والقول بموجبه، وإن أمكن أن
يكون مدرجاً من كلام ابن شهاب وهو الظاهر، فإن تعصيبَ الأم لا يُسقط ما
فرضَ اللهَ لها من ولدها في كتابه، وغايتها أن تكونَ كالأب حيث يجتمع له
الفرض والتعصيب، فهي تأخذ فرضها ولا بُدَّ فإن فصلَ شيءٌ أخذته
بالتعصيب، وإلا فازت بفرضها، فنحن قائلون بالآثار كُلِّها في هذا الباب
بحمد الله وتوفيقه.

فصل

\$:

#

:

فصل

:

فصل

#

\$:

فصل

\$:

#

فصل

#

\$:

\$

:

:

:

:# \$

#

\$:

:

#

\$

:

:

:

#

:

:

:

.

.

وفصل ابن حامد فقال: يدفعه بالأسهل، فيبدأ بقوله: انصرف واذهب، وإلا
نفعل بك كذا.

:

\$

()

: # \$

\$:

.# ()

\$:

.# ()

\$: ()

.#

وهذا اختيارُ شيخ الإسلام ابن تيمية رحمه الله، وقال: ليس هذا من باب دفع
الصائل، بل من باب عقوبة المعتدى المؤذى، وعلى هذا فيجوزُ له فيما بينه
وبين الله تعالى قتلُ من اعتدى على حريمه، سواء كان محصناً أو غيرَ
محصن، معروفاً بذلك أو غيرَ معروف، كما دل عليه كلام الأصحاب،
وفتاوى الصحابة، وقد قال الشافعي وأبو ثور: يسعه قتلُه فيما بينه وبين الله
تعالى إذا كان الزانى محصناً، جعلاه من باب الحدود. وقال أحمد وإسحاق:
يُهدرُ دمه إذا جاء بشاهدين ولم يُفصلاً بين المحصن وغيره. واختلف قولُ
مالك في هذه المسألة، فقال ابنُ حبيب: إن كان المقتولُ محصناً، وأقام الزوجُ
البينة، فلا شيء عليه، وإلا قُتل به، وقال ابنُ القاسم: إذا قامت البينةُ
فالمحصنُ وغيرُ المحصنِ سواء، ويُهدر دمه، واستحب ابنُ القاسم الدية في
غير المحصن.

(/)

()

. ()

(/)

()

. ()

(/)

()

()

فصل

في حكمه في أحوق النسب بالزواج إذا خالف لون ولده لونه

\$ # :
\$ # : . : # \$
\$: . : # \$: .
\$: . () :
.#

\$ # :
()

فصل

في حكمه بالولد للفراش، وأن الأمة تكون فراشاً، وفيمن استلحق بعد موت أبيه

\$ # :
:

() (/)
() (/)

:

#

\$:

()

:

وقال أبو حنيفة: لا تكون الأمة فراشاً بأول ولد ولدته من السيد، فلا يلحقه الولد إلا إذا استلحقه، فيلحقه حينئذ بالاستلحاق، لا بالفراش، فما ولدت بعد

(/) . ()

ذلك لحقه إلا أن يَنْفِيَه، فعندهم ولدُ الأمة لا يلحق السيدَ بالفراش، إلا أن يتقدّمه ولد مُسْتَلْحَقٍّ، ومعلومٌ أن النبيَّ أَلْحَقَ الْوَالِدَ بِزَمَعَةٍ، وأثبتَ نسبه منه، ولمْ يثبتْ قَطُّ أن هذه الأمة وُلِدَتْ له قبل ذلك غيره، ولا سأل النبيُّ عن ذلك ولا استفصل فيه.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

\$:

:

:

:

:

: # \$:

\$

: : .

:

\$

: #

\$:

:

:

:

() #

\$:

#

\$

:

. #

\$:

(/)

()

. # \$

\$: # \$:
\$: # \$:

فصل

:

:

:

:

:

فصل

فصل

فصل

\$:

()#

#

\$

.(/)

()

:

.

\$:

\$:

()#

()#

\$:

:

()#

.

:

()

:

:

:

()

()

()

()

(/)

()

(/)

()

()

:

#

\$:

.

:

: .

:

:

()

:

:

:

.(/)

()

:

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

:

:

:

.

:

.

:

.

:

:

:

:

:

\$:

:

:

\$

() : :
: :
:

فصل

\$: : # \$

: (#)

: :
:

\$

\$

.#

.#

\$:

()

()

()

()#

.

.
:
.

#

\$.
.

:

.

. () () ()

\$

:

:

:

:

:

:

()

: .

:

:

()

:

.

.

:

:

: :

| | |
|------|-----|
| .() | () |
| () | () |

فصل

:# \$

:

:# \$ (#) # \$:

: . : :

(#) # \$:

:

()

!

:

:

\$:

#

\$

:

()

#

:#

\$

#

\$

()

| | |
|--------|-----|
| () | () |
| .(/) | () |
| .() | () |
| . | () |
| (/) | () |

فصل

\$

()

(/) ()

\$

:

:

:

:

:

:

\$

:

:

:

#

\$

:

:

:

فصل

:

∴ ∴

∴

∴

∴

∴

∴

\$

\$

\$

فصل

: # \$

فصل

:

:

فصل

..

\$

\$

فصل

وقد ضبط الشيخ في \$المغني# هذا الباب بضابط آخر فقال: فصل في بيان الأولى فالأولى من أهل الحضارة عند اجتماع الرجال والنساء. وأولى الكلّ بها: الأم، ثم أمهاتها وإن علون يُقَدَّم منهن الأقرب فالأقرب لأنهن نساء ولادتهن متحققة، فهن في معنى الأم: وعن أحمد، أن أم الأب وأمهايتها يُقَدَّمن على أم الأم، فعلى هذه الرواية يكون الأب أولى بالتقديم، لأنهنَّ يُدلين به،

فيكون الأب بعد الأم، ثم أمهاته، والأولى هي المشهورة عند أصحابنا، فإن
المقدّم الأم، ثم أمهاتها، ثم الأب، ثم أمهاته، ثم الجدّ، ثم أمهاته، ثم جدّ الأب،
ثم أمهاته، وإن كن غير وارثات لأنهن يدلّين بعصبية من أهل الحضانة،
بخلاف أمّ أب الأم. وحكي عن أحمد رواية أخرى: أن الأخت من الأم
والخالّة أحقّ من الأب، فتكون الأخت من الأبوين أحقّ منه، ومنهما، ومن
جميع العصبات، والأولى هي المشهورة من المذهب، فإذا انقرض الآباء
والأمهات، انتقلت الحضانة إلى الأخوات وتقدّم الأخت من الأبوين، ثم
الأخت من الأب، ثم الأخت من الأم، وتقدّم الأخت على الأخ لأنها امرأة من
أهل الحضانة، ففدّمت على من في درجتها من الرجال، كالأم تقدّم على
الأب، وأمّ الأب على أب الأب، وكلّ جدة في درجة جدّ تقدّم عليه لأنها تلي
الحضانة بنفسها، والرجل لا يليها بنفسه..

:

..

:

..

:

فصل

#

\$

:

:

:

#

\$

فصل

:

#

\$

:

:

:

:

:

"

:

:

"

"

:

:

:

:

:

.

:

:

" "

:

..

فصل

:

#

\$

:

.

:

.

فصل

:

:

.

..

:

:

:

.

:

.

:

.

:

!

:

()

:

:

.()

(/)

()



:

:

:

فصل

وقضاؤه بالولد لأمه، وقوله أنت أحقُّ به ما لم تنكحي#، لا يُستفاد منه عمومُ القضاء لكل أمٍّ حتى يقضي به للأم. وإن كانت كافرة، أو رقيقة، أو فاسقة، أو مسافرة، فلا يصحُّ الاحتجاج به على ذلك، ولا نفيه، فإذا دلَّ دليلٌ منفصلٌ على اعتبار الإسلام والحرية والديانة والإقامة، لم يكن ذلك تخصيصاً ولا مخالفةً لإظهار الحديث.

:

:

\$

()#

: .

:

:

:

:

\$
()

#

#: # \$

#

\$

#

\$

:

:

:

()

\$

..

.()

.(/)

()

.()

()

()

!

\$

\$, (#)
: (#)

:

.

. : .

:

.

.(/) ()
.(/) ()

فصل

:

:

#

\$

\$

#

\$

#

فصل

#

\$

:

:

:

:

.

:

.

()

:

:

.

:

:

:

()

:

.

:

.

:

:

:

()

()

()

()

(/)

()

()

()

:

.

:

.

:

:

.

:

:

:

()

:

.

:

.

:

.

:

.

.

:

:

-

.

-

.

.

:

.

:

.

:

()

()

:

.

:

:

\$

:

\$

\$:
: ()

\$

\$
()#

\$ ()#

. (/) (/) ()
 . (/) ()

.

.

:

#

\$

:

:

.

.

:

.

:

.

:

:

.

:

:

:

:

.

#

\$

:

:

\$

#

:

:

#

\$

:

:

:

.

.

:

\$

()

:

:

:

:

فصل

:

(/) ()

:

:

.

-

\$

:

:

()

:

#

\$

:

#

\$

:

\$:

#

:

()

:

⋮

:

:

:

⋮

:

:

:

:

#

\$

:

:

:

:

:

:

:

: .

: .

:

\$

:

:

.

:

:

\$:

:

.

#

:

:

.

:

.

:

:

:

\$

:

:

:

:

:

\$

فصل

:

\$:

#

\$:# \$

\$

#

:

:# \$

:#

\$

#

\$:

!

:

:

\$:

()#

:

. [:] ()

()#

\$:

:

.#

\$

.()

()

.()

.(/)

()

.()

()

. () : : :
 . :
 : : [:] ()
 :
 :

() ()
 . () ()

.

:

.

:

: [:]

.

:

.

:

.

:

:

]

[:]

[:]

:

:

[

:

.

()#

\$:

:

:

.

()

.

(/)

()

:

()

: [:]

:

:

:

()

:

:

:

()

:

()

:

()

:

:

| | |
|-------|-----|
| . | () |
| . | () |
| . | () |
| (/) | () |
| . | () |

[:]

:

:# \$

.

:

.

:#

\$

#

\$

فصل

:

!

:

:

:

.

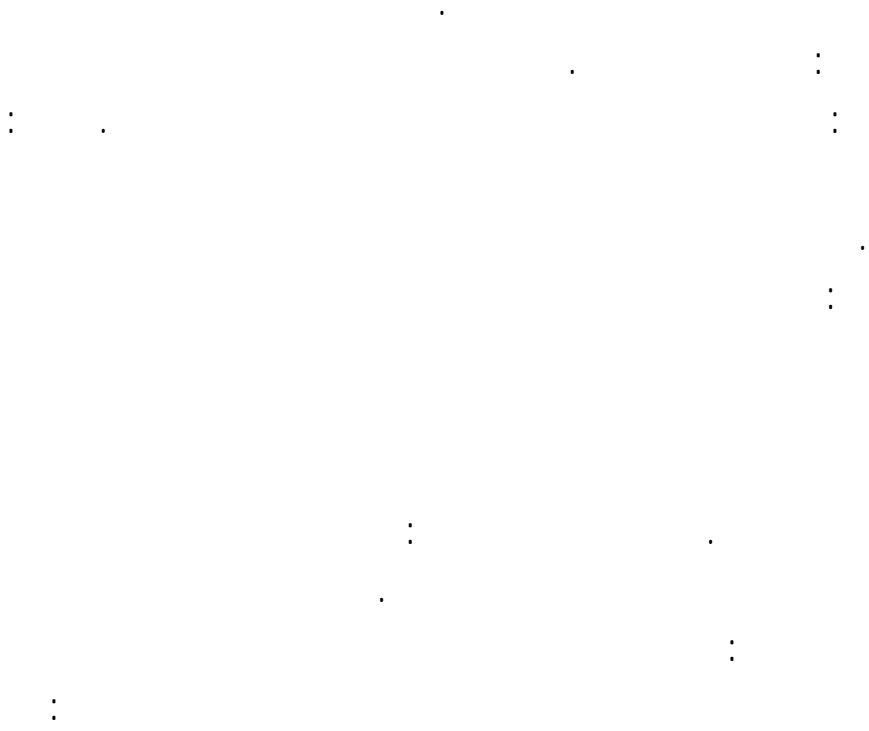
:

:

.

:

:



فصل

:

:

.

: # \$ \$:

: #

: () :

: # \$: # \$:

()

() # : \$:

:

:

:

.(/) ()

.() () ()

(/) ()

. () :

. ()

:# \$

:

:

. :

.

:

:

.

:

:

:

:

.

:

.

:

:

. (/) ()
 . (/) ()

\$:

() #

:

:

:

.
:

:

.

:

: :

:

:

:

. () () ()

.
:# \$

[:]

[:]
[:]

!

.

:

:

:

[:]

:

: .

:# \$

:

!

:

:

:

()

() ()

:
\$
:

.
:

:

: .

:

: :

: \$

:

#

:

وقد قال جمهورُ الفقهاء: لا يثبت لها الفسخُ بالإعسار بالصدّاق، وهذا قولُ
أبي حنيفة وأصحابه، وهو الصحيحُ من مذهب أحمد رحمه الله، اختاره عامة
أصحابه، وهو قولُ كثيرٍ من أصحاب الشافعي. وفصل الشيخ أبو إسحاق
وأبو علي بن أبي هريرة، فقالا: إن كان قبلَ الدخول، ثبت به الفسخُ، وبعده
لا يثبت، وهو أحدُ الوجوه من مذهب أحمد هذا مع أنه عوض محضٌ، وهو
أحق أن يوفى من ثمن المبيع، كما دل عليه النص، كلُّ ما تقرر في عدم
الفسخ به، فمثله في النفقة وأولى.

:

: .

:

:

فصل

في حكم رسول الله الموافق لكتاب الله أنه لا نفقة للمبتوتة ولا سكنى

\$

:

\$:

\$:

: .#

\$

\$: #
: # \$. ()

:

:

. () # \$:
\$

:

:

\$: # \$: #
\$:

()

\$

:

:

\$:
\$:

:

. () ()
() () ()
() () ()

[:]
: ! :
.! ()

\$:
: () #
: () # \$

: : ()
: # \$

: # \$:
\$

! ! : # # \$:
: () # \$

:
:

. () () ()
 () () ()
 : ()
. () () ()
. () () ()

\$: . : # \$:

. () #

\$

:
.#

:

() #

\$:

. ()

:

*

:]

:

[-

()

:
:
:

| | |
|-----------|-----|
| . () () | () |
| . (/) | () |
| . | () |
| . (/) | () |

.
: : :

:
:
.

: # \$

:

!

:

:

: [:]^()

:

:

.

:

:

:

.

() () ()

:
:

:
:

:
:()
.

:# \$
:

.()
.

:
:# \$
:

:
:()
.

:
:# \$
:()
.

:

.
.() () ()
.
() () ()
.
() () ()

: ! :

()

: :

:

:

:

:

() # \$ # \$:

.

.

:

:

:

.

:

.

.(/) ()
.(/) ()

:

()

.

()

:

.

()

:

| | | |
|------|--------|-----|
| .() | .(/) | () |
| | .() . | () |
| | .(/) | () |

[:]
()
[:] :

()
()

:

فصل

وأما المطعن الثاني: وهو أن روايتها مخالفة للقرآن، فنجيب بجوابين: مجمل،
ومفصل، أما المُجمل: فنقول: لو كانت مخالفة كما ذكرتم، لكانت

:

:

[:]

[:]

(/) ()

(/) ()

(/) ()

.

.

:

:

:

[:]

فصل

:

!

:

\$:

#!

\$:

#

!

فصل

.#

.\$:

#

.\$:

:

:

:

.

:

!

:

:

[:]

:
[:]
:
:
\$
:
:
:
:
:
[:]
:
:
[:]
[:]
:
:

قيل: ليس في الآية ما يقتضي أنه، لا نفقة للرجعية الحائل، بل الرجعية نوعان، قد بيّن الله حكمهما في كتابه: حائل، فلها النفقة بعقد الزوجية، إذ حكمها حكم الأزواج، أو حامل، فلها النفقة بهذه الآية إلى أن تضع حملها، فتصير النفقة بعد الوضع نفقة قريب لا نفقة زوج، فيخالف حالها قبل الوضع حالها بعده، فإن الزوج يُنفق عليها وحده إذا كانت حاملاً، فإذا وضعت، صارت نفقتها على من تحبُّ عليه نفقة الطفل، ولا يكون حالها في حال حملها كذلك، بحيث تحب نفقتها على من تحب عليه نفقة الطفل، فإنه في حال حملها جزء من أجزائها، فإذا انفصل، كان له حكم آخر، وانتقلت النفقة من

حكم إلى حكم، فظهرت فائدة التقييد وسر الاشتراط والله أعلم بما أراد من
كلامه.

: # \$
\$!

:
\$:
() #
: # \$
! :
: # \$: # \$:
! : :
: # \$: # \$: # \$:
() # \$:
() # \$:
\$
\$:
() () #
\$:

()
(/)
()
()
() () ()

. (#)

:] : [:] [

:

[:]

:

: : ()

:

:

. : : : :

. (/) ()
(/) () ()

:

\$:

:#

\$

:

.#

:

\$

.()#

\$:

:

.()

#

.()

:

:

\$:

#

\$

.()#

.()#

\$:

.() :

:

:

:

:

#

\$

| | |
|--------|-----|
| .(/) | () |
| .(/) | () |
| .(/) | () |
| .(/) | () |
| . () | () |
| . () | () |

()# \$
\$

[:] :

:

\$:

:
()

()#

\$: :
:

.() () ()
.() () () () ()
.() () () ()

\$:

:

:

#

\$: .#

\$:
: .#

:
: .()

:

[:]

.(/) ()

: :

\$

.

:

:

:

.

[:]

:
:

:
:

:

\$

:

()

:

:

:

:

()

:

:

.

:

.

:

.

:

.

:

.

:

.

:

.

:

:

.

∴

.

.

∴

.

فصل

.

∴

.

\$:

\$

()#

:

فصل

:

:

:

:

:

#

\$:

()

()

\$
:
\$:
#()
:
:
:
\$:
\$:
:
\$:
\$:
:
:

قال أصحابُ الخمس: الحجة لنا ما تقدّم في أول الفصل من الأحاديث الصحيحة الصريحة، وقد أخبرت عائشة رضى الله عنها أن رسول الله توفى والأمرُ على ذلك، قالوا: ويكفى في هذا قولُ النبي لسهلة بنت سهيل: \$أرضي سألماً خمسَ رضعاتٍ تحرّمى عليه#. قالوا: وعائشة أعلمُ الأمة بحكم هذه المسألة هي ونساءُ النبي ، وكانت عائشة رضى الله عنها إذا أرادت أن يدخلَ عليها أحدٌ أمرت إحدى بناتِ إختها أو أخواتها فأرضعته خمسَ رضعاتٍ. قالوا: ونفى التحريم بالرضعة والرضعتين صريحٌ في عدم تعليق التحريم بقليل الرضاع وكثيرة، وهي ثلاثة أحاديث صحيحة صريحة

بعضها خرج جواباً للسائل، وبعضها تأسيسُ حكم مبتدأ. قالوا: وإذا علقنا التحريمَ بالخمس، لم نكن قد خالفنا شيئاً من النصوص التي استدللتم بها، وإنما نكونُ قد قيدنا مطلقها بالخمس، وتقييدُ المطلق بيانٌ لا نسخ ولا تخصيصٌ. وأما من علق التحريمَ بالقليل والكثير، فإنه يُخالف أحاديث نفي التحريم بالرضعة والرضعتين، وأما صاحبُ الثلاث، فإنه وإن لم يُخالفها، فهو مخالفٌ لأحاديث الخمس.

قال من لم يُقیده بالخمس: حديثُ الخمس لم تنقله عائشة رضي الله عنها نقل الأخبار، فيحتج به، وإنما نقلته نقل القرآن، والقرآن إنما يُثبت بالتواتر، والأمة لم تنقل ذلك قرآناً، فلا يكون قرآناً، وإذا لم يكن قرآناً ولا خيراً، امتنع إثباتُ الحكم به. قال أصحابُ الخمس: الكلامُ فيما نقل من القرآن أحاداً في فصلين، أحدهما: كونه من القرآن، والثاني: وجوبُ العمل به، ولا ريبَ أنهما حكمان متغايران، فإن الأول يُوجب انعقاد الصلاة به، وتحريمَ مسه على المحدث، وقراءته على الجنب، وغير ذلك من أحكام القرآن، فإذا انتفت هذه الأحكامُ لعدم التواتر، لم يلزم انتفاء العمل به، فإنه يكفى فيه الظنُّ، وقد احتجَّ كلُّ واحد من الأئمة الأربعة به في موضع، فاحتج به الشافعي وأحمد في هذا الموضوع، واحتج به أبو حنيفة في وجوب التتابع في صيام الكفارة بقراءة ابن مسعود \$فصيامُ ثلاثة أيام متتابعات#. واحتج به مالك والصحابة قبله في فرض الواحد من ولد الأم أنه السدس بقراءة أبي، \$وإن كان رجل يُورث كلاله، أو امرأة وله أخ، أو أخت من أم، فلكل واحد منهما السدس#. فالناسُ كلهم احتجوا بهذه القراءة، ولا مستند للإجماع سواها.

: . :

:

:

#

\$

.

:

:

:

فصل

فإن قيل: ما هي الرضعة التي تنفصل من أختها، وما حدُّها؟ قيل: الرضعة فعلة من الرضاع، فهي مرة منه بلا شك، كضربة وجلسة وأكلة، فمتى التقم الثدي، فامتصَّ منه ثم تركه باختياره من غير عارض كان ذلك رضعة، لأن الشرع ورد بذلك مطلقاً، فحملَ على العُرف، والعُرف هذا، والقطعُ العارضُ لتنفس أو استراحة يسيرة، أو لشيء يلهيه ثم يعودُ عن قرب لا يخرجُه عن كونه رضعة واحدة، كما أن الأكل إذا قطع أكلته بذلك، ثم عاد عن قريب لم يكن ذلك أكلتين بل واحدة، هذا مذهب الشافعي، ولهم فيما إذا قطعت المرضعة عليه، ثم أعادته وجهان. أحدهما: أنها رضعة واحدة ولو قطعت مراراً حتى يقطع باختياره، قالوا: لأن الاعتبار بفعله لا بفعل المرضعة، ولهذا لو ارتضع منها وهي نائمة حُسِبَتْ رضعة، فإذا قطعت عليه، لم يُعتد به، كما لو شرع في أكلة واحدة أمره بها الطبيب، فجاء شخص فقطعها عليه، ثم عاد، فإنها أكلة واحدة.

\$:

\$:

:

:

#

#

فصل

وقالت طائفة: الرضاغ المحرم ما كان قبل الفطام، ولم يحدوه بزمن، صحَّ ذلك عن أم سلمة، وابن عباس ورؤى عن على، ولم يصح عنه، وهو قول الزهرى، والحسن، وقتادة، وعكرمة، والأوزاعى. قال الأوزاعى: إن فطم

وله عام واحد واستمر فطامُهُ، ثم رضع في الحولين، لم يُحرّم هذا الرضاع شيئاً، فإن تمادى رضاعُهُ ولم يُفطم، فما كان في الحولين فإنه يُحرّم. وما كان بعدهما، فإنه لا يُحرّم، وإن تمادى الرضاع. وقالت طائفة: الرضاع المحرّم ما كان في الصغر، ولم يوقته هؤلاء بوقت، وروى هذا عن ابن عمر، وابن المسيّب، وأزواج رسول الله خلا عائشة رضی الله عنها. وقال أبو حنيفة

وزفر: ثلاثون شهراً، وعن أبي حنيفة رواية أخرى، كقول أبي يوسف ومحمد. وقال مالك في المشهور من مذهبه: يُحرّم في الحولين، وما قاربهما، ولا حرمة له بعد ذلك. ثم روى عنه اعتبار أيام يسيرة، وروى عنه شهران. وروى شهر، ونحوه. وروى عنه الوليد بن مسلم وغيره: أن ما كان بعد الحولين من رضاع بشهر أو شهرين أو ثلاثة أشهر، فإنه عندي من الحولين، وهذا هو المشهور عند كثير من أصحابه. والذي رواه عنه أصحاب الموطأ وكان يُقرأ عليه إلى أن مات قوله فيه: وما كان من الرضاع بعد الحولين كان قليلاً وكثيره لا يُحرّم شيئاً، إنما هو بمنزلة الطعام، هذا لفظه. وقال: إذا فصل الصبي قبل الحولين، واستغنى بالطعام عن الرضاع، فما ارتضع بعد ذلك لم يكن للرضاع حرمة. وقال الحسن بن صالح، وابن أبي ذئب وجماعة من أهل الكوفة: مدة الرضاع المحرّم ثلاث سنين، فما زاد عليها لم يُحرّم، وقال عمر بن عبد العزيز: مدته إلى سبع سنين، وكان يزيد بن هارون يحكيه عنه كالمتعجب من قوله. وروى عنه خلاف هذا، وحكى عنه ربيعة، أن مدته حولان، واثنان عشر يوماً.

:

:

:

()

()

:

:

:

:

(/)

()

.()

()

\$:
\$: # \$: #
: .
[:] :
.
:
\$:
:
:
[:]
:] : [

#

()#

\$:

:

\$:

#

\$

: .

:

#

\$

#

\$

:

:

:

:

.()

.(/)

()

فهؤلاء سلفنا في هذه المسألة، وتلك نصوصنا كالشمس صحة وصرامة.
قالوا: وأصرح أحاديثكم حديث أم سلمة ترفعه: \$لا يُحرّم من الرضّاع إلا ما
فَقَّ الأَمْعَاءَ فِي النَّدَى وَكَانَ قَبْلَ الْفِطَامِ# فما أصرحه لو كان سليماً من العلة،
لكن هذا حديث منقطع، لأنه من رواية فاطمة بنت المنذر عن أم سلمة، ولم
تسمع منها شيئاً، لأنها كانت أسنّ من زوجها هشام باثني عشر عاماً، فكان
مولده في سنة ستين، ومولد فاطمة في سنة ثمان وأربعين، وماتت أم سلمة
سنة تسع وخمسين، وفاطمة صغيرة لم تبلغها، فكيف تحفظ عنها، ولم تسمع
من خالة أبيها شيئاً وهي في حجرها، كما حصل سماعها من جدتها أسماء
بنت أبي بكر؟ قالوا: وإذا نظر العالم المنصف في هذا القول، ووازن بينه
وبين قول من يحدد مدة الرضّاع المحرّم بخمسة وعشرين شهراً، أو ستة
وعشرين شهراً أو سبعة وعشرين شهراً، أو ثلاثين شهراً من تلك الأقوال
التي لا دليل عليها من كتاب الله، أو سنة رسوله، ولا قول أحد من الصحابة،
تبيّن له فضل ما بين القولين، فهذا منتهى أقدام الطائفتين في هذه المسألة،
ولعل الواقف عليها لم يكن يخطر له أن هذا القول تنتهي قوته إلى هذا الحد،
وأنه ليس بأيدي أصحابه قدرة على تقديره وتصحيحه، فاجلس أيها العالم
المنصف مجلس الحكم بين هذين المتنازعين، وافصل بينهما بالحجة والبيان
لا بالتقليد، وقال فلان.

:

:

[:]

: .

:

:

:

:

:

: .

: .

:

:

#

\$

:

:

#

\$

:

:

#

\$

\$:

:

#

\$:

\$:

:

فصل

()

:

:

(/) ()

:

: .

:

()

:

() #

\$:

:

:

()

:

:

()

\$:

:

()

(/)

()

/

()

()

()

()#

:

()#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

()

()

:

فصل

:

.(/)

()

.()

()

()

()

()

()

()

:

[:]

[:] :

:] :

:

[:] :

[:] :

[:] :

:

[:]

فهذه أصول العدد في كتاب الله مفصلة مبينة، ولكن اختلف في فهم المراد من القرآن ودلالته في مواضع من ذلك، وقد دلت السنة بحمد الله على مراد الله منها ونحن نذكرها ونذكر أولى المعانى وأشبهها بها، ودلالة السنة عليها.

() :

| | | | | | |
|---|----|-------|-------|-----|-----|
| | : | | | | |
| # | \$ | () | () | | |
| | | | | () | () |
| | | | | () | () |
| | | (/) | (/) | () | () |

[:]

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:#

\$

:

:

:

.()#

\$

[:] ()

:

(/)

(/)

()

.(/)

()

:
[:]
:

. [:]

:
:
:

:

:

[:]

فصل

[:]

:

[:]
:

:

:

.

فصل

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:

.

:

.

:

:

\$

()

.() ()

()

: # \$

:

:

.

.

:

:

:

.

:

:

.

:

:

.

:

.

:

.

:

.

:

:

.

:

:

()

()

[:]

: :

: .

.

:

:

:

:

:

:

\$

: .

:

.

:

: .

:

.

:

.

()#

\$

(

/)

()

·
:

·
:

:

:

:

() #

\$:

:

:

:

·

:

:

·

:

:

:

:

:

:

:

:

:

#

\$:

.()

()

()



\$:

.()#

()

\$:
[:]

:

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

.

:

.

:

:

[:]

:

:

.

.()

:

:

:

:

.(/)

(/)

()

()

.(/)

(/)

()

: : :

: : .

:

: : .

.

()

:

:

()

.

:

:

:

وأما المقام الآخر، وهو الجواب عن أدلتكم: فتجيبكم بجوابين مجمل ومفصل.

: :

: .

() . :

.(/) ()

.(/) ()

قالوا: وأما الجوابُ المفصَّلُ، فنُفَرِّدُ كلَّ واحدٍ من أدلتكم بجواب خاص، فهاكم
الأجوبة.

:

.

:

:

:

:

[:]

:

.

:

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

=

/

()

/

.

:

.

:

:

:

.

.

.

.

.

:

:

:

:

:

\$: # \$

: .

\$:

() #

:
:
[:] .

:

. :

:
.[:]

:

. () (/)

 (/) ()

#

\$

:

.
:

:

:
:
:

:

:

:

:

:

:#

\$

()

:

()#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:#

\$

#

\$

:

.

. ()
. ()

[:] : : [:]
:

: # \$

:

\$

: : : :
: : . : [:]
: [:] [:]

:

: [:] :

:

:

:

:

:

:

: # \$ # \$:

:

:

:

:

\$ # \$:
\$:

:

:

:

:

:

:

:

: [:]

فإن قيل: فإذا جعلنا الأقران: الأطهار، استقبلت عدتها بعد الطلاق بلا فصل،
ومن جعلها الحيضَ لم تستقبلها على قوله حتى ينقضى الطهرُ.

:

.

.

:

.

:

:

:

:

:

[:]

:

:

()

[:]

.

:

.

:

:

:

.(/)

()

:

:

:

:

:

.

.

:

.

:

:

:

:

:

.

:

:

.

:

:

:

:

:

:

:

:

\$

:

:

:

.

:

:

[:]

فصل

في الأجوبة عن اعتراضكم على أدلتنا

\$:

:
 :
 :
 : [:]
 : [:]
 [:] : .[:]
 :
 [:]

أحدهما: أن اسم العدد نصٌّ في مسماه لا يقبلُ التخصيصَ المنفصل، بخلاف
 الاسم العام، فإنه يقبل التخصيصَ المنفصل، فلا يلزم من التوسع في الاسم
 الظاهر التوسع في الاسم الذي هو نص فيما يتناولهُ.

[:] :
 [:] :

:

:

$$\begin{array}{c}
 : \\
 [\quad : \quad] \quad : \quad [\quad : \quad] . \\
 :
 \end{array}$$

.

:

:

:

$$[\quad : \quad]$$

:

:

:

:

:

:

: : .# \$

\$:

:

\$

. (#)#

\$:

#

:

:

:

\$:

:

:

()

()

:
: () #

\$: # \$
() #...

() # \$
: # \$

() # \$:

:
()

:

| | | |
|-------|-------|-----|
| (/) | (/) | () |
| | / | () |
| | (/) | () |
| | () | () |
| | () | () |
| | () | () |

[:]

:

.

:

:

:

:

\$:

#

:

:

:

فصل

: :

: :

:

: .

:

:

:

.

:

: [:]

[:]

:

[:]

:

:]

[

:

:

:

فصل

. [:]

.

:

.

:

#

\$

:

:

]

[

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

[:]

[:]

:

:

[:]

:

: [:]
[:]

: :
:

: :
\$:
.#

:
: . :
: :
:

: .

. () (/) ()

. :
 . :
 : [:]
 : [:]
 : [:] :
 : :
 :
 () [:]
 : : .
 :
 :
 [:]
 [:] :
 [:] :
 [:] :
 : .
 :
 : [:]
 . (/) ()

فصل

قال شيخنا: والصواب أن يُقال: أما عدة الوفاة فهي حرم لانقضاء النكاح، ورعاية لحق الزوج، ولهذا تُحدُّ المتوفى عنها في عدة الوفاة رعاية لحق الزوج، فجعلت العدة حريماً لحق هذا العقد الذي له خطر وشأن، فيحصل بهذه فصل بين نكاح الأول ونكاح الثاني، ولا يتصل الناكحان، ألا ترى أن رسول الله لما عظم حقه، حرم نساؤه بعده، وبهذا اختص الرسول، لأن أزواجه في الدنيا هنَّ أزواجه في الآخرة بخلاف غيره، فإنه لو حرم على المرأة أن تتزوج بغير زوجها، تضررت المتوفى عنها، وربما كان الثاني خيراً لها من الأول. ولكن لو تأيمت على أولاد الأول، لكانت محمودة على ذلك، مستحبةً لها، وفي الحديث \$أنا وامرأة سَفَعَاءُ الخَدَّيْنِ، كَهَاتَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وأوما بالوسطى والسبابة، امرأةٌ أمت من زوجها ذاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، وَحَبَسَتْ نَفْسَهَا عَلَى يَنَامِي لَهَا حَتَّى بَاتُوا أَوْ مَاتُوا#.

فصل

:
:
:

:
[:]

:

:

: [:]
[:]

: [:]
[:]

∴

∴

∴

∴

[∴]

∴

∴

∴

#

\$

∴

·
:

:

#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

فصل

\$

:

:

: # \$

()

: :

:

: : :

:

: .

()

()

() (/) ()

: . : . ()

:# \$

: # # \$:
\$:
\$: :

:
:

:

() () () ()
() (/) ()

\$

:

:

:

:

:

\$:

() #

:

:

:

:

:

()

:

(/) ()
() ()

()

:

:

:

()

:

:

:

.

:

.

:

:

:

:

:

:

:

[:]

:

:

[:]

.

:

:

()

:

:

, ()

. ()

. ()

()

:

()

()

:

()

:

:

:

()

:

()

:

:

:

:

| | | |
|-----|-----|-----|
| . | () | () |
| . | | () |
| () | | () |
| . | () | () |
| . | | () |
| () | | () |

()

()

\$

قالوا: ونحن لا نُنكر النزاع بين السلف في المسألة، ولكن السنة تفصلُ بين
المتنازعين. قال أبو عمر بن عبد البر: أما السنة، فتأبئة بحمد الله. وأما

()

()

()

الإجماع، فمستغنى عنه مع السنة، لأن الإختلاف إذا نزل في مسألة كانت
الحجة في قول من وافقته السنة.

:

()

:

:

:

:

:

:

:

()

()

()

:

:

:

:

:

:

:#

\$

:

:

:

:

:

:

.

:

.

.

.

:

:

:

\$:

#

:

:# \$

:

:

\$:

.#

:

:

\$:

.#

:

:

:

\$:

:

:

\$: # \$

.#

:

: ()
 : # \$
 \$:
 : () #
 : # \$ \$
 : () #
 \$:
 : () #
 : # \$
 :
 :
 :
 : # \$:

| | |
|--------|-----|
| (/) | () |
| .(/) | () |
| .(/) | () |
| .() | () |

.

.

:

فصل

:

:

:

فصل

:

:

:

:

:

.

\$:

\$:

()#

()#

فصل

.()

(/)

()

.()

()

فصل

#

\$:

فصل

\$:

: .

.
:

:

:

:

:

:

:

:

#

\$

\$

\$:

:

()

:

\$:

:

#

\$:

(/)

()

\$

:

:

\$

:

:

:

\$

:

:

فصل

#

\$:

\$:

#

فصل

:

:

:

: : # \$

.

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

فصل

وأما النَّقَابُ، فقال الخرقى في \$مختصره#: وتجتنبُ الزوجة المتوقى عنها زوجها الطيبَ، والزينة، والبيتوتة في غير منزلها، والكحل بالإثمد، والنقاب. ولم أجد بهذا نصاً عن أحمد. وقد قال إسحاق ابن هانئ في \$مسائله#: سألت أبا عبد الله عن المرأة تنتقبُ في عِدتها، أو تدهن في عِدتها؟ قال: لا بأس به، وإنما كرهَ للمتوفى عنها زوجها أن تتزيّن. ولكن قد قال أبو داود في \$مسائله# عن المتوفى عنها زوجها، والمطلقة ثلاثاً، والمحرمة: تجتنبن الطيبَ والزينة. فجعل المتوفى عنها بمنزلة المحرمة فيما تجتنبه، فظاهر هذا أنها تجتنب النقاب، فلعل أبا القاسم أخذ من نصه هذا والله أعلم وبهذا علله أبو محمد في \$المغنى# فقال: فصل الثالث فيما تجتنبه الحادة النقاب، وما في معناه مثل البرقع ونحوه، لأن المعتدة مشبهة بالمُحْرَمَة، والمحرمة تمتنع من ذلك. وإذا احتاجت إلى ستر وجهها، سدلت عليه كما تفعل المحرمة.

فصل

: :

:
\$:

: : :
:

. .

:

:

. () : [:]

: # \$

: # \$:

\$:

.# ()

:

()

: # \$

| | | |
|---|-----|-----|
| . | () | () |
| . | () | () |
| . | () | () |

\$:
: ()#
\$:
: ()#

\$:
.#
\$:
:# \$.#
: ()
:

\$:
: ()#
:

()

فصل

:

:

| | | |
|-----|-------|-----|
| () | (/) | () |
| . | () | () |
| . | (/) | () |
| | .() | () |
| | .() | () |

: : :

. ()

:

:

:

.

:

. () # \$

:

. ()

:

:

.

:

. () () ()
. ()
()

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

.

.

.

:

.

:

.

:

\$:

.#

:

:

:

:

:

:

\$: : #

\$:
() #

\$:

#

(/)

()

:
[:]
:

[:]

:
:
:

:
\$

:# \$
:

:# \$

:

:

:

:

:

:()

:

()

()

:

:

.

:

:

:

:

.

:

:

:

:

:

.

:

.

:

#

\$

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.

.

فصل

:

:

:

:

\$:

:

.#

\$:

#

:

:

\$:

.#

:

:

:

:

.

فصل

:# \$

:# \$

فصل

فصل

#

\$:

وغاية ما يقال: إن ولد الزانية ليس لاحقاً بالواطىء الأول، فإن الولد للفراش، وهذا لا يجوز إقدامه على خلط مائه ونسبه بغيره، وإن لم يلحق بالواطىء الأول، فصيانة مائه ونسبه عن نسب لا يلحق بواضعه لصيانته عن نسب يلحق به. والمقصود: أن الشرع حرّم وطء الأمة الحامل حتى تضع، سواء كان حملها محرماً أو غير محرّم وقد فرّق النبي بين الرجل والمرأة التي تزوج بها، فوجدها حُبلى، وجلدها الحدّ، وقضى لها بالصدّاق، وهذا صريح في بطلان العقد على الحامل من الزنى. وصح عنه أنه مر بامرأة مُجِحّ على باب فسطاط، فقال: **لَعَلَّ سَيِّدَهَا يُرِيدُ أَنْ يُلِمَّ بِهَا؟** قالوا: نعم. قال: **لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَلْعَنَهُ لَعْنًا يَدْخُلُ مَعَهُ قَبْرُهُ، كَيْفَ يَسْتَخْدِمُهُ وَهُوَ لَا يَجِلُّ لَهُ، كَيْفَ يُورِثُهُ وَهُوَ لَا يَجِلُّ لَهُ.** فجعل سبب همّه بلعنته وطأه للأمة الحامل، ولم يستفصل

عن حملها، هل هو لاحق بالواطىء أم غير لاحق به؟ وقوله:

: # \$

: # \$:

: :
: # \$

:

فصل

\$:

#

:
: # \$

. (#)

\$

#

\$

:

(#)

.

#

\$

:

\$:

(#)

:

.

:

:

.

:

:

:

:

:

:

:

. ()

. ()

. ()

()

\$:

()

\$:

قالوا: ولأن الدم الخارج من الفرج الذي رتب الشارع عليه الأحكام قسمان: حيض واستحاضة، ولم يجعل لهما ثالثاً، وهذا ليس باستحاضة، فإن الاستحاضة الدم المطبق، والزائد على أكثر الحيض، أو الخارج عن العادة، وهذا ليس واحداً منها، فبطل أن يكون استحاضة، فهو حيض، قالوا: ولا يمكنكم إثبات قسم ثالث في هذا المحل، وجعله دم فساد، فإن هذا لا يثبت إلا بنص أو إجماع أو دليل يجب المصير إليه، وهو منتف قالوا: وقد رد النبي المستحاضة إلى عاداتها، وقال: \$ اجلسي قدر الأيام التي كنت تحيضين# (3).

فدل على أن عادة النساء معتبرة في وصف الدم وحكمه، فإذا جرى دم الحامل على عاداتها المعتادة، ووقتها من غير زيادة ولا نقصان ولا انتقال، دلت عاداتها على أنه حيض، ووجب تحكيم عاداتها، وتقديمها على الفساد الخارج عن العادة. قالوا: وأعلم الأمة بهذه المسألة نساء النبي ، وأعلمهن عائشة، وقد صح عنها من رواية أهل المدينة، أنها لا تُصلي، وقد شهد له الإمام أحمد بأنه أصح من الرواية الأخرى عنها، ولذلك رجع إليه إسحاق

() () ()

(/) ()

(/) ()

وأخبر أنه قولُ أحمد بن حنبل، قالوا: ولا تُعرف صحة الآثار بخلاف ذلك
عمن ذكرتم من الصحابة، ولو صحت فهي مسألة نزاع بين الصحابة، ولا
دليل يفصل.

:

:

:

.

: .

:

: . :

:

.

:

\$:

:

:

#

:

:

فصل

فصل

فصل

:

.

:

:

.

:# \$

:

.

: # \$

:

:

:

:
:

. () # \$:
:

()

. () # \$:
:

:
:

| | | |
|-----|-------|-----|
| . | () | () |
| . | (/) | () |
| () | (/) | () |

()#
\$:

\$:

#

()

فصل

:#

\$:

:

.#

\$:

:

.#

\$:

:

.()

(/)

()

()

: :

\$: :

. (# \$:

:

(# \$:

: .

:

:

:

\$

:

\$:

.
.

:

: ()

| | | | | |
|-------|---|-------|-------|-----|
| . () | (| <hr/> | /) | () |
| . | . | . | (/) | () |
| | | . | (/) | () |

.

.

:

:

.

:

:

:

.

:

.

:

:

.

فصل

\$: : # \$
.#

. (# #

\$:

: :
[:]

\$:

: :
: :
.(# \$

\$:

(/) ()
(/) ()

()#

:

:

:

:

:

:

:

:

#

\$:

:

:

:

:

#

\$

:

()

()

فصل

()#

\$:

#

\$:

:
:

:
:

:

:

:

. (/) ()

\$

: # \$

فصل

\$:

[:]

.()#

فصل

. (/)

()

فصل

: [:]

\$

\$ # \$

فصل

#

\$:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

.()

:

:

:

:

.()

:

:

.

:

.()

:

\$:

#

()

()

()

#

\$:

:

\$:

. () ()
. (/) ()

()#

:

()

:

:

:

.

:

.

:

:

:

.

.

.

:

.

.

()

()

:

.

.

.

:

.

:

:

:

:

()#

\$:

:

(/)

()

فصل

()#

\$:

()

()

(/)

(/)

()

()

(/)

فصل

:

\$:

#

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

:

\$:

:

#

\$:

#

:

:# \$

:

:

:# \$

:# \$

فصل

:

:

:

:

:

:

[:]

.

:

:

:

:

:

فصل

:

.

.

:

.

.

:

:

.

:

.

:

.

:

#

\$

\$

فصل

()

\$:

()

()#

.

.

[:]

:

()

.

.

.

:

:

:

:

:

:

:

.

:

.

.

.

()

(/)

(/)

()

()

وقد جعل اللّهُ سبحانه حركة الشمس والقمر، واختلافَ مطالعتهما سبباً
للفصول التي هي سببُ الحر والبرد، والشتاء والصيف، وما يحدثُ فيهما مما
يليق بكلِّ فصل منها، فمن له اعتناء بحركاتهما، واختلاف مطالعتهما، يستدلُّ
بذلك على ما يحدث في النبات والحيوان وغيرهما، وهذا أمر يعرفه كثيرٌ من
أهل الفلاحة والزراعة، ونواتى السفن لهم استدلالاتٌ بأحوالهما وأحوال
الكواكب على أسباب السلامة والعطبِ من اختلاف الرياح وقوتها
وعُصوفها، لا تكاد تَحْتَلُّ.

فصل

:

\$:

. (#)

(#)

\$:

:

#

:

#

\$:

.

.

()

()

#

\$:

()

.

()

:

()

\$

()

#

\$

:

()

(/)

(/)

()

()

(/)

()

()

()

()

()

\$:

#

:
:
:
:
:

()#

\$:

فصل

()

في حكمه في بيع عَسْبِ الْفَحْلِ^(١) وضرابه

()

:

:

#

\$

(/)

()

() ()

()

()#

\$:

:

:

:

:

() ()

\$

:

:

:# \$

:

:

()

:

()

\$:

#

\$

#

\$

#

()#

\$:

#

\$

()#

\$:

:

:

()#

:

\$

:

:

#

\$

| | |
|---------|-----|
| () | () |
| () () | () |
| (/) | () |
| (/) | () |
| () | () |

.()#

:

\$

:

:

\$

:

.()

[:]

:

:

\$:

:

:

:

.()#

.()

:

\$:

.()

#

| | | |
|---|-------|-----|
| . | () | () |
| . | (/) | () |
| . | () | () |
| : | | () |
| . | (/) | () |

:

#

\$

()

:

:

:

فصل

:

:

(/) ()

.

:
:
:

.

.

.

:
[:]

:

:

:

.

:

:

()#

\$

.

:

.

:

:

.

:

فصل

.(/)

(/)

(/)

()

()



:# \$

:

:

\$ #
\$:
:

\$

#

:

:

\$ # \$

\$

() #

\$:

\$

() #

(/) () () ()
 () () () () ()

فصل

-

-

.

.

:

:

:

.

:

:

:

:

:

#

\$

:

:- -

: # \$:
: \$: #

:
:
:

:

.

:

\$: # \$
: #

:

:

:

\$: [:]

:

. () #

. .

:

\$: # \$

() #

:

. (/) ()
. (/) ()

:

[:]

\$:

#

\$

() #

: #
:
() #

\$: #

\$

: \$

: \$:
:
() #

#

\$

:
:

:

:

| | | |
|--------|-----|-----|
| . | () | () |
| (/) | | () |
| .(/) | | () |

: :

:

فصل

:

:

\$

:

()

:

: :

()

:

:

:

(/)

(/)

()

(/)

()

: ()
 . : : :
 \$: #
 :
 () :
 : # \$
 :
 :
 ()
 :
 :

فصل

.(/) ()
 .() () ()
 . () (/) ()

فصل

\$:

() # \$

#

\$

:

:

:

()

فصل

:

:

:



:] : [

.

:

:

:

.

:

()

:# \$

:

\$

()#

()

:

:

.(/) ()

.()

()

()

: (/) ()

()

\$:

() #

:

:

#

\$

:

()

()

\$

.

:

.

:

:

:

:

.

فصل

